January, 2024
Volume 5, Issue 1

Anweshan

In Quest of Dimension

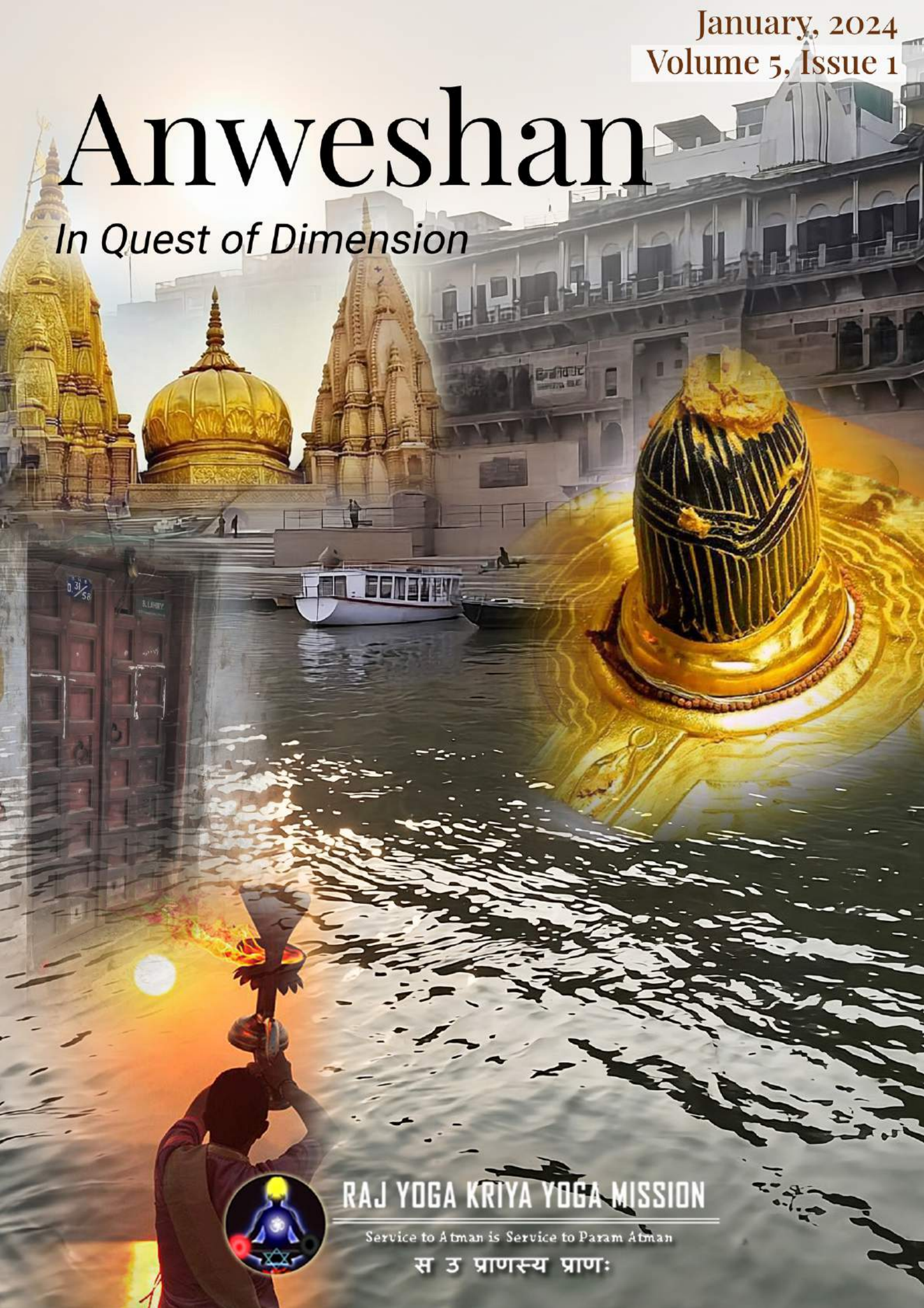

RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION

Service to Atman is Service to Param Atman

स उ प्राणस्य प्राणः

ANWESHAN

MOUTHPIECE OF RYKYM

Digital Edition Release Date: 4th January 2024

Volume – 5: Issue - 1

PUBLISHER:

RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION
401, S. R. K, Paramhangsa Apartment.
6, Dargah Tala Ghat Lane. Post, Bhadrakali
Uttar Para, West Bengal 712232

Copyright © RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION
Website: **www.rykym.org**

সংঘ মাতা - SANGH MATA:

শ্রীমতী সুজাতা রায় (Srimati Sujata Ray)

সম্পাদক মণ্ডলী - EDITORIAL TEAM:

পাপিয়া চ্যাটার্জী (Papia Chatterjee)
সাকেত শ্রীবাস্তব (Saket Shrivastava)
সুদীপ চক্রবর্তী (Sudeep Chakravarty)

গ্রাফিক্স ডিজাইন এবং আর্ট ওয়ার্ক – GRAPHICS DESIGN AND ARTWORK:

দীপাঞ্জন দে (Dipanjan Dey)
সুজয় বিশ্বাস (Sujay Biswas)

অন্বেষণ

দ্বাদশ ডিজিটাল সংখ্যা

রাজযোগ - ক্রিয়াযোগ মিশন - এর মুখপত্র

ওঁ পূর্ণমদঃ পূর্ণমিদং পূর্ণাৎ পূর্ণমুদচ্যতে।
পূর্ণস্য পূর্ণমাদায় পূর্ণমেবাবশিষ্যতে।
ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ।।

ওঁ
অখণ্ডমণ্ডলাকারং ব্যাপ্তং যেন চরাচরম্ ।
তত্পদং দর্শিতং যেন তস্মৈ শ্রীগুরবে নমঃ ।।

স উ প্রাণস্য প্রাণঃ
রাজযোগ ক্রিয়াযোগ মিশন

TABLE OF CONTENTS

Editorial 04
(in Bengali, English and Hindi)

Guru-Shishya Katha 07
by Gurudev Dr. Sudhin Ray
(in Bengali, English and Hindi)

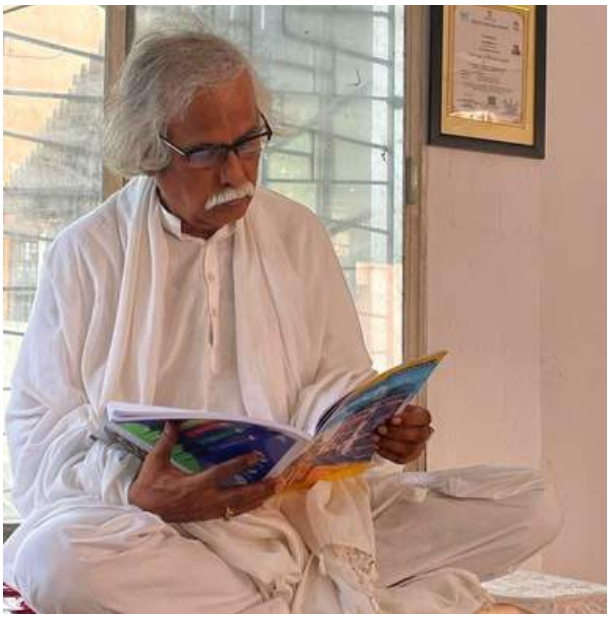

Articles in English

AtmanGyan – In light of GuruBaba! 12

Glimpses of Eternity: A Sojourn in Varanasi *(with Hindi Translation)* 20

The Unconditional Love of a Guru 27

A True Magician 30

Kriya's Goal *(with Hindi Translation)* 33

Events @ RYKYM

Guru Purnima Celebration 10

Gurudev's Birthday Celebration 11

Kriya Diksha.... 17

Durga Puja Celebration 2023 32

Articles in Bangla (বাংলা)

অনলাইন ক্রিয়াযোগ 37

ক্রিয়াযোগ - এক আনন্দের পথ 41

মোক্ষপুরী কাশী 43

পথহারা: অর্জুন ও অভিমন্যু 65

প্রবহমান আধ্যাত্মচেতনা 68

সমর্পণে উত্তরণ 71

Articles in Hindi (हिंदी)

मेरी पूजा बड़ी अनोखी 36

*প্রকাশিত লেখার বক্তব্য লেখকের নিজস্ব এবং এর কোনোওরূপ দায়িত্ব মিশন কর্তৃপক্ষের নয়।
*प्रकाशित आलेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी हैं, तथा राज योग क्रिया योग मिशन उनके लेख के लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है
*Views, thoughts, and opinions expressed in the articles belong solely to the author, and not necessarily to the Raj Yoga Kriya Yoga Mission.

© 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

EDITORIAL

The adept Kriya Yogi experiences a selfless flow of love. Their faith in the Guru and the sacred tradition is steadfast. The acceptance of the Guru's teachings and the diligent practice of Kriya Yoga gradually become ingrained in their daily life. However, this transformation is not instantaneous but evolves over a period.

Just as a father's affection for his child does not reach its peak immediately at birth but deepens over time as he witnesses the gradual growth of his child, similarly, a disciple's unwavering faith in the Guru doesn't take root from the very first day of initiation. Instead, as the disciple advances on the spiritual path, the realization dawns that any pleasant and beneficial aspects of life that unfolds is due to the Guru's grace. Simultaneously, challenges and hardships are understood as the consequences of one's own karma and prarabdha.

Our aspiration is for every practitioner of Kriya Yoga to attain this realization of the Guru's grace within their lifetime.

Jai Guru

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

সম্পাদকীয়

ক্রিয়ায় পারদর্শী যোগী নিজের অন্তরে সতত নিঃস্বার্থ ভালোবাসার অনুভূতি করে থাকেন। তাঁদের গুরু এবং ধর্মীয় পরম্পরায় নিশ্চল শ্রদ্ধা থাকে। গুরুপ্রদত্ত জ্ঞান ও একনিষ্ঠ ক্রিয়া যোগের অভ্যাস ক্রমে তাঁদের জীবনের অভিন্ন অঙ্গ হয়ে ওঠে। এই পরিবর্তন কিন্তু তাৎক্ষণিকভাবেই হয়ে ওঠে না। বরং, সময়ের সাথে এই উত্তরণ ঘটে।

যেভাবে সন্তানের প্রতি পিতার স্নেহ, ভালোবাসা জন্মের সাথে সাথেই তার চরম সীমায় পৌঁছায় না, বরং সময়ের সাথে সন্তানের বড় হওয়ার মধ্যে গভীরতর হয়ে ওঠে, অনুরূপভাবে, গুরুর প্রতি শিষ্যের নিশ্চলা ভক্তি দীক্ষার মুহূর্ত থেকেই স্ফুরিত হয় না। শিষ্য যেমন আধ্যাত্মপথে অগ্রসর হতে থাকেন, তাঁর এটি উপলব্ধি হতে থাকে যে জীবনের সমস্ত আনন্দময়, কল্যানকারী মুহূর্তগুলি গুরুকৃপাতেই আবির্ভূত হয়। একইসঙ্গে, সমস্ত প্রতিকূল পরিস্থিতিগুলিকে নিজ প্রারব্ধজাত ও কৃত কর্মের ফলরূপে বোঝা যায়।

আমাদের এটিই ঐকান্তিক কামনা, যেন সকল ক্রিয়াবানদের জীবনে গুরুকৃপা নিত্য স্ফুরিত হয় ও ইহজীবনে গুরুকৃপার মহিমা উপলব্ধি হয়।

জয় গুরু।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

संपादकीय

एक कुशल क्रियायोगी में प्रेम निस्वार्थ भाव से बहता है। उसकी अपने गुरु और गुरु परम्परा में अटूट श्रद्धा होती है। गुरु वचनों पर विश्वास और क्रियायोग की अनुशीलनता उसके जीवन की दिनचर्या हो जाती है, पर यह सब कुछ एक दिन में घटित नहीं होता है।

जिस प्रकार एक पिता के लिए उसके संतान के प्रति प्रेम जन्म से साथ ही प्रगाढ़ नहीं होता है, बल्कि जैसे-जैसे वह अपने सामने अपने संतान को धीरे-धीरे बड़ा होते देखता है उसका प्रेम भी धीरे-धीरे गहरा होता चला जाता है। उसी प्रकार दीक्षा के प्रथम दिन से ही शिष्य के मन में गुरु के प्रति श्रद्धा पक्की नहीं हो जाती, पर जैसे-जैसे वह साधना के पथ पर अग्रसर होता है उसके सामने यह सत्य प्रतिभासित होता रहता है कि जो भी उसके जीवन में सुखद और कल्याणकारी घटित हो रहा है वह गुरु कृपा मात्र है और कोई भी समस्या और कठिनाई उसके जीवन में है वह उसके कर्मों के प्रारब्ध मात्र है।

प्रत्येक क्रियावान को गुरुकृपा का यह बोध प्राप्त हो, इसी की हम कामना करते हैं ।

जय गुरु

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

।। guru sishya katha ।।

- by Yogacharya Dr. Sudhin Ray

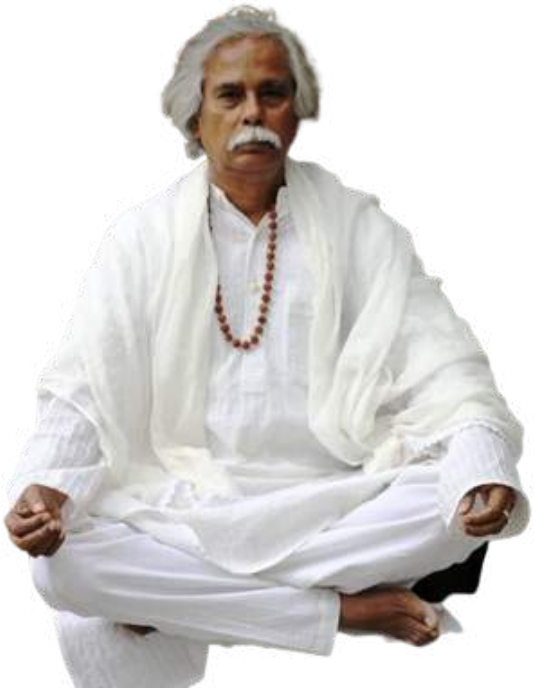

নিরপেক্ষ না হলে 'সমত্ত্ব যোগ মুচ্যতে' বোঝা যাবে না। গুরুর সঙ্গে সমত্ত্ব, ভগবানের সঙ্গে বা ব্রহ্মের সঙ্গে এক হলে তবেই সমত্ত্ব। সংসারের কোন কাজ করার সময় ভগবানের কথা মনে থাকে না। যখন বিশেষ দায়িত্ব আসে তখনই মনে হয় 'হে ভগবান আমাকে দেখো'। তাঁকে না ধরার জন্য সমত্ত্ব হারিয়ে গেছে। তাই আর মনে শান্তিও নেই। ভেতরের শান্তি পেতে হলে সব কাজ বন্ধ করতে হবে। শ্বাস-প্রশ্বাসও বন্ধ করতে হবে, বা নিয়মিত করতে হবে। আমরা পরম জ্ঞান রূপ পুরুষ থেকে নেমে প্রকৃতিতে নেমেছি। তাই সমত্ত্ব নেই, সেইজন্য শান্তিও নেই।

সেইজন্য যতক্ষণ না শান্তি লাভ হচ্ছে, ততক্ষণ কাউকে নিজের সঙ্গে যুক্ত করবে না। প্রকৃতিগত মানুষই অশান্তির কারণ। সমত্ত্ব অবস্থা মায়ের কাছে লুকানো আছে। সেইজন্য সব কর্ম ত্যাগ করে একে যেতে হবে। তখন আর দুই-তিন সঙ্গে নিলে হবে না। আত্মাটাই একে পৌঁছায়, সেই তাঁকে সঙ্গে নিয়ে কাজ করতে হবে। অপরে করলে হবে না।

আমরা সবাই কালের অধীনে আছি। চেষ্টা করতে হবে কালের অধীশ্বর হতে। অর্থাৎ জগন্নাথ হতে হবে। তাঁকে দেখতে হলে গুহার মধ্যে ঢুকতে হবে। যেই পৌঁছাবে, দেখবে মাথায় আঘাত আসছে, বুঝবে চৈতন্য জাগরিত হচ্ছে।

জাগরিত হলে তখন আর অসুবিধা নেই। অন্ধকারের মধ্যে পূর্ণ জ্যোতিরূপ জগন্নাথ দর্শন হবে। প্রকৃতিতে যে আলো আছে তার সাহায্যে জগন্নাথ দেখা যায় না। তাই সময় থাকতে চেতন জগতে প্রবেশ করে সমত্ত্ব কি বুঝতে চেষ্টা করো। তবেই শান্তি।

© 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"Guru-Shishya Katha (Dialogue)"

- Acharya. Dr. Sudhin Ray

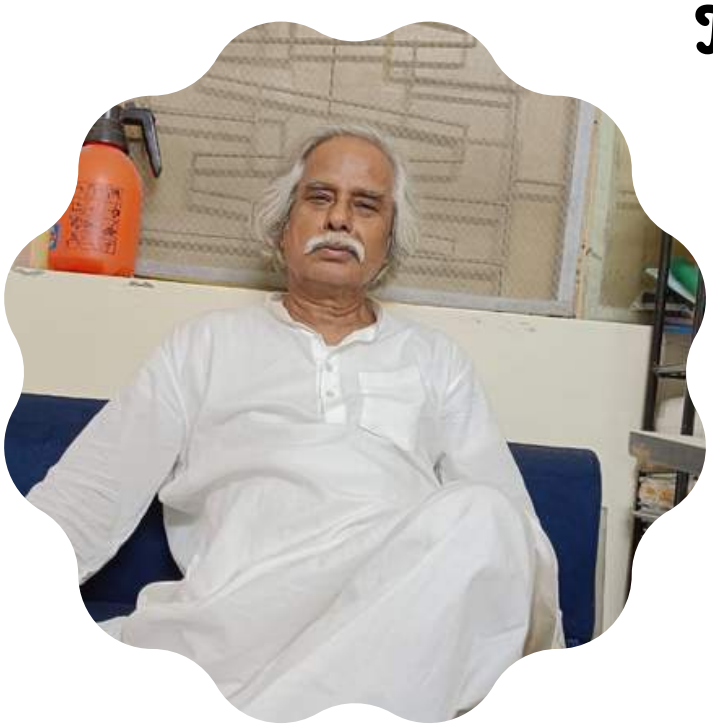

*The significance of **'samatvaṁ yoga uchyate'** becomes apparent only in a state of equanimity. Achieving unity with the Guru or with God (Brahma) is synonymous with attaining equanimity. Often, in the midst of our worldly pursuits, we may neglect thoughts of God. It is only when faced with unique challenges that we beseech, "O God, please assist me." Our struggle to maintain a constant connection with God results in a loss of both equanimity and peace of mind.*

To achieve inner peace, one must pause all activities. Breathing also should be controlled or stilled. We move away from the Supreme Truth (Purusha), and entangle ourselves in the material world (Prakriti), leading to a lack of equanimity and serenity. Hence, it is essential to refrain from engaging with external matters until peace is attained. Human restlessness persists as long as one is subservient to the forces of nature. The elusive state of equanimity is veiled by the cosmic illusion of Mother (Maya). To attain this serene state, one must transcend all worldly actions and journey towards the singular divine source. Accompanied by two or three companions proves futile on this quest; only the individual Atman, the true self, attains union with the ultimate reality. Therefore, it is imperative to have the companionship of the Atman in every endeavor to successfully navigate the path towards realizing the oneness with "that One." Failure to adhere to this fundamental principle impedes one's journey to the ultimate truth.

We are all subject to the influence of Kala (time), yet the pursuit should be to transcend its constraints and attain mastery over time. This mastery is akin to becoming Jagannath. To witness Jagannath, one must venture into the depths of the cave. Upon entry, a sudden impact on the head signals the awakening of consciousness.

Upon awakening, problems dissolve into nothingness. In his radiant manifestation, Jagannath becomes discernible amidst the darkness. We cannot expect to see Jagannath in the light of this material world. Therefore, strive to enter the world of consciousness and comprehend the essence of equanimity in this lifetime, as only through such understanding can true peace be attained.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"गुरु-शिष्य कथा"

- आचार्य श्री डॉ. सुधीन राय

'**समत्वं योग उच्यते**' का अर्थ तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक आप निरपेक्ष नहीं होते है। गुरु के साथ समत्व, या ईश्वर या ब्रह्म के साथ एक होना ही समत्व है। संसार का कोई भी कार्य करते समय हमें भगवान का स्मरण नहीं रहता। जब विशेष जिम्मेदारियां आती हैं तो तब हम कहते है कि हे भगवान मेरी सहायता करो। हम ईश्वर को पकड़े रहने में विफल रहते हैं इसी कारण हमसे समत्व खो गया है और साथ ही साथ मन की शांति भी।

आंतरिक शांति पाने के लिए सभी काम बंद करने होंगे। श्वास-प्रश्वास को भी रोकना या नियमित करना होगा। हम परम ज्ञान रूपी पुरुष से गिरकर प्रकृति में अटके हुए हैं। इसलिए हममे कोई समता नहीं है और न ही कोई शांति है। इसलिए जब तक शांति प्राप्त न हो जाए, तब तक किसी को अपने साथ युक्त न करें। प्रकृति के अधीन होने पर मनुष्य अशांत रहता है । समत्व की स्थिति माँ (माया) ने छुपा दी है। इसे प्राप्त करने के लिए आपको सभी कर्मों को छोड़कर "एक" में जाना होगा। तब दो या तीन को साथ लेने से नहीं चलेगा। आत्मा ही उस "एक" तक पहुँचती है, इसलिए हर काम में उसे शामिल करना पड़ेगा। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आप उस "एक" तक नहीं पहुंच सकते।

हम सभी काल के अधीन हैं, पर हमें काल का स्वामी बनने का प्रयास करना चाहिए। अर्थात जगन्नाथ होना होगा। उसे देखने के लिए आपको गुफा में प्रवेश करना होगा। जैसे अंदर पहुंचेंगे सर पर एक आघात की अनुभूति होगी, समझ जाइएगा कि चेतना जागृत हो रही है। अगर आप जाग जायँगे तो फिर कोई कठिनाई नहीं है। अंधेरे में पूर्ण ज्योतिरूप जगन्नाथ के दर्शन होंगे। प्रकृति में विद्यमान प्रकाश की सहायता से जगन्नाथ को नहीं देखा जा सकता। इसलिए समय रहते चेतन जगत में प्रवेश करें और यह समझने का प्रयास करें कि समत्व क्या है। तभी शांति है।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

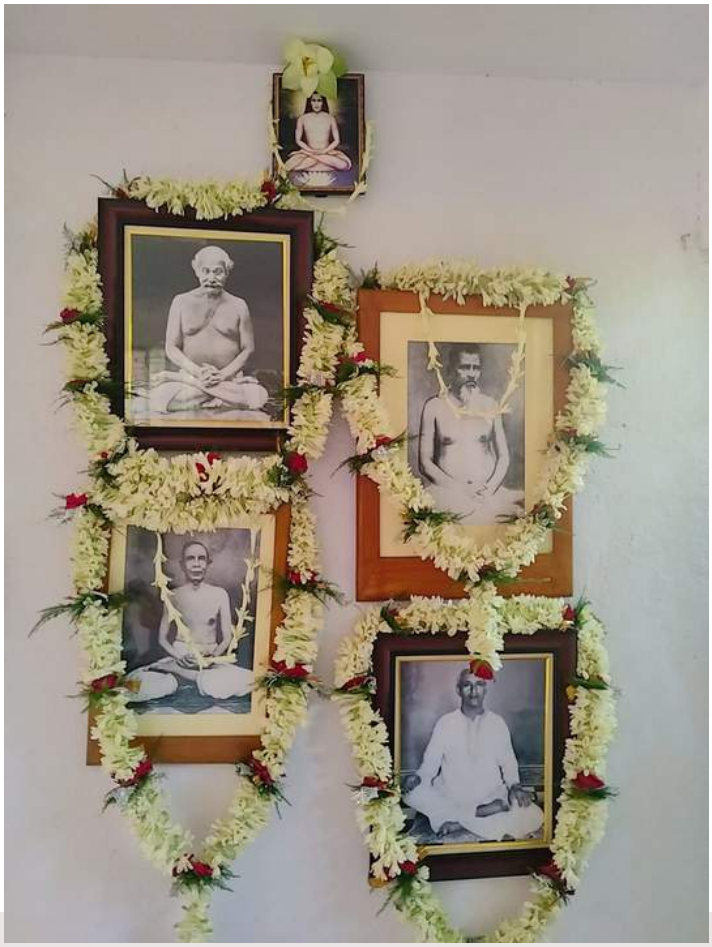

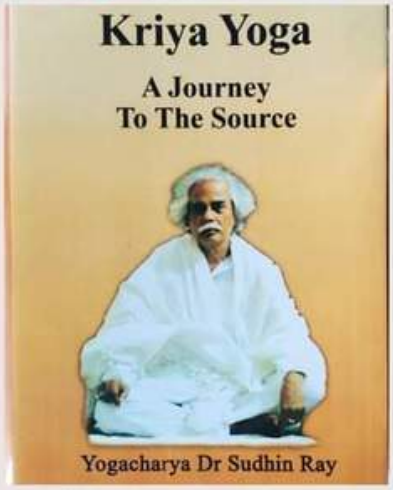

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"Gurudev's Birthday Celebration"

Event celebrated on 20th August 2023

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"AtmanGyan – In light of GuruBaba! "

by Jishnu Basu

All thoughts that have been expressed here are with the blessings of my dearest GuruBaba. Pranams.

There are so many qualities and so many instances about GuruBaba that is not just a miracle but it is Complete or Whole. In other words, " Sampurna". Every moment and being of his is, "Complete". A few instances I would like to mention here according to what I have felt through His Grace.

Sometimes when GuruBaba's eyes become small and he looks so lovingly and so dearly, it is as if He is looking right through us with an immense love. The eyes are completely still and unblinking. A being who is in perfect Khechari and one who is always established in Shambhavi has eyelids that are unblinking and there is a joyous smile which feels like Shri Krishna in his Swaroopa. That is our GuruBaba. An embodiment of perfect calmness – Yogeshwaraya.

One of GuruBaba's favourite story is the one of Shri Krishna and Sudama. As Shri Krishna came running out of the palace, everybody looked at him. At that moment, when Sudama saw Krishna running towards him he just stood there with folded hands and didn't know what to do. When Krishna saw Sudama, he was filled with so much love that he started crying. Krishna hugged Sudama in a loving embrace. He was crying on Sudama and Sudama was crying on him. Time stood still as everyone around witnessed Shri Krishna's true friendship. Shri Krishna carried him in his arms and put him in the throne.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Then Shri Krishna washed the feet of Sudama with his tears of love. Rukmini and the others were puzzled to see all of this. They were seeing it but without comprehending what was happening. Krishna served food to Sudama and even fed him. This kind of love is unheard of. This entire Love I have felt only from GuruBaba. Not just feeling it but that same love through Him (GuruBaba), I pray each one of us Kriyavans have for the world. When GuruBaba tells the story of Shri Krishna there is a different emotion behind his voice. He has the same love for each one of us. One who practices Kriya regularly will feel GuruBaba's love. Love is Everything, Love is Completeness. This is Pure love in it's complete Purity.

When I saw GuruBaba for the first time and each time after this, I saw He was so quick in every work and activity he did. It was also in complete harmony and perfection. At this age, moving up the 3 floor stairs more than 20 times a day, the speed in which He waters the plants, to cleaning whatever necessary there is, to taking care of daily activities is something, I would just see and wonder about. GuruBaba is quick and the pace of the world is slow I felt. That is BHUCHARI; Quickness on ground and activities on ground. GuruBaba says, "Be in such a state that when you enter a room you can evaluate 10 people and know what state of mind each one them are thinking and how their thoughts are". The world would certainly then feel as though it was moving slow. To have this active and quick mind one must be established in Kriya with the proper rules, and above all GuruKripa.

In the Shiva Samhita, we come to know that the knowledge for liberation was given to Maa Parvati from Lord Shiva. Maa Parvati passed it on to her son's Shri Ganesha, Shri Kartikeya and to her daughters Maa Saraswati, Maa Laxmi. Shri Ganesha in turn taught it to Nandi who in turn taught it to the beings of the earth. Nandi's grace is such yet many don't know the story of Nandi. It is a beautiful example of doing things without expecting recognition. It is a beautiful example to just give and give without expectations. That is how our GuruBaba is. He has only given and given to us. He has loved us completely. He is loving us each day. Each day he is doing for us.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Through honesty one can always feel this. To understand this kind of giving and to receive it words are not enough, one just has to be quiet and observant. One has to be in regularity with Kriya. There is nothing GuruBaba wants but our own good, to make us complete.

GuruBaba is not a magician. Instead he is beyond Siddhis. That is why many people wanting to just see Siddhis lose the path or go away from the path. Instead GuruBaba is complete. He tests us, He tries us and in moments to teach a lesson only then, he says something that is already in our mind or something about the past, present and future. But to even know this, one's mind and heart must be receptive to what Baba is conveying to us. One who is beyond Kaal (time) is our GuruBaba. I would like to just state a personal example regarding this. Last year, a few of us with GuruBaba were supposed to go to Haridwar. 3 months before the incident I was sitting with him and suddenly Baba asked, "Jishnu, have you ever gone to Haridwar?" I said, "Yes Baba, just once". It was in my mind to ask, "Baba how many times have you gone to Haridwar?" After 5 minutes of silence he said, "This many times". Then I wondered in my mind, "When was the last time you visited Haridwar?" He said, "This many years ago." I again wondered in my mind, "Maybe in the Sukshma Sarir (Astral Body), Baba must have gone sooner". Without having to ask, He answered, " Yes this many days ago". Baba chooses to keep silent even while knowing everything. In the law of Karma, Baba let's everything play out the way it is supposed to just like Parama-Brahman does. Although I know, Sometimes, as the Lord himself, our Baba let's his Divine Leela play out too, for us, by his immense Divine Grace.

GuruBaba will always say, "Be perfect in every area of life". In work, In family, In Kriya be the perfect embodiment. In fact that is how we would live a perfect Householder life. The same way Shri Krishna did, Shri Ram did and our Rishis did. The same way our loved lineage of Guru's have done and shown us the way; Shri Lahiri Baba, Shri Panchanan Baba, Shri Netai Baba, Shri Dubey Baba, and our GuruBaba. The great ones have shown us by example of how to lead the perfect life possible on this earth in complete harmony with nature.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Our GuruBaba has shown it himself. Even in the day of Guru Purnima when it is supposed to be a day to the Guru, he gets up from the stage and visits each one of us. He walks around the entire hall seeing everyone, even if the weather is very hot and humid. Usually I have seen or read disciples serving their Guru but Our GuruBaba is different. The kind of love he has for each one of us, should be an example of how we should all, as his Shisyas try to cultivate and live by through each of our lives.

Through complete Surrender one is always one with the Guru. One then automatically receives Guru Kripa through KriyaSadhana and complete surrender at the feet of the Guru. Shri Mahamuni Babaji Maharaj has blessed each one of us by bringing Kriya to us through Shri Lahiri Baba. The Guru is one with the lineage of Gurus. The Guru is the dispeller of darkness. I feel there is none like GuruBaba. He tests us, He tires us, but with complete love. To know GuruBaba one has to become One with GuruBaba. The physical body is the product of the Sound of AUM. Be one with AUM.

A- Brahma
U- Vishnu
M- Mahadeva

Remember to always worship the inner Guru (Kutastha) to be one with Guru. To worship the Guru with all sincerity means being one with the sound of OM. When the mind is made tranquil (sthir) by the performing of Kriya there are no virtues or sins. There is no thought or worry remaining when one holds on to that state (Kriya Paravastha). Shri Lahiri Baba and GuruBaba always tells us to be in that state or Avastha. I have heard about Param Gurudev Shri Maheshwari Prasad Dubey ji that to queries he would answer by saying, “Theek Hai or Theek Hi Hai.” That is the state of Chitta Vritti Nirodha, as Sage Patanjali says. One has to be in this state to be one with the Guru. GuruBaba is always with each of us in the roop of Kutastha (Atman).

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

The kindness and affection with which GuruBaba sees all of us, treats all of us is the perfect love many of us were always looking for. To me this was the story, I had been searching for this perfection for many years until I finally came across GuruBaba. GuruBaba says, "The best gift all of you can give me is by the practice of Kriya". I think, we should always remember this. Only a realized being could be a Mahasay (a great shelter). GuruBaba is a Mahasay. From what little I have understood through this past year is that GuruBaba is beyond Bindu (Spot), Nada (Sound), and Kala (Time or the play of energy). GuruBaba is Complete and established in the Truth. He is All. We all must have done some really good deeds to have come across Him but how many of us have been really able to know Him? We should remember our vows during initiation and take Baba's words within as it is ParamAtman speaking them through the mouth's voice.

I would like to end my writing with complete Gratefulness at the feet of my Dearest GuruBaba Acharya Dr Shri Sudhin Ray Mahasay. Pronam GuruBaba.

Om Akhanada Mandalakaram Vyaptam Yena Characharam
TatPadam Darshitam Yena Tasmai Shri Gurave Namaha
Mahamuni Babaji Maharaj, Shri Lahiri Mahasay, Shri Panchanan Baba, Shri Netai Baba, Shri Maheshwari Prasad Dubey Ji, Shri Sudhin Ray Mahasay.
Pranams to all my Beloved Gurus.
To my Dearest Beloved Gurudev
ACHARYA Dr. SHRI SUDHIN RAY MAHASAY
Om Namo Narayanaya.

Thankyou for blessing me to write this Baba.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

KRIYA DIKSHA

9th

JULY, 2023

30th

JULY, 2023

6th

AUGUST, 2023

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

13th

AUGUST, 2023

27th

AUGUST, 2023

10th

SEPTEMBER, 2023

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

8th

OCTOBER, 2023

26th

NOVEMBER, 2023

24th

DECEMBER, 2023

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"Glimpses of Eternity: A Sojourn in Varanasi "

-Sudeep Chakravarty

Similar to the previous year, this year too in November 2023, all the devotees of RYKYM once again had the chance to be in the presence of Gurudev. This year the pilgrimage site was the sacred city of "Devadhi Dev Mahadev's city," - Kashi. The period from November 7 to 11 was chosen for the pilgrimage, as this timeframe is considered the optimal time to visit Kashi, with the onset of the enchanting pink winter starting from the month of November.

On November 7, at approximately 10:30 in the morning, all the devotees, including Gurudev and Gurumaa, arrived in Banaras. Some individuals who accompanied Gurudev and Gurumaa, journeyed from Kolkata via the Vibhuti Express, while others opted for their own preferred modes of transportation. Departing from Cantt station, everyone, along with Gurudev, proceeded to Godaulia and Dashashwamedh. Accommodations were arranged in two distinct hotels to cater to the needs of the group.

Gurudev's accommodation was arranged at 'Hotel Aadesh Palace', situated adjacent to the Kashi Vishwanath Temple. Upon his arrival, a devotee inquired, "Baba, have you visited Banaras before?" Gurudev responded, "This is my inaugural visit in this earthly form, notwithstanding numerous previous appearances in alternative forms." The interpretation of this nuanced reply is left to the discernment of our readers.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Gurudev's eyes sparkled with the sheer delight of residing near the Vishwanath temple complex. After a period of rest and a refreshing bath, he prepared himself and enthusiastically suggested, "Let's head to the temple for a while." It was impossible to keep track of how many times he had visited the Shiva temple for darshan during the short span of his stay there. When a curious devotee inquired, "Baba, how often have you come here?" Gurudev replied, expressing the irresistible pull of the energy within the temple, "The force drawing me there is so powerful that I cannot resist its call; I must go." This served as a beautiful testament to Gurudev's unwavering devotion to Lord Shiva, a devotion that unfolded visibly before a few fortunate devotees.

On the evening of November 8, the second day, Gurudev embarked on a visit to the old residence of Shri Shyamacharan Lahiri Mahasaya, nestled in Ganesh Mohalla near the old Durga temple. After spending a considerable amount of time there, Gurudev, accompanied by a few devoted followers, proceeded to "Satyalok," the sacred abode founded by Shri Satya Charan Lahiri, the grandson of Shri Shyama Charan Lahiri. The visit coincided with the routine evening Aarti, a spiritual ritual.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Following the conclusion of the Aarti, Gurudev reverently circumambulated the Shiva temple situated at Satyalok. He then paid his respects to the revered idols of Lahiri Mahashay, Teen Kodi Lahiri, and Satya Charan Lahiri before having a profound darshan of the idol of Babaji. After this spiritually enriching experience at Satyalok, everyone returned to the hotel.

On the third day, November 9, at 3:30 in the morning, the group of devotees took part in the Mangal Aarti at Kashi Vishwanath. Guru Maa accompanied the devotees to seek the divine presence of Baba Vishwanath. Following the conclusion of the aarti, the devotees had the 'touch darshan' of Mahadev.

During the evening of November 9, a Boat (Bajra)excursion along the Ganges had been meticulously organized. Devotees had arranged for a splendid double-storeyed Boat, complete with seating arrangements atop its deck. The journey commenced at Lalita Ghat, with the boat embarking on its voyage towards Assi Ghat. The serene journey unfolded as the boat gracefully navigated through Chausatthi Ghat, Kedar Ghat, and Harishchandra Ghat, all while being caressed by a gentle, cool breeze from the sacred river Ganga. Devotees, immersed in the spiritual ambiance, contributed to the journey by presenting captivating songs that resonated through the air.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

The atmosphere pulsated with extraordinary energy, as the amalgamation of devotional music, the sacred Ganges, and the divine presence of Gurudev created a truly enchanting experience for all on board.

The boat retraced its route, departing from Assi Ghat and reaching Namo Ghat through Manikarnika Ghat. Returning from Namo Ghat, the boat halted at Dashashwamedh Ghat, where everyone had the opportunity to witness the renowned Ganga Aarti of Kashi. Following the conclusion of the Aarti, our boat navigated back to Lalita Ghat, marking the completion of everyone's journey.

On November 10, individuals embarked on personal journeys, with some choosing to explore the sacred Sankat Mochan Temple and others opting for a visit to Sarnath, the revered preaching site of Gautam Buddha. As the day unfolded, devotees gathered in the evening to seek the divine blessings at the Vishwanath Temple. Following the darshan, Gurudev led a group to Tilbhandeshwar, situated at Pandey Haveli, where many other devotees joined in to witness the divine presence of Mahadev.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

On November 11, Gurudev and all the devotees concluded their spiritual sojourn, making their way back home. Thus, the Kashi pilgrimage concluded triumphantly, enriched by the blessings of Gurudev and Guru Maa.

HINDI TRANSLATION

गत वर्ष की तरह इस वर्ष (२०२३) भी RYKYM के सभी भक्त मंडली को गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त करने का अवसर मिला। इस बार तीर्थ भ्रमण का स्थान रहा "देवाधि देव महादेव" की नगरी, "काशी" । नवम्बर से मार्च तक का समय काशी आगमन के लिये उपयुक्त रहता है, क्योंकि गुलाबी ठण्ड की शुरुआत नवम्बर महीने से हो जाती है।

गुरुदेव, गुरुमाँ सहित सभी भक्तवृंद नवंबर ७ तारीख को सुबह लगभग १०:३० बजे बनारस पहुँचे । कुछ लोग गुरदेव और गुरुमां के साथ कोलकोता से बनारस, विभूति एक्सप्रेस से पहुंचे और कुछ लोगों ने अपने सुविधा अनुसार यात्रा किया। कैंट स्टेशन से गुरुदेव सहित सभी लोगो ने गोदौलिया और दशाश्वमेध के लिए प्रस्थान किया, यही पर दो अलग अलग होटलो में सबके रुकने का प्रबंध किया गया था।

गुरुदेव के ठहरने की व्यस्था काशी विश्वनाथ मंदिर के बगल में ही "होटल आदेश पैलेस" में किया गया था। जब गुरुदेव होटल पहुंचे तो एक भक्त ने उनसे पूछा " बाबा क्या आप पहले बनारस आये हैं"। उनका उत्तर था "ऐसे पार्थिव रूप से पहली बार आ रहा हूँ , वैसे कई बार आ चूका हूँ" - इस सूक्ष्म उत्तर के समझ का दायित्व हम पाठको की समझ पर छोड़ते हैं।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

विश्वनाथ मंदिर परिसर के पास रहने का आनंद गुरुदेव की आँखों में साफ झलक रहा था। थोड़ा विश्राम कर, नहा धोने के बाद गुरदेव तैयार हो गए और कहा चलो थोड़ा मंदिर होकर आते हैं। न जाने कितनी ही बार वो दर्शन के लिए शिव मंदिर गए। किसी एक भक्त ने जब उनसे पूछा " बाबा आप कितनी बार दर्शन कर चुके? " उनका उत्तर था – "वहां मंदिर में जो बैठा है वह इतने जोर से खींच रहा है कि बिना गए रह नहीं सकता " - शिव की शिव भक्ति का बड़ा अद्भुत नमूना वह सब भक्तो को दिखला रहे थे।

दूसरे दिन दिनांक ८ नवम्बर की शाम को गुरुदेव श्री लाहिड़ी महाशय के पुराने घर के दर्शन करने गए जो गणेश मोहल्ला में स्थित है। वहां कुछ समय व्यतीत करने के बाद गुरदेव और भक्तगण श्री श्यामा चरण लाहिड़ी के पौत्र- श्री सत्य चरण लाहिड़ी द्वारा प्रतिष्ठित आवास 'सत्यलोक' के दर्शन करने गए। उस समय शाम की आरती चल रही थी। आरती समाप्त होने के पश्चात गुरुदेव ने सत्यलोक स्थित शिव मंदिर की परिक्रमा की, फिर लाहिड़ी महाशय, तीन कोड़ी लाहिड़ी और सत्य चरण लाहिड़ी की प्रतिमा को प्रणाम करने के पश्चात बाबाजी के मूर्ति के दर्शन किये। सत्यलोक दर्शन के बाद सब लोग होटल वापस लौट आये।

दूसरे दिन दिनांक ९ नवम्बर को सुबह ३:३० बजे भक्त मंडली ने काशी विश्वनाथ के मंगल आरती में भाग लिया। गुरु माँ भी भक्तों के साथ बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने गयीं। आरती समाप्त होने के पश्चात भक्तों ने महादेव के स्पर्श दर्शन किये। उसी दिन शाम को गंगा भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया था। भक्तवृंदो ने एक भव्य बजरे की व्यवस्था की थी, जिसमे बजरे के ऊपर बैठने का प्रबंध था। ललिता घाट से बजरे पर सबने यात्रा प्रारम्भ की। सबसे पहले ललिता घाट से बजरा, अस्सी घाट की तरफ रवाना हुआ। गंगा नदी पर हल्के-हल्के ठन्डे हवा के साथ बजरा धीरे-धीरे चौसट्ठी घाट, केदार घाट और हरिश्चंद्र घाट होते हुए अस्सी घाट पंहुचा। इसी बीच भक्तवृंद ने मनोरम गायन प्रस्तुत किये। भक्ति संगीत, गंगा और गुरुदेव के सानिद्ध्य में वातावरण अद्भुत ऊर्जा से भर गया था।

अस्सी घाट से बजरा वापस मुड़ा, और मणिकर्णिका घाट होते हुए नमो घाट तक यात्रा पूरी की। वापस नमो घाट से पुनः दशाश्वमेघ घाट आकर बजरा रुका और उसी पर से सब लोगो ने काशी की बहुचर्चित गंगा आरती का आनंद लिया। आरती समाप्त होने के बाद हमारा जलयान वापस ललिता घाट पर लौटा और सब लोगो ने अपनी यात्रा पूरी की।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

१० नवंबर को सभी लोगो ने स्वयं घूमने-फिरने की योजना बनाई। कोई संकट मोचन मंदिर घूमने गया तो कोई गौतम बुद्ध की प्रवचन स्थल सारनाथ के दर्शन करने गया। शाम को गुरदेव एक बार फिर विश्वनाथ दर्शन के पश्चात पांडेय हवेली स्थित तिलभांडेश्वर दर्शन करने गए। गुरुदेव के साथ-साथ कई और भक्तो ने भी महादेव के दर्शन किये।

११ नवंबर को गुरुदेव सहित सभी भक्तवृन्दो ने अपने घर की तरफ प्रस्थान किया और इस प्रकार काशी तीर्थाटन, गुरदेव और गुरु माँ के आशीर्वाद से सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

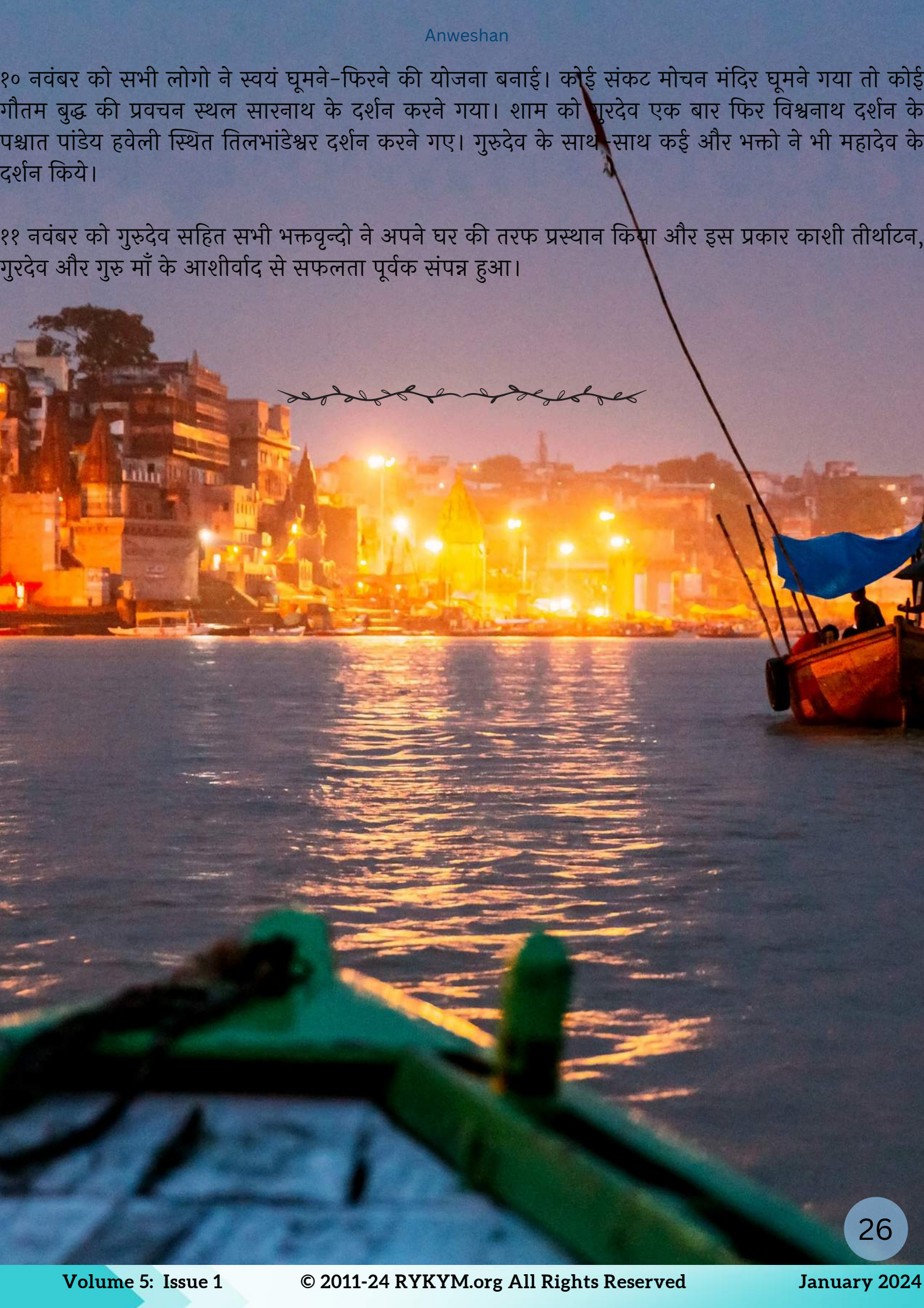

© 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"The Unconditional Love of a Guru"

-Papia Chatterjee

No human being can even think to walk on the path toward God without going through the Master or his Guru. From a spiritual perspective, the relation between a spiritual master and his or her disciple is one of the most important relationships a person can have. The love that a disciple has for his Guru originates from the greater love that the Master has for his disciple.

Just as a disciple will love one's guru, the guru will love him. The bridge between a disciple and a Guru is the path of spiritual practice or sadhana taught to disciples. The more we pour to this relationship and to our practice, the more potent our bond with our guru will be. This holds true even in case our guru lives somewhere far away from us, he/she will always be a part of our existence.

It is indeed our great fortune that we have our GuruBaba in our lives. Whether we are physically co-located as he or are geographically far away, there isn't a single day when we don't feel the bliss of his presence in our lives. The moment there is a hindrance of any form in our lives, be it materialistic or spiritual, GuruBaba is our one and only solace. His grace and blessings can be felt and experienced even in the slightest of obstacles that one faces in life.

This reminds me of a recent small incident where I once again felt his unconditional love towards his disciples. He may have thousands of children in the form of his innumerable disciples, but there is not a single one of them who is devoid of his love and grace.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Recently there was a spiritual retreat in Varanasi organized by the RajaYoga KriyaYoga mission and many of us were fortunate enough to attend it. The day GuruBaba arrived in Varanasi along with other Kriyabans from Bengal, my brother Sudeep and I who happened to be in Varanasi beforehand, went to the railway station to receive GuruBaba and GuruMa. They had to be taken to the hotel where their stay was booked. This hotel was located very close to Gowdoliya area in Varanasi, considered to be the most crowded area of the city, considering its proximity to the Kashi Vishwanath temple complex and Dashashwamedh Ghat.

As per the traffic rules of that area, all the motorized commercial vehicles are banned from entering the area beyond a point. The only way to move around is on foot or through wheelchairs for old and invalid people. There was some luggage too that needed to be carried to the hotel, so my brother arranged for a cycle rickshaw and asked me to go ahead with all the luggage, while GuruBaba decided to walk on foot till the hotel and refused to ride the rickshaw. GuruMa on the other hand had already proceeded ahead on a wheelchair with the help of my brother. Barely 100 metres on the road and my rickshaw puller was stopped by a group of policemen. They started shouting at the rickshaw puller that why he was moving into the area where it was barricaded. I tried to reason with the policeman that I have too many bags with me, and it is not possible to carry them all while walking on foot. I was feeling embarrassed that the rickshaw puller had to hear crude words from the policemen. I was almost about to get down when suddenly GuruBaba came from behind and said something to the policeman which I could not understand, and the next moment I saw that the policeman let the rickshaw puller go. This was extremely surprising for me, and I kept thinking what magic GuruBaba did to let the Policeman tone down his demeanor and let me go! Again, the same thing repeated after we went ahead another 100 metres. In a similar fashion, GuruBaba came and said something to the next policeman too and I was let go. This incident will make more sense to people who have actually visited the Gowdoliya area in Varanasi during the festive time of Diwali. It looks like a sea of people during that time, and to be able to move in a rickshaw for that distance was no less than a miracle. While a sea of people was walking on the road around me, I was the only one sitting on the high rickshaw that's typical of Varanasi, ultimately reaching my destination.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

For any other person who is not a local, it is next to impossible to converse with the policemen who are on duty in that area, and even more difficult for a person who doesn't converse well in Hindi. However, for our GuruBaba it was breeze. Till date, I wonder what was the conversation that GuruBaba had with those policemen.

Though this is a very small incident but was big enough for me to experience and realize the warmth of GuruBaba's love and concern that he has for all his disciples. A Guru loves his disciples as they are, without any expectations, much like how a mother loves her infant. Truly, the loving recognition and unconditional love we get from our divine GuruBaba is unparallel.

ajñānatimirāndhasya jñānāñjanaśālākayā ।
cakṣurunmīlitaṁ yena tasmai śrīgurave namaḥ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशालाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"A True Magician"

- Siddesh G V

Once we were talking this year around April, Baba told me - "I don't know sometimes why people come to me, they think I'm some kind of magician and perform magic and tricks".

Well, I didn't understand it then why Baba had told me, I just nodded my head saying yes.

Days after, I started witnessing so many events in and around me, which were quite surprising to me, and I used to wonder why, how ?

Suddenly one day your words struck me, and I realized that you were the greatest magician by far I have known, who works mysteriously. You do everything unknowingly to a devotee with a beautiful smile on your face and when asked you simply reply "Theek hi to hai " :). we realize things only after the event has passed.

My heart yearns to see those beautiful eyes of yours every time. They are so precious and full of love. I had never received such love from anyone. Your love is beyond any boundaries. If "unconditional love" has to have any definition in the dictionary I would just write your name. The love that flows through your eyes is so abundant that it completely freezes this outer world around me. I can probably look at them without a blink till eternity.

I often asked this question to myself as to what really made me to come to you all the way from down south. This is the answer I perceived by your grace.

Yogananda once said - "There is a Big Magnet in our heart that is so powerful that it will attract true and like people no matter wherever they are. That magnet is unselfishness, always thinking of others first". such is the power of your grace and love.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

If it was not your grace and blessings I cannot imagine myself what I would have ended up with.

Ramdas - A devotee of Neem Karoli Baba quoted once -

When Lord Ram asked Hanuman - who are you ? during their first meeting. Hanuman bowed his head reverently, folded his hands, and said - " when I do not know who I am, I serve you and when I do know who I am, you and I are one"

This is the relationship that I always dreamt of, prayed for, and truly desired in my life.

The moment I met you, I knew then and there that I have finally found my Ram.

To me, you are the center of my world around which I'm revolving and everything is happening.

I thank you for showering your unconditional love and grace on me.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"Durga Puja Celebration @ RYKYM"

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"Kriya's Goal"

-Ambarish Verma

What is the goal of Kriya for a Kriyavan?

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

Once a kriyavan asked our Gurudev, what is the ultimate goal of Kriya? Guruji said, as mentioned in Kenopaniṣad

श्रोत्रस्य श्रोत्रम्, मनसो मनो, यद वाचो ह वाचम्, स उ प्राणस्य प्राणः ।
चक्षुषः चक्षुरातिमुच्य धीराः, प्रेत्यस्मः लोकादमृता भवन्ति ॥

It is the Ear of the ear, the Mind of the mind, the Speech of speech, the Life of life, and the Eye of the eye. Having detached the Self from the sense-organs and renounced the world, the wise will attain Immortality.

Gurdev said, kriya's ultimate goal is to stabilize the pranic energy via pranayama as suggested by Yogiraj Shayamacharan Lahiri Mahasay as well. Once a kriyavan is able to achieve this state, a kriyavan becomes free from the grasps of Maya and she/he can get answers to any questions and know what is there to know in this creation. Thus, a kriyavan which is able to achieve this state and stabilize their pranic energy, will know the ultimate source of creation and be one with the creator.

This can be done by practicing Kriya regularly with utmost dedication so that slowly and steadily a kriyavan can progress towards achieving this state.

The kriyavan asked next, while doing Kriya, often we achieve a blissful state. At such times, it feels like we should leave everything we are doing in our daily lives and focus all our efforts towards doing Kriya as much as possible. What should we do in this case?

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

Guruji said, the same question was asked by Swami Vivekananda to Sri Ramkrishna Paramhansa Ji. Bhagwan Shri Ramakrishna said, the goal of a sadhaka is not to do only that which will benefit him/her only as this will be a selfish behavior. The sadhaka should strive to help and assist all the people she/he encounters in their daily lives so that more and more people can benefit from their blissful state.

It is more so true in case of a Kriyavan in our lineage as our Kriya path is specially designed for a Grihastha (गृहस्थः) or householder. Thus, a kriyavan should try to help as many people as possible in their daily life. This can only be done when they take care of their daily household duties with the same dedication as they do their Kriya.

ॐअखण्डमण्डलाकारंव्याप्तंयेनचराचरम्
तत्पदंदर्शितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमःII

Salutations to that glorious Guru who has shown me the reality of the pervasive, unbroken infinite mandala of movable and immovable beings.

HINDI TRANSLATION

एक बार एक क्रियावान ने हमारे गुरुदेव से पूछा कि क्रिया का अंतिम लक्ष्य क्या है?
गुरुजी ने कहा, जैसा कि केनोपनिषद में बताया गया है -

"यह कान का कान, मन का मन, वाणी की वाणी, जीवन का जीवन और आंख की आंख है। स्वयं को इंद्रियों से अलग करके और संसार को त्यागकर, बुद्धिमान लोग अमरता प्राप्त करेंगे।

गुरुदेव ने कहा, क्रिया का अंतिम लक्ष्य प्राणायाम के माध्यम से प्राणिक ऊर्जा को स्थिर करना है जैसा कि योगीराज श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय ने भी सुझाया है। एक बार जब एक क्रियावान इस अवस्था को प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है, तो एक क्रियावान माया की पकड़ से मुक्त हो जाता है और वह किसी भी प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर सकता है और जान सकता है कि इस सृष्टि में जानने के लिए क्या है। इस प्रकार, एक क्रियावान जो इस अवस्था को प्राप्त करने और अपनी प्राणिक ऊर्जा को स्थिर करने में सक्षम है, वह सृजन के अंतिम स्रोत को जान लेगा और निर्माता के साथ एक हो जाएगा।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

यह अत्यधिक समर्पण के साथ नियमित रूप से क्रिया का अभ्यास करके किया जा सकता है ताकि धीरे-धीरे और लगातार एक क्रियावान इस अवस्था को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सके।

क्रियावान ने आगे पूछा, क्रिया करते समय अक्सर हम आनंदमय स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे समय में, ऐसा महसूस होता है कि हमें अपने दैनिक जीवन में जो कुछ भी कर रहे हैं उसे छोड़ देना चाहिए और जितना संभव हो सके क्रिया करने पर अपने सभी प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस मामले में हमें क्या करना चाहिए?

गुरुजी ने कहा, यही प्रश्न स्वामी विवेकानन्द ने श्री रामकृष्ण परमहंस जी से पूछा था। भगवान श्री रामकृष्ण ने कहा, साधक का लक्ष्य केवल वही करना नहीं है जिससे उसे केवल लाभ हो क्योंकि यह एक स्वार्थी व्यवहार होगा। साधक को अपने दैनिक जीवन में मिलने वाले सभी लोगों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग उनकी आनंदमय स्थिति से लाभान्वित हो सकें।

हमारे वंश में क्रियावन के मामले में यह अधिक सच है क्योंकि हमारा क्रिया पथ विशेष रूप से गृहस्थ के लिए बनाया गया है। इस प्रकार, एक क्रियावान को अपने दैनिक जीवन में यथासंभव अधिक से अधिक लोगों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए। यह तभी किया जा सकता है जब वे अपने दैनिक घरेलू कर्तव्यों का उसी समर्पण के साथ ध्यान रखें जैसे वे अपनी क्रिया करते हैं।

जो सृष्टि के के सम्पूर्ण अखण्ड स्वरूप, गतिशील और अक्रिय, में व्याप्त है।
उन सुन्दर और परोपकारी गुरु को, जिनके द्वारा वह स्थिति (मुझ पर) प्रकट हुई, नमस्कार है।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

" मेरी पूजा बड़ी अनोखी "

- मूल बांग्ला रचना (আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া)- श्यामचरण क्रियायोग व अद्धैतवाद से उद्धृत

हिंदी अनुवाद - सुदीप चक्रवर्ती

मेरी पूजा बड़ी अनोखी,
शायद दुनिया में, किसी ने न देखी |
न गंगाजल की चाह मुझे
न करना है फूलो को अर्पण,
खो गए है मेरे सारे
पूजा और अर्घ्य के बर्तन |
तारा और काली हो गए विलीन,
मैं रहता स्वयं में आत्मलीन |
मेरी पूजा बड़ी अनोखी,
शायद दुनिया में, किसी ने न देखी |
देव-देवियो का हो गया विस्मरण,
शून्य के साथ अब करता हूँ आलिंगन |
युक्त-मुक्त त्रिवेणी की धारा में ,
अब रहता निशि-दिन जलमग्न |
खुद को खोकर ब्रम्ह में विचरता ,
अपनी पूजा स्वयं ही करता |
मेरी पूजा बड़ी अनोखी,
शायद दुनिया में, किसी ने न देखी |

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"অনলাইন ক্রিয়াযোগ"

-অমিত চ্যাটার্জী

বর্তমান সময়ে, যোগসাধনার আঙ্গিকে সর্বাধিক বিচিত্র বিষয় হল 'অনলাইন ক্রিয়াযোগ'। আজকাল ক্রিয়ার বিভিন্ন পদ্ধতি- তালব্য থেকে ঠোকর বা ওঙ্কার ক্রিয়া পর্যন্ত সবই অনলাইনে পাওয়া যায়। অধিকাংশ ক্ষেত্রেই প্রকাশকের যুক্তি হচ্ছে- "আমরা চাই না ঈশ্বর লাভের পথ এইভাবে গুপ্ত থাকুক । তাই সকলের সুবিধার্থে এইসব পদ্ধতি আমরা প্রকাশ করে দিলাম।" আপাত দৃষ্টিতে এই যুক্তি সঠিক বলেই মনে হয় । সত্যিই তো, এই পদ্ধতি গুলো তথাকথিত আচার্যদের কুক্ষিগত হয়ে কেনই বা থাকবে? আমি যদি ঈশ্বরে বিশ্বাস রেখে ইন্টারনেট দেখে এইসব ক্রিয়ার অনুশীলন করি- তাহলে আমার অবশ্যই হবে বলেই মনে হয়। প্রকাশকরাও তাদের ভিডিওতে বলেন- "ঈশ্বরের বিশ্বাস বা ভক্তিই হল আসল কথা। ভক্তি ভরে প্রকাশকদের দেখানো পথে অনুসরণ করলেই হবে। গুরু নিতান্তই অপ্রয়োজনীয়।" তাছাড়া, ক্রিয়াযোগ দীক্ষা বা উচ্চক্রিয়া লাভের জন্য যা পরিশ্রম করতে হয়- তা করতে আর মন চায় না। এ ভীষণ ঝামেলা। প্রথমে একজন গুরু খোঁজো, দীক্ষা নাও, অনুশীলন করো, লক্ষ্যমাত্রা পূর্ণ করো- তারপরে গুরুদেব যোগ্য মনে করলে তবে উচ্চক্রিয়া দেবেন। এত দীর্ঘ পথের থেকে তো google সার্চ করে উচ্চক্রিয়া লাভ সহজতার পথ বলে মনে হয় ।

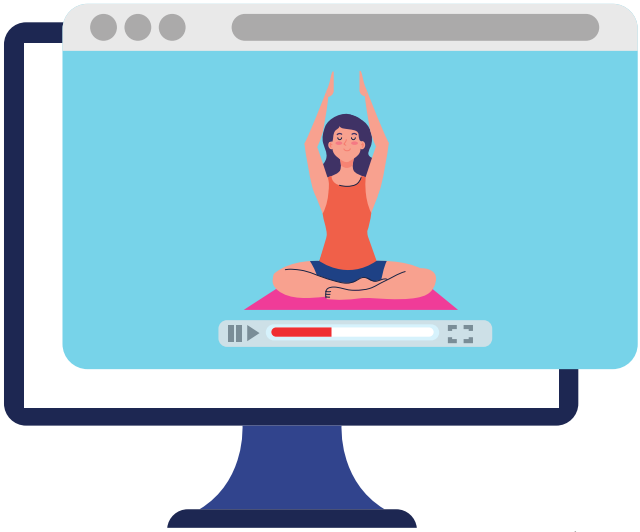

যোগানন্দজি ক্রিয়াযোগকে ঈশ্বর লাভের 'এরোপ্লেন রুট' বলে বর্ণনা করেছিলেন। তাই তাড়াতাড়ি ঈশ্বর লাভের জন্যই এই পথের প্রতি আমার এত উৎসাহ। কিন্তু এরোপ্লেন রুটের অর্থ কি শুধুই তাড়াতাড়ি পৌঁছানো? বস্তুত তা নয়। এই উপমার আরও কিছু তাৎপর্য আছে:

১. এরোপ্লেনের টিকিট মূল্য অন্যান্য যানবাহনের থেকে বেশি। একইভাবে ক্রিয়াযোগে যে মূল্য সাধককে দিতে হয় তা সত্যই অনেক। বরিষ্ঠ সাধকেরা বলেন- "ঈশ্বর একে একে অর্থ, যশ, প্রতিপত্তি, প্রিয়জনসহ সমস্ত কিছুই হরণ করে দেখেন- তুমি আসলে কি চাও? এই মূল্য প্রদানের সমর্থ্য কোন সাধকেরই থাকে না। এরূপ অবস্থায় গুরুকৃপাই সহায়ক হয়।" এত মূল্য দেওয়ার পরেও যদি সাধক জেদ বা 'হঠ' না ছাড়ে, তখনই তিনি সকল বিকার হরণ করেন এবং শেষে ধরা দেন। তাই তার নাম 'হর' অর্থাৎ সর্বস্বের হরণকারী।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

২. এরোপ্লেনে আমি যাত্রীর আসনে বসি- চালকের আসনে নই। চালকই প্লেনকে নির্দিষ্ট দিকে নিয়ে যান এবং গন্তব্যে পৌঁছে দেন। এই চালকই হল গুরু। ইন্টারনেট দেখে বিভিন্ন পদ্ধতি অনুশীলন অনেকটা বিনা প্রশিক্ষণে প্লেন ওড়ানোর মতো- যাতে দুর্ঘটনা অবসম্ভাবী।

৩. মনে করা যাক আমি হাঁটছি। হঠাৎ হোঁচট খেয়ে পড়ে গেলাম। অবশ্যই ব্যথা লাগবে- কিন্তু তা কয়েক দিনের মধ্যে সেরে উঠবে। আবার মনে করা যাক, আমি প্রশিক্ষণ ছাড়া এরোপ্লেন চালাচ্ছি এবং এটি দুর্ঘটনাগ্রস্ত হল। সেক্ষেত্রে আমার পঞ্চত্বপ্রাপ্তি অনিবার্য- কারণ এরোপ্লেন দুর্ঘটনায় বেঁচে ফেরার সম্ভাবনা নেই। সেক্ষেত্রে যথাযথ এরোপ্লেন না পাওয়া পর্যন্ত ধীর পদক্ষেপে হাঁটাই নিরাপদ বলে মনে হয়।

কিন্তু ওয়েবসাইট দেখে অনুশীলনে সমস্যাটা কোথায়? আর প্রকাশকদের সেই যে কথা- "ঈশ্বরে ভক্তি নিয়ে অনলাইনে অভ্যাস করলেও আত্মবোধ সম্ভব।" এটাও পুরোপুরি যুক্তিযুক্ত বলেই তো মনে হচ্ছে। এতে সমস্যাটা কোথায়? সমস্যা দুটি:

১. ঈশ্বর লাভের অনেক পথের কথাই তো শাস্ত্রে বলা আছে: স্বাধ্যায়, সৎগ্রন্থ বা ধর্মগ্রন্থ পাঠ, নাম সংকীর্তন, প্রার্থনা ইত্যাদি। রামকৃষ্ণদেব বলেছিলেন- "আকুল হয়ে তার জন্য কাঁদলে মনের ময়লা দূর হয়। তিনি ধরা দিন।" এই সকল পথই তো সাধকের সামনে খোলা আছে। এইসবের মাধ্যমেও তো সে অগ্রসর হতে পারে। তবে তার আকর্ষণ শুধুমাত্র ক্রিয়াযোগের প্রতিই কেন? কারণ ক্রিয়াযোগের বিভিন্ন পুস্তকে (বিশেষত যোগী কথামৃত ও পুরাণ পুরুষ) আধ্যাত্মিকতা অপেক্ষা অলৌকিকতার প্রাধান্যই বেশি। তাই এইসব পাঠ করে আমারও লোভ হয়- এইসব অলৌকিক বিষয়ে প্রত্যক্ষ করতে। এই উপলক্ষে মন আমায় বুঝিয়েছে- "আমি ঈশ্বর অনুরাগী। তাকে লাভ করব বলেই অনলাইন দেখে ক্রিয়া করছি।" কিংবা কোথাও হয়তো দীক্ষা নিয়েছি, কিন্তু দ্রুততার সাথে তাকে লাভ করার ইচ্ছায় উচ্চ ক্রিয়ার পদ্ধতি গুলো অনলাইন দেখে নিয়ে অভ্যাস করছি। এইভাবে মনের লোভকে ভক্তির মোড়কে চাপা দিয়ে নিজেই নিজেকে ঠকিয়ে চলেছি। এই আত্ম প্রবঞ্চনা আত্ম সাক্ষাৎকারের প্রধান অন্তরায়।

২. 'ঈশ্বর-অনুরাগ' ও 'ঈশ্বরকে তাড়াতাড়ি লাভ করা' দুটি বিপরীত মেরুর বিষয়। ঈশ্বর-অনুরাগ ধৈর্য রাখতে জানে। গুরুদেব বলেন- "ধৈর্যই ভগবান।" প্রকৃত আধ্যাত্মিক ব্যক্তি ঈশ্বরের মাধুর্য রসে ডুবে থাকতে চায়। লাভ-ক্ষতির হিসাব তার কাছে থাকে না। এই বিষয়ে লাহিড়ীবাবা বলতেন- "ক্রিয়া করতে করতে একসময় সবকিছু ভোঁ হয়ে যায়। তখন আমি নাই তুমি নাই।" আর বৈষয়িক মানুষ সারা জীবন যে কত কিছুই লাভ করতে চায়- তা সে নিজেই জানেনা। তার বস্তু লাভের তালিকায় ঈশ্বর একটি নাম মাত্র। তার কাছে বিষয়টা অনেকটা তাড়াতাড়ি সরকারি চাকরি লাভের মত- একবার পেয়ে গেলেই নিশ্চিন্ত। এবার সু পাত্রী দেখে তাড়াতাড়ি বিয়েটা সেরে ফেলতে হবে, তারপর ভালো ভালো ফ্ল্যাট, সন্তানের উচ্চ শিক্ষা এবং খান দুই চার চাকা। অধিক আর কি?

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

এই রূপ মানসিকতা নিয়ে যদি আমি ক্রিয়া করতে যাই তবে ঈশ্বর নয় এক চতুষ্পদ স্থুলকায় কৃষ্ণ বর্ণের জীবের (যিনি যমরাজের বাহন) কৃপা অবশ্যই লাভ হবে।

এ তো গেল মানসিকতার কথা প্রযুক্তিগত দৃষ্টিকোণ থেকেও পথপ্রদর্শক ছাড়া ক্রিয়া অভ্যাস অত্যন্ত বিপদজনক। যথার্থ ক্রিয়াযোগ একটি পূর্ণ বিজ্ঞান সম্মত পদ্ধতি: উপনয়ন থেকে মহামুদ্রা পর্যন্ত পদ্ধতিগুলি এমনভাবেই তৈরি করা হয়েছে, যাতে সর্বাধিক নিরাপদভাবে কুলকুণ্ডলীকে জাগ্রত করা যায়। আমাদের শরীর শুধুমাত্র অস্থি, চর্ম, মাংস, রক্ত, ও অন্যান্য কোষের সমাহারেই গঠিত নয়- বিভিন্ন চক্র, নাড়ি, এবং গ্রন্থিও আছে। এবং ক্রিয়াযোগ কোন 'শারীরিক কসরত' নয় যাকে যেভাবেই করো না কেন কোন ক্ষতি নেই। অনুভবে দেখা গেছে, যথাযথ পদ্ধতি, যথাযথ ক্রম, ও যথাযথ পথপ্রদর্শন ছাড়া ক্রিয়া করে ব্যক্তি বিভিন্ন উৎকট শারীরিক বা মানসিক ব্যাধির কবলে পড়েছে। কতজন তো তাড়াতাড়ি খেচরী অর্জনের জন্য জিহ্বা রজ্জুর ছেদন করান। পরিনাম স্বরূপ দেখা যায় কারোর বাকশক্তি, কারোর শ্রবণশক্তি, আবার কারো দৃষ্টি শক্তিও চলে গেছে। ছেদনের ফলে জিহ্বা অবশ্যই তালু কূহরে প্রবেশ করেছে- কিন্তু তাতে কোন আধ্যাত্মিক উন্নতি হয়নি। বরং, এ জীবনের মত ক্রিয়াযোগের মাধ্যমে আধ্যাত্মিক উন্নতির পথ বন্ধ হয়ে গেছে। কারণ জিহ্বার কিছু নাড়ি যে যে শক্তি কেন্দ্রের সাথে যুক্ত- রজ্জুর ছেদনে তার সংযোগ বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ে, এবং শক্তি প্রবাহ স্তব্ধ হয়। ক্রিয়া বা উচ্চ ক্রিয়া প্রদানের যে নিয়ম বা লক্ষ্যমাত্রা আছে তা কখনোই আমাদের উন্নতিকে আটকানোর জন্য নয়, শরীর অভ্যন্তরে নিদ্রিত অসীম শক্তিকে জাগিয়ে তোলার পথে যাতে আমাদের কোন রূপ শারীরিক বা মানসিক ক্ষতি না হয়, এই নিয়মগুলি শুধুমাত্র সেই জন্যেই তৈরি করা হয়েছে।

মনে করা যাক, আমি এক দূর আরোগ্য ব্যাধির কবলে পড়েছি- যার জন্য অস্ত্রোপচার করতেই হবে। এবার আমি মনে করলাম, এত অর্থ এত সময়ের অপচয় করে কি লাভ? তার থেকে তো ভালো হয়, ইন্টারনেট দেখে পুত্রকে কিছু 'সার্জিক্যাল কম্পনেন্ট' এনে দি, তাকে কিছু ভিডিও দেখিয়ে বুঝিয়ে দি কিভাবে করতে হবে। ইন্টারনেটে যখন দেখেছে, সে ঠিক আমার অস্ত্র প্রচার করে ফেলবে। এই রকম নির্বুদ্ধতা নিদারুণ অর্থকষ্টেও মানুষ করে না- কারণ বৈদ্য হওয়ার জন্য প্রচুর পড়াশোনা, প্রচুর অভ্যাস, ও প্রচুর অভিজ্ঞতা লাগে। সেক্ষেত্রে নিজের ভবরোগবৈদ্য আমি নিজেই হব, এই নিতান্তই নির্বুদ্ধিতার পরিচয়ক।

তাহলে কিছু ব্যক্তি ক্রিয়াযোগকে ইন্টারনেটে প্রকাশ করছে কেন? কারণ খুবই সহজ- ব্যক্তিগত প্রতিষ্ঠাতালাভ। নিজের ওয়েবসাইট বা ভিডিওর দর্শক (ভিউ) বাড়িয়ে অর্থ ও প্রতিপত্তি অর্জন। এইরূপ ব্যক্তিরা যদি পরবর্তীকালে 'ক্রিয়াযোগা টিচার' হয়ে বসে সেটাও আশ্চর্য নয়। পাশ্চাত্য দেশগুলিতে এইরূপ স্বঘোষিত গুরুদের দৌরাত্ব প্রায়শই দেখতে পাওয়া যায়। আজকাল ভারতবর্ষেও এর প্রভাব পড়েছে। আর্য ঋষিদের প্রবর্তিত ক্রিয়াযোগ পরম্পরাকে এই ধরনের কিছু স্বার্থান্বেষী ব্যক্তিগণ কলুষিত করছেন- এ বড়ই দুঃখজনক।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

আর ক্রিয়া লাভের সময় যে প্রতিজ্ঞা করা হয় যে সারা জীবন এই গুহ্যতত্ত্ব গোপন রাখবো- কেউ যদি শুধুমাত্র সেইটুকুই প্রতিজ্ঞা পালন করতে পারছেন না, তাহলে এরূপ ব্যক্তি পথপ্রদর্শক হিসেবে কতটা যোগ্য হতে পারেন তা খুব সহজেই বোঝা যায়। বাসুদেব কৃষ্ণ স্বয়ং গীতায় বলেছেন:

ইদং তু তে গুহ্যতমং প্রবক্ষ্যাম্যনসূয়বে।
জ্ঞানং বিজ্ঞানসহিতং যজজ্ঞাত্বা মোক্ষ্যসেঽশুভাৎ।। ৯-০১।।

অনুবাদঃ "পরমেশ্বর ভগবান বললেন-হে অর্জুন! তুমি নির্মলচিত্ত বলে তোমাকে আমি পরম বিজ্ঞান সমন্বিত সবচেয়ে গোপনীয় জ্ঞান উপদেশ করছি। সেই জ্ঞান প্রাপ্ত হয়ে তুমি দুঃখময় সংসার বন্ধন থেকে মুক্ত হও।"

রাজবিদ্যা রাজগুহ্যং পবিত্রমিদমুত্তমম্।
প্রত্যক্ষাবগমং ধর্ম্যং সুসুখং কর্তুমব্যয়ম্।। ৯-০২।।

অনুবাদঃ "এই জ্ঞান সমস্ত বিদ্যার রাজা, সমস্ত গুহ্যতত্ত্ব থেকেও গুহ্যতর, অতি পবিত্র এবং প্রত্যক্ষ অনুভূতির দ্বারা আত্ম-উপলব্ধি প্রদান করে বলে প্রকৃত ধর্ম। এই জ্ঞান অব্যয় এবং সুখসাধ্য।"

উপরোক্ত দুটো শ্লোকেই "গুহ্য" অর্থাৎ "অতি-গোপনীয়" এই শব্দটির উল্লেখ আছে।

লাহিড়ীবাবার কাছে দীক্ষালাবে ইচ্ছুক এক ব্যক্তি তার এক বন্ধুকে এই গুহ্যতত্ত্ব প্রকাশ করার অঙ্গীকার করে তার কাছ থেকে দীক্ষা লাভের অর্থ নিয়ে এসেছিলেন। তাকে যোগীরাজ ক্রিয়া দেন নাই। এই ঘটনা থেকেও বুঝতে পারা যায়, যোগিরাজ স্বয়ং গোপনীয়তা রক্ষার ক্ষেত্রে কতটা তৎপর ছিলেন।

কোনমতেই দ্রুত উন্নতির লোভে বহিঃস্থ তত্ত্বের উপর নির্ভর করে ক্রিয়া বা উচ্চ ক্রিয়ার অভ্যাস, অথবা কোন পদ্ধতিগত পরিবর্তন একেবারেই অনুচিত, এবং এরূপ চিন্তা ভাবনা সর্বতোভাবে পরিহার করাই কর্তব্য।

কৃতজ্ঞতা স্বীকার:
দীপাঞ্জন দে, অমিতাভ দত্ত, অভিজয় মিত্র, সুজয় বিশ্বাস

তথ্যসূত্র:

- স্বামী অড়গরানন্দ পরমহংস, যাথার্থ গীতা.
- https://krishnalela.blogspot.com/2019/03/srimad-bhagavad-gita-in-bengali-chapter_20.html
- অশোক কুমার চট্টোপাধ্যায়, "পুরান পুরুষ: যোগীরাজ শ্যামাচরণ লাহিড়ী".

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"ক্রিয়াযোগ - এক আনন্দের পথ"

-শিউলি গাঙ্গুলি

গুরুদেবের শ্রীচরণে নিবেদিত-

আদি শঙ্করাচার্য তাঁর বিবেক চূড়ামণি তে বলেছেন,

" অয়ং স্বভাবঃ স্বতঃ এব যৎ পরশ্রম-অপনোদ-প্রবণং মহাত্মনাম্।
সুধাংশুঃ এষঃ স্বয়ম্ অর্ক-কর্কশ-প্রভাভিতপ্তাম্ অবতি ক্ষিতিং কিল।।"

অর্থাৎ "অপরের দুঃখ নিবারণে তৎপরতা মহাপুরুষগণের স্বাভাবিক বৃত্তি। না চাহিলেও তাঁহারা সহায়তা করিতে অগ্রসর হন; চন্দ্র যেমন তীব্র সূর্য কিরণে তাপিত পৃথিবীকে নিজের স্নিগ্ধ কিরণ বর্ষণ দ্বারা তৃপ্ত করেন।"

তিনি কৃপাময়, তিনি আনন্দময়, একটি হরিতকি ভিন্ন তাঁকে কিছুই দেওয়া যায় না কিন্তু তিনি তাঁর অপার কৃপা থেকে শুধু দিয়েই যান,আমাদের ক্ষুদ্র আধারে এত কৃপা কুলাতে পারি সেই সাধ্য কই! আদি শঙ্করাচার্য এও বলেছেন অনেক অনেক জন্ম সুকৃতি করলে এই তিনটি জিনিস একসাথে হয় - "মানুষ হয়ে জন্ম লাভ করা", "পরমানন্দ কে উপলব্ধি করার ইচ্ছা"এবং "সেই মহাপুরুষের সংস্রব যিনি তাঁর উপলব্ধি করাতে সক্ষম"।

"দূর্লভং ত্রয়ম্ এব এতদ্ দেবানুগ্রহহেতুকম্।
মনুষ্যত্বং, মুমুক্ষত্বং, মহাপূরুষসংশ্রয়।।"

গুরুদেবের সংস্পর্শে আসা সব শিষ্য, শিষ্যারাই পরম ভাগ্যবান তাই এই তিনটি দূর্লভ জিনিস তাদের জীবনে ঘটেছে তবু মহামায়া পথ ছাড়ে কই! মা বলেন," ক্রিয়া করো, ক্রিয়া করো, ক্রিয়া করো - তবেই সব হবে।" মা এর এই অমৃত বাণী হলো চরম সত্য।যে পথের খোঁজ গুরুদেব দিয়েছেন সেই পথে যেমন সাধ্য তেমন ভাবেই যুক্ত থাকার চেষ্টা করতেই হবে। তাঁর দিকে একপা এগোলে তিনি আমাদের দিকে দশ পা এগিয়ে আসেন - তাঁকে ধরে থাকলে সমস্ত চাওয়া এমনি পাওয়া হয়ে যায়, মন হিসাব করতেও ভুলে যায় যে কি চাওয়ার ছিলো আর কি পাওয়া হলো। তিনি এমনই আনন্দস্বরূপ যে তাঁর কথা ভাবতে ভাবতে অশ্রু আসে, মন আনন্দময় হয়ে ওঠে। দুঃখ, বেদনা, শোক - সেকি আর সংসারে নেই! সবই আছে, সবই আমাদের সাথেই থাকে কিন্তু তিনি সাথে থাকলে মন তাঁর কৃপায় এগুলো নিয়েই চলতে শিখে যায়। তাঁর স্মরণ নিয়ে থাকলে অন্তর এমন ভালোবাসায় ভরে থাকে যে ঘাত, প্রতিঘাত , পাওয়া, না পাওয়ার ব্যাথা 'জায়গা' করবার জায়গাটুকুও খুঁজে পায় না। শ্বেতশুভ্র পোষাকে প্রশান্ত জ্ঞানী যে মানুষটিকে আমরা আমাদের গুরুদেব বলে জানি তিনি দেবালয় আর তাঁর ভেতরে আছেন সেই পরমপূরুষ যিনি কৃপাময় হয়ে আমাদের সবার সাথে যুক্ত আছেন।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

কুটস্থে, হৃদয়ে যেখানেই অন্তর্দৃষ্টি ফেলা হয় সেখানেই তাঁর দেখা পাওয়া যায়, তিনি সমস্ত স্বত্ত্বা জুড়ে ভক্তি,প্রেম ও আনন্দ স্বরূপ হয়ে বিরাজ করেন। তাঁকে জানার চেষ্টাই ক্রিয়া - ক্রিয়াই গুরু এবং গুরুই ক্রিয়া। তাই ক্রিয়া করতে হবে। মা এর অমৃত বাণী মেনে চলতে হবে - "ক্রিয়া করো, ক্রিয়া করো, ক্রিয়া করো।" এ পথ আনন্দের পথ, এ পথ অমৃতের পথ, যতটুকু হয় এই সাধারণ জীবনে ততটুকুই চেষ্টা অন্তত আমাদের করে যেতে হবে।

চক্রে চক্রে আলোর জ্যোতি হয়নি তো প্রভূ মোর!
শুধু তোমাকে জেনেছি, তোমাকে চেয়েছি, শুধু তোমারই ভাবে বিভোর।
তোমারই তৈরী সংসার প্রভূ ,
তোমারই মায়াতে বাঁধা -
তোমারই পথে, তোমারই লক্ষ্যে, তোমারই সাধন সাধা।
আমি সংসারী, সংসারে ঘুরি
পাকে পাকে বাঁধা শত শত দড়ি,
তবু শ্রীচরণ ধরে আছে মন -
ওঠা আর নামা ঢেউ এর মতন
এত কি সহজ ক্রিয়ার সাধন!
শুধু কৃপা করে অধমেরে নাথ শ্রী চরণ তলে রেখো,
আমার সকল 'আমি' কে মুছিয়ে তুমি প্রভূ হয়ে থেকো।
"মোক্ষকারণসামগ্র্যাং ভক্তিঃ এব গরীয়সী।
স্বস্বরূপাসন্ধানাং ভক্তিঃ ইতি অভিধীয়তে।।"

মোক্ষের সাধন সমুহের মধ্যে ভক্তিই শ্রেষ্ঠ। নিজের স্বরূপ চিন্তন ভক্তি নামে অভিহিত হয়। ক্রিয়াই গুরু , ক্রিয়াই ভক্তি, নিজের স্বরূপ অন্বেষনই ক্রিয়াযোগ।

জয় গুরুদেব।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"মোক্ষপুরী কাশী"

-অভিজিৎ সেনগুপ্ত

"Benaras is older than history, older than tradition, older even than legend and looks twice as old as all of them put together" - Mark Twain

পুরাণে বর্ণিত সপ্ত পুরীর অন্তর্গত মোক্ষ প্রদায়িনী কাশী আমাদের পৃথিবীর প্রাচীনতম ক্রমাগত বসবাসকারী শহর। অত্যুজ্জ্বল জ্যোতিঃস্বরুপ পরমেশ্বর যাঁকে যথাযথভাবে বর্ণনা করা যায় না এই ক্ষেত্রে জ্বলজ্বল করেন, সেই কারণে এই ক্ষেত্রের নাম কাশী। কাশীপুরী সাক্ষাৎ মহাদেবের শরীর। পৌরাণিক যুগে কাশী আনন্দ কানন নামেও পরিচিত ছিল। আদি পুরুষের শরীর থেকে উদ্‌গত বরুনা নদীকে পিঙ্গলা নাড়ি ও অসি নদীকে ইড়া নাড়ি বলে গণ্য করা হয় এবং এই দুই নাড়ির মধ্যবর্তী স্থানে অবস্থিত অতি পবিত্র ভূখণ্ড কাশীক্ষেত্রকে সুষুম্না নাড়ি বলে গণ্য করা হয়। এই তিন নাড়ি একত্রে বারানসি নামে পরিচিত। ভূর্লোক, ভুবর্লোক ও স্বর্লোকের মধ্যে কাশী সবচেয়ে পরম পবিত্র তীর্থ। মানব কাশীতে আগমন করে যথাবিধি স্নান ও তর্পণ করে ব্রহ্ম হত্যার পাপ থেকেও মুক্ত হতে পারেন। পরমেশ্বরের আশিসে জীব কাশীতে শুধু মাত্র দেহপাত করলেই স্বয়ং দেবাদিদেব শিব তার কানে তারক ব্রহ্ম নাম প্রদান করে তাকে ব্রহ্মময় করে মুক্ত করে দেন। সনাতন ধর্মের প্রচলিত মান্যতা অনুযায়ী মহাদেবের ত্রিশূলের অগ্রে অবস্থিত কাশীর প্রলয়কালেও বিনাশ নেই। প্রলয়কালে মহাদেব, মা পার্বতী এবং শ্রী বিষ্ণু কাশীক্ষেত্র পরিত্যাগ করেন না বলে এর ওপর নাম অবিমুক্তক্ষেত্র এবং এই ক্ষেত্রে অবস্থিত মহা লিঙ্গের নাম অবিমুক্তেশ্বর।

গুরু শিষ্য একযোগে তীর্থযাত্রায় যাওয়া ভারতবর্ষের এক সুপ্রাচীন পরম্পরা। এই পরম্পরা অনুযায়ী আমরা শ্রদ্ধেয় গুরুদেব যোগাচার্য ড. সুধীন রায় মহাশয়ের সাথে একযোগে কাশী ধাম যাত্রার পরিকল্পনা করলাম। অবশেষে এসে গেল সেই বহু প্রতীক্ষিত দিনটি যার জন্যে অধীর আগ্রহে অপেক্ষা করছিলাম। মঙ্গলবার ৭ই নভেম্বর, ২০২৩ আমরা হাওড়া স্টেশন থেকে প্রায় ৬০ জন মিলে বিভূতি এক্সপ্রেস করে রাত আটটার সময় রওনা দিলাম। নির্দিষ্ট সময় বহু উৎসাহ ও উদ্দীপনার মধ্যে দিয়ে আমাদের কাশী ধাম যাত্রা শুরু হল। ট্রেন ছাড়ার কিছু পরে গুরুদেব ব্যক্তিগত ভাবে এসে প্রত্যেকের খোঁজ খবর নিয়ে গেলেন। আমরা গুরুদেবকে সর্বদা সাদা পায়জামা ও পাঞ্জাবি পরিহিত দেখতেই অভ্যস্ত, কিন্তু আজ ওনার পরনে ছিল গাঢ় হলুদ প্যান্ট, নীল শার্ট ও গাঢ় নীল ফুল হাতা সোয়েটার, মুখ N95 মাস্ক । স্লিপার কোচে পৌঁছোবার দরজা বন্ধ থাকার জন্য উনি অবশ্য ওখানে থাকা আমাদের সাথীদের সঙ্গে দেখা করতে যেতে পারলেন না।

রাতের আহারাদির পর কতিপয় ক্রিয়াবান সাথীদের সাথে একত্রিত হয়ে আমার বার্থে বসে বিবিধ আধ্যাত্মিক আলোচনা করতে লাগলাম। কেউ তাদের পূর্ববর্তী কাশী যাত্রার অভিজ্ঞতা ব্যক্ত করলো, কেউ বা মণিকর্ণিকা ঘাটের শ্মশান ও অঘোরী সাধুদের রহস্যময় জীবনশৈলী সম্বন্ধে আলোকপাত করল। জ্যোতিষ নিয়েও চলল বেশ কিছু আলোচনা। এভাবেই বিভিন্ন কথোপকথনের মাধ্যমে মধ্যরাত্রি পেরিয়ে গেল। একে একে সকলে বিদায় নিল। হু হু করে ট্রেন ছুটে চলেছে, জানালার পর্দার ফাঁক দিয়ে মাঝে মধ্যে ছোট ছোট স্টেশন পার হয়ে যেতে দেখা যাচ্ছে কিন্তু কোচের ভিতর

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

সকলেই নিদ্রামগ্ন, এক নিস্তব্ধ নিথর পরিবেশ । শৈশব থেকেই আমার একাকিত্ব ভীষণ পছন্দ এবং সারাদিন যাত্রার প্রস্তুতির ব্যস্ততায় ক্রিয়া করতে পারিনি বলে এই পরিবেশে আমার মনে ক্রিয়া করার খুব ইচ্ছা হল। যথা সম্ভব গুপ্ততা রক্ষা করে প্রায় ঘণ্টাখানেক সাধনা করার পর দেখলাম ঘড়িতে রাত দুটো বেজে গেছে।সকালে ঘুম ভাঙল সোয়া ছটার সময়, তখন ট্রেনটা একটা ছোট স্টেশনে দাঁড়িয়ে আছে। চা পান করে আমাদের কামরাতেই একটু অগ্রসর হয়ে দেখলাম গুরুভাই শুভংকর তার সুরেলা কণ্ঠে ভক্তিগীতি গাইছেন এবং তাকে ঘিরে বসে আছে আমাদের অনেক সাথীরা। কুয়াশাচ্ছন্ন সবুজ ক্ষেতের মধ্য দিয়ে এগিয়ে চলেছে আমাদের ট্রেন আর সাথে চলছে অবিরাম ভক্তিগীতি। এইরকম অনবদ্য ভক্তিমূলক পরিবেশের মধ্যে দিয়ে সকালটা কেটে গেলো।

বুধবার, ৮ই নভেম্বর আমাদের ট্রেন কাশী পৌঁছাতে প্রায় দেড় ঘণ্টা দেরি করার জন্য সকাল বেলা আর বাবা বিশ্বনাথের দর্শন করা হল না। নবনির্মিত শ্রী কাশী বিশ্বনাথ করিডরের নিকটবর্তী তীর্থ গেস্ট হাউসে অধিকাংশ সঙ্গীদের সাথে উঠেছিলাম। কাশীর বিখ্যাত গলিপথের মধ্যে অবস্থিত এই গেস্ট হাউসটি। সরু গলিপথের দুই ধারে মূলত পূজার সামগ্রীর দোকানে ভর্তি, সাথে আছে কয়েকটি শাড়ি, চুড়ি ও দইয়ের দোকান। ট্রেনে প্রাতরাশের অভাবে খুব ক্ষুধার্ত ছিলাম কিন্তু স্নান সেরে ঠিক করলাম যেহেতু আধ্যাত্মিক কারণেই কাশীতে আগমন এবং আগেকার কাশী ধাম ভ্রমণের অভিজ্ঞতা যে এখানে সাধনা আশুফলপ্রদ তাই সর্বাগ্রে ক্রিয়া করবো। ঘণ্টাখানেক ক্রিয়া করে দুটো নাগাদ ঘর থেকে বেরিয়ে দেখলাম সকলেই মধ্যাহ্ন ভোজনের জন্য বাইরে বেরিয়ে গেছেন কারণ আমাদের গেস্ট হাউসে ভোজনের ব্যবস্থা নেই। কলকাতা থেকেই মনস্থির করে এসেছিলাম যে প্রত্যহ অন্তত একবার করে শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের প্রসাদ গ্রহণ করবো, তাই খুব উৎসাহের সাথে বেরিয়ে পড়লাম শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের প্রসাদালয়ের উদ্দেশ্যে। আমাদের গেস্ট হাউস থেকে মাত্র তিন মিনিটের হাঁটা পথের দূরত্বে গোল্ডেন লজের পার্শ্ববর্তী এক অতিশয় সরু গলিতে নতুন প্রসাদালয়টি অবস্থিত। গলিটি এত সরু যে দুজন ব্যক্তি পাশাপাশি দাঁড়াতে পারেনা । ভাত, সম্বার ডাল, দই ও বেসনের তৈরি কাড়ি, আলুর ছোলার তরকারি, দই ও লাড্ডু দিয়ে ভক্তি যুক্ত চিত্তে প্রসাদ গ্রহণ করলাম। বর্তমানে এখানে তিন বেলাই দক্ষিণ ভারতীয় প্রসাদ বিতরণ করা হয়। কাশীতে পদার্পণ করে মায়ের প্রসাদ প্রথম অন্ন হিসেবে গ্রহণ করতে পেরে খুবই আনন্দিত বোধ করলাম, এটি মায়ের আশীর্বাদ বলেই প্রতীত হল।

প্রথম দিন বিকেল চারটে নাগাদ বর্ষীয়ান গুরুভাই সত্যপ্রিয়দা ও কাবেরীদির সাথে শ্রী বিশ্বনাথ দর্শনে গেলাম। কাশীতে অবস্থিত প্রত্যেকটা তীর্থের নিজস্ব ইতিহাস ও মাহাত্ম্য আছে। পুরাকালে স্বয়ং মহাদেব কাশীক্ষেত্র পরিত্যাগ করে মন্দার পর্বত গমন করার সময় সকলের অজ্ঞাতসারে কাশীক্ষেত্রকে রক্ষা করবার জন্য সর্বপ্রকার সিদ্ধিপ্রদ ও মুক্তিপ্রদ নিজের এক মহাজাগতিক রূপ এই শিবলিঙ্গটি স্থাপন করেন। প্রলয়কালেও কাশীক্ষেত্রকে নিজের সংসর্গ থেকে বিমুক্ত করেন না বলেই এই শিবলিঙ্গের নাম অবিমুক্ত বা অবিমুক্তেশ্বর শিবলিঙ্গ। এই অবিমুক্তেশ্বরই আদি লিঙ্গ কারণ এর পূর্বে এই ভূমণ্ডলে আর অন্য কোন লিঙ্গ স্থাপিত হয়নি। এই মহা লিঙ্গ দর্শন মাত্রেই জীবের কর্ম বন্ধন বিমুক্ত হয়ে যায়। যে ব্যক্তি অন্যত্র অবস্থান করেও মৃত্যুকালে অবিমুক্তেশ্বরকে বা অবিমুক্তেশ্বরক্ষেত্র স্মরণ করেন তাকেও আর পুনর্বার জন্মগ্রহণ করতে হয় না।স্কন্ধ পুরাণের কাশী খণ্ডে বর্ণিত শ্রী অবিমুক্তেশ্বর শিব মন্দিরটি ইতিহাসবিদদের মতে সর্বপ্রথমে ১১৯৪ সালে কুতুবুদ্দিন আইবক ধ্বংস করার পর রাজিয়া সুলতানা ওই স্থানে রাজিয়ার মসজিদ স্থাপন

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

করেন। রাজিয়ার মসজিদটি বর্তমান শ্রী কাশী বিশ্বনাথ মন্দিরের কাছে একটি গলিতে অবস্থিত। এরপর বর্তমান শ্রী বিশ্বনাথ মন্দির সংলগ্ন শ্রী বিশ্বেশ্বর শিব মন্দিরটি আনুমানিক ১৫৮৫ সালে মুঘল সম্রাট আকবরের অর্থমন্ত্রী রাজা টোডার মল সহ অন্যান্য রাজারা নারায়ণ ভট্ট নামক পণ্ডিতের তত্ত্বাবধানে তৈরি করেন। পরে মুঘল সম্রাট আওরঙ্গজেবের নির্দেশে ১৬৬৯ সালে শ্রী বিশ্বেশ্বর মন্দিরটি ধ্বংস করে সেই স্থানে জ্ঞানব্যাপী মসজিদ স্থাপন করা হয়। পরবর্তী কালে ১৭৮০ সালে ইন্দোরের মহারানি অহল্যাবাই হোলকার বাবা বিশ্বনাথের স্বপ্নাদেশ পেয়ে অধুনা শ্রী কাশী বিশ্বনাথ মন্দিরটি জ্ঞানব্যাপী মসজিদের পার্শ্ববর্তী স্থানে নির্মাণ করেন। সম্প্রতি শ্রী কাশী বিশ্বনাথ মন্দিরটি পাঁচ লক্ষ স্কোয়ার ফুট জায়গা নিয়ে নবনির্মিত শ্রী কাশী বিশ্বানাথ করিডরের অন্তর্গত। শ্রী কাশী বিশ্বনাথ মন্দির সংলগ্ন প্রাচীন গলিপথ ও পার্শ্ববর্তী তিনশো বাড়ি অধিগ্রহণ করে ঐতিহ্যগত শিল্প কলায় পরিপূর্ণ এক সুবিশাল প্রাঙ্গণ তৈরি করা হয়েছে যেখানে পঞ্চাশ হাজার ভক্তের সমাগম হতে পারে। প্রাচীন শ্রী বিশ্বনাথ মন্দিরটির সংস্কার করা হয়েছে, এছাড়া আরো কয়েকটি প্রাচীন মন্দিরকে সংস্কার করে করিডরের মধ্যে অন্তর্গত করা হয়েছে। ভারত মাতার মূর্তি, পুণ্যতোয়া রানি অহল্যাবাই হোলকারের মূর্তি স্থাপন করা হয়েছে, মিউজিয়াম, মুমুক্ষু আলয় এবং পুণ্যার্থীদের সুবিধার্থে তৈরি হয়েছে আরো বহু ভবন। পূর্বের ন্যায় এখন আর মন্দির চত্বরে কোনো বাঁদরের উপদ্রব নেই। করিডর দিয়ে মণিকর্ণিকা ঘাট সংলগ্ন ললিতা ঘাটে গিয়ে ভক্তরা মা গঙ্গায় স্নান করে বাবা বিশ্বনাথের অভিষেকের জন্য গঙ্গা জল নিয়ে আসতে পারেন।

দুধ, বিল্বপত্র, মিষ্টি দিয়ে স্বহস্তে বাবা বিশ্বনাথের অর্চনা করলাম। বর্তমান কালে সকাল ও বিকেল চারটে থেকে ছটা পর্যন্ত শ্রী বিশ্বনাথের স্পর্শ দর্শন করা যায়। প্রায় আট বছর পরে শ্রী বিশ্বনাথের অত্যুজ্জ্বল রূপ পুনরায় দর্শন করে ও তাঁর শীতল স্পর্শ পেয়ে মন শান্ত হয়ে গেলো। গর্ভগৃহের বাইরে এসে শ্রী বিশ্বনাথকে সাষ্টাঙ্গে প্রণাম করার পর মনে খুব পরিতৃপ্তি বোধ করলাম। মন্দির প্রাঙ্গণে অবস্থিত মা অন্নপূর্ণা, শ্রী বদ্রীনারায়ণ ও শ্রী বজরংবলীকে নমস্কার করে দেখি চারিদিকে অগুনতি ভক্তের ভিড়, জ্বলে উঠেছে করিডরের উজ্জ্বল হলুদ আলোগুলো । গেস্ট হাউসে প্রসাদ রেখে মা গঙ্গার সন্ধ্যা আরতি দেখতে এক সরু ও ঢালু গলিপথ দিয়ে রাজেন্দ্র প্রাসাদ ঘাটে এসে উপস্থিত হলাম। সন্ধ্যা আরতি তখন সবে শুরু হয়েছে, তিল ধারণেরও স্থান নেই কিন্তু তারই মধ্যে শেষের সারিগুলোতে আমরা একটু জায়গা করে নিয়ে আসন গ্রহণ করলাম। একাধিক পুরোহিত সমবেত ভাবে গঙ্গার আরতি করছেন, তারই মধ্যে ভস্মে লিপ্ত এক বয়োবৃদ্ধ সাধু এসে সকলকে চন্দনের ফোঁটা দিয়ে গেলেন। ভিড় এড়াতে আরতি শেষের একটু আগেই আমরা বেরিয়ে পড়লাম। গেস্ট হাউসে ফিরে জানতে পেরেছিলাম যে আরো অনেক ক্রিয়াবান সাথিরা গঙ্গার ঘাটে এসেছিলেন সন্ধ্যা আরতি দর্শন করতে। স্বয়ং গুরুদেবও এসেছিলেন আরতি দর্শন করতে কিন্তু আমার দুর্ভাগ্য যে শ্রী গুরুদেবের সাথে সেদিন আমার আর দেখা হয়নি। রাত্রে শ্রী অন্নপূর্ণা প্রসাদালয় থেকে ইডলি ও মেদু বড়া দিয়ে নৈশ ভোজ সম্পন্ন করে নবীন ক্রিয়াবান শুভরঞ্জনের সাথে বেরিয়ে পড়লাম কাশীর গলিপথগুলোর অন্বেষণে। চারিদিকে তখনো জনসমুদ্র তাই আর বেশি ঘোরা হল না, মুখে দেয়া মাত্র গলে যায় এইরকম একটি বেনারসি পান খেয়ে গেস্ট হাউসে ফেরত চলে এলাম।পরদিন বৃহস্পতিবার, ৯ই নভেম্বর রাত পৌনে দুটোর মধ্যে অনেক ক্রিয়াবান গুরুভাইদের সাথে বেরিয়ে পড়লাম বাবা বিশ্বনাথের মঙ্গল আরতি দর্শন করতে। মঙ্গল আরতি রাত তিনটা থেকে ভোর চারটে পর্যন্ত হয়।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

গুরুদেব আরতির টিকিট কেটেও আমার অজ্ঞাত কোন কারণে অনুপস্থিত ছিলেন। কয়েকশো ভক্তের ভিড় ঠেলে প্রায় রাত তিনটের সময় যখন মন্দির প্রাঙ্গণে প্রবেশ করার সুযোগ পেলাম তখন মঙ্গল আরতি শুরু হয়ে গেছে। সেখানে তখন এক দৈব পরিবেশ। শান্ত, গভীর রাত্রির ঘন কাল আকাশে বৃহৎ চন্দ্রমা জ্বলজ্বল করছে, করিডরের উজ্জ্বল হলুদ আলোকে চারিদিক উদ্ভাসিত। রাত্রির নিস্তব্ধতা ভেদ করে মন্দিরের মাইকে পুরোহিতগণের পবিত্র বেদ মন্ত্রোচ্চারণ শোনা যাচ্ছে। উজ্জয়িনীর মহাকাল মন্দিরের প্রাতঃকালীন ভস্ম আরতি যারা দর্শন করেছেন তারা জানেন যে দর্শনার্থীদের এমন ভাবে বসান হয় যে সকলেই আরতি দর্শন করতে পারেন, কিন্তু এখানে তেমনটা নয়। চারটি গেটের মধ্যে মাত্র একটিতে ভক্তদের দাঁড়িয়ে থেকে দর্শন করতে দেওয়া হয় যার জন্য মুষ্টিমেয় কিছু ভক্ত মন্দিরের ভিতরের দর্শন পান, আরও কিছু ভক্ত গেটের সামনে দাঁড়িয়ে টিভির পর্দায় মঙ্গল আরতি দেখতে পারেন। কিন্তু ২০০ ভক্তের মধ্যে লাইনের প্রায় শেষ ৬০ জন, যার মধ্যে আমিও ছিলাম, তারা সুধু মাত্র মাইকে মন্ত্রোচ্চারণটাই শুনতে পান।

আমার সামনে দাঁড়িয়ে থাকা গুরুভাই শুভংকর লাইন থেকে বেড়িয়ে গিয়ে প্রাচীরের পাশে ধ্যানে বসলেন, আমিও কিচ্ছু দর্শন করতে না পেরে একপ্রকার হতাশ হয়ে দাঁড়িয়ে থেকেই প্রাণায়াম করতে লাগলাম। এভাবেই অনেকক্ষণ কেটে যাবার পর আকস্মিক তড়িৎ ঝলকানিতে ম্রিয়মাণ হয়ে গেল করিডরের আলোগুলো, অনুভব করলাম আশুতোষের অযাচিত আশীর্বাদ। ব্রহ্মাণ্ড ব্যাপী পরমেশ্বর যে শুধু মাত্র শিব লিঙ্গ বা মন্দিরের মধ্যে সীমাবদ্ধ নন তার আভাস পেলাম। মনে পড়ে গেল একবার গুরুদেব বলেছিলেন যে কূটস্থ শুধু মাত্র আমাদের শরীরে নয়, সর্বত্রই বর্তমান। মঙ্গল আরতি দর্শনের জন্য আসা সকল দর্শনার্থীদের মহাদেবের স্পর্শ দর্শনের সুযোগ করে দেওয়া হয়, তাই মন্দিরে প্রবেশের জন্য আরো একটি দরজা খুলে দেবার পর লাইন একটু ছোট হয়ে গেলো ও শেষ দুমিনিটের জন্য মঙ্গল আরতি টিভির পর্দায় দর্শন করতে পারলাম। রাত দুটোর সময়ও ফুল প্রসাদের দোকানগুলো খোলা ছিল এবং সেখান থেকে কেনা দুধ ও বিল্বপত্র দিয়ে পূজা সমাপন করলাম। পরপর দু-দিন বাবা বিশ্বনাথের স্পর্শ দর্শনের সুযোগ পেয়ে খুব খুশি বোধ করলাম। শ্রী বিশ্বনাথ দর্শনের পরে মন্দির প্রাচীরের পার্শ্ববর্তী শ্বেত শুভ্র মার্বেলের মেঝেতে এসে বসলাম। কয়েকজন ক্রিয়াবান সাথী ইতিপূর্বে সেখানে নিজেদের মত করে আধ্যাত্মিক চিন্তায় মগ্ন, তাদের মুখ আধ্যাত্মিক আনন্দে উদ্ভাসিত। স্থান মাহাত্ম্যর প্রভাবে মুহূর্তের মধ্যেই মগ্ন হয়ে গেলাম। প্রায় দশ মিনিটের পর একপ্রকার জোর করেই উঠে পড়লাম কারণ এরকম জনবহুল স্থানে এর থেকে অধিক গভীর সাধনায় প্রবেশ করতে আমার ভয় করছিল। এছাড়া আমি ব্যক্তিগত ভাবে রুদ্রাভিষেকের টিকিটও কেটেছিলাম। চারিদিকে তাকিয়ে দেখি আমার সাথীরা ইতিমধ্যে প্রস্থান করে গেছেন।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

রুদ্রাভিষেক পূজাতে বিশ্বনাথ মন্দির চত্বরে অবস্থিত একাধিক শিবলিঙ্গগুলোর মধ্যে যে কোন একটিতে শুক্ল যজুর্বেদের রুদ্রাষ্টাধ্যায়ী মন্ত্রের দ্বারা শিবের স্নান ও পূজা সম্পন্ন করা হয়। রুদ্রাভিষেকের টিকিটের মধ্যেই পূজার দ্রব্য, পুরোহিতের দক্ষিণা অন্তর্গত আছে, শুধু অভিষেকের জন্য দুধ আলাদা করে কিনতে হয়। জ্যোতির্লিঙ্গে রুদ্রাভিষেক সর্বদাই মঙ্গলকারী ও জন্মান্তরের পাপ নাশকারী বলে গণ্য করা হয়। জল দ্বারা অভিষেক মহেশ্বরের অত্যন্ত প্রিয়, তবুও শাস্ত্রমতে পূজায় ব্যবহৃত অভিষেকের দ্রব্যের ওপর পুজোর ফল নির্ভর করে যথা তীর্থের জলে অভিষেক সম্পন্ন করলে মোক্ষ প্রাপ্তি, দুগ্ধে সকল মনস্কামনা পূর্তি, চিনি মিশ্রিত দুধ ব্যবহারে বুদ্ধির জড়তা নষ্ট হয়, আঁখের রস ব্যবহারে লক্ষ্মী লাভ হয় ইত্যাদি। প্রায় চল্লিশ মিনিট পর রুদ্রাভিষেক পর্ব সমাপন হওয়ার পর বিশ্বানাথ মন্দিরের ২ নম্বর গেটের সম্মুখে শ্রী অন্নপূর্ণা মন্দিরে গেলাম। ভোর পাঁচটার সময়ও এখানে যথেষ্ট ভক্তের সমাগম ও তাদের স্তোত্র পাঠে মন্দির মুখরিত। শাস্ত্রজ্ঞদের মতে শ্রী অন্নপূর্ণা মাকে কাশী খণ্ডে ভবানী মা নামে অভিহিত করা হয়েছে। বর্তমান মন্দিরটি ১৭২৯ সালে পেশওয়া বাজী রাও দ্বারা নির্মিত। এর পূর্বে এই মন্দিরের কোনো ইতিহাস পাওয়া না গেলেও কাশীতে যে শ্রী অন্নপূর্ণা মাতার পূজার প্রচলন ছিল তা আমরা অষ্টম শতাব্দীতে শ্রী আদি শঙ্করাচার্য রচিত অন্নপূর্ণা স্তোত্রম থেকে দেখতে পাই :

“নিত্যানন্দকরী বরাভয়করী সৌংদর্য রত্নাকরী
নির্ধূতাখিল ঘোর পাবনকরী প্রত্যক্ষ মাহেশ্বরী ।
প্রালেয়াচল বংশ পাবনকরী কাশীপুরাধীশ্বরী
ভিক্ষাং দেহি কৃপাবলম্বনকরী মাতান্নপূর্ণেশ্বরী ।।”

এই মন্দিরের ট্রাস্টের দ্বারাই কাশীতে অন্নক্ষেত্র পরিচালনা করা হয় যাতে কাশীতে কেউ অভুক্ত না থাকেন। মন্দিরে প্রবেশ করেই বৃহৎ নাটমন্দির, সামনে গর্ভ গৃহে একটি বেদির ওপর শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের পিতলের তৈরি মূর্তি, নাটমন্দিরের পশ্চাৎ ভাগে একটি বৃহৎ হল ঘরে আর অনেক দেব দেবীর মূর্তি। ধনতেরাস থেকে দীপাবলির পরদিন পর্যন্ত বাৎসরিক একবার করে সম্পূর্ণ সোনার তৈরি শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের মূর্তি পুজিতা হন, এই সময়ে লক্ষ লক্ষ দর্শনার্থীদের বিপুল ভিড় হয়। আগত ভক্তদের মন্দির থেকে মায়ের আশীর্বাদি স্বরূপ একটি করে এক টাকা বা দু টাকার কয়েন দেওয়া হয় যা পারম্পারিক মান্যতা হিসেবে গৃহে রাখলে ভক্তদের কোনোদিন অন্নাভাব হয় না। দীপাবলির পরদিন মন্দিরে অন্নকূট অনুষ্ঠিত হয়। ঠাকুর শ্রী রামকৃষ্ণদেব তাঁর কাশী যাত্রার অভিজ্ঞতা বর্ণনা করতে গিয়ে বলেছিলেন যে দেবাদিদেব শিব সন্ন্যাসীর বেশে ওঁনার হাত ধরে একটি ঠাকুরবাড়িতে নিয়ে এলেন যেখানে সোনার শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের দর্শন হল। ঠাকুর অনুভব করেছিলেন যে পরমেশ্বর নিজেই এই সব হয়েছেন, কোন কোন জিনিসে তাঁর বেশি প্রকাশ।

পুরোহিতের সাহায্যে গর্ভগৃহে প্রবেশ করে মায়ের পূজা দিতে পেরে মায়ের আশীর্বাদ বোধ করলাম কিন্তু গর্ভগৃহের বাইরে এসে টের পেলাম রুদ্রাভিষেকর প্রসাদ হিসেবে প্রাপ্ত একটি ছোট মিশ্রির প্যাকেট আমার পাঞ্জাবির পকেট থেকে গর্ভগৃহে প্রবেশ করার সময় পড়ে গেছে।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

আমি ও পুরোহিত মহাশয় আতিপাতি করে খুঁজেও সেটা আর পেলাম না। মনটা ভারাক্রান্ত হয়ে গেলো, ভাবতে লাগলাম যে আমার পুজো ও ভক্তিতে নিশ্চয় ত্রুটিবিচ্যুতি ছিল তাই ভগবান রুদ্রাভিষেকের প্রসাদ কেড়ে নিলেন। ঘটনার এই আকস্মিক মোড়ে বিষন্ন চিত্তে কুয়াশাচ্ছন্ন ফাঁকা গলিপথ দিয়ে ভোর সাড়ে পাঁচটার পূর্বে গেস্ট হাউসে ফেরত চলে এলাম। আমার কয়েকজন সাথী ততক্ষণে গেস্ট হাউসে ফিরে এসেছেন। আজ গঙ্গার ঘাটে সূর্য নমস্কার আসনের অনুষ্ঠান ছিল কিন্তু ঘরে ফিরে ক্লান্ত শরীর বিছানায় এলিয়ে দিলাম। একটু পরেই অনুভব করলাম যে দীর্ঘ ক্রিয়ার পর আমার কূটস্থে কদাচিৎ একটি বিশেষ অনুভূতি হয়, সেটি এখন বিনা ক্রিয়াতেই সাধিত হচ্ছে। প্রথমেই চিন্তা এলো এটি পরমেশ্বরের অযাচিত কৃপা। পূজনীয় গুরুদেব সর্বদা বলেন কৃপা মানে করে পাওয়া, যদিও এই ক্ষেত্রে তীর্থ দর্শন ব্যতীত আর খুব একটা সাধনা করিনি। কূটস্থের অনুভূতি ক্রমাগত বেড়েই চলেছে, ইচ্ছে হলো এক্ষুনি ক্রিয়া করতে বসি কিন্তু উঠতে গিয়ে অনুভব করলাম যে পুরো শরীরটা রাত্রি জাগরণের ক্লান্তিতে অবসাদগ্রস্ত। পরমেশ্বরের প্রতি মনে মনে কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন করে নিজের অজান্তেই ঘুমিয়ে পড়লাম। ঘণ্টা দেড়েকে পর ঘুম থেকে উঠে ক্রিয়া চলাকালীন মনে এই ভাব এলো যে জীবনের সর্ব ক্ষেত্রে ঈশ্বরের কাছে নিজেকে সম্পূর্ণ ভাবে সমর্পণ করে ফলাকাঙ্ক্ষা রহিত হয়ে সাধনা করতে হবে। এই সময়ে চক্রগুলো ভালো ভাবে অনুভূত হতে লাগল।

সকাল নয়টা নাগাদ শুভরঞ্জন, বর্ষীয়ান গুরুভাই সত্যপ্রিয়দা, কাবেরীদি, অমলদা ও ওনার স্ত্রীর সঙ্গে আমিও বেরিয়ে পড়লাম আমাদের প্রথম গন্তব্যস্থল পূজ্যপাদ শ্রী লাহিড়ী বাবার বাড়ির উদ্দেশ্যে। পথে বাকিরা সর্ব প্রথমে প্রাতরাশ করার ইচ্ছা প্রকাশ করলো এবং ঘিয়ে ভাজা কচুরি ও আলু ছোলার তরকারি দিয়ে জলযোগ করে গোদলিয়া চৌক থেকে রিকশা নিয়ে রওনা দিলাম। বড় রাস্তায় শ্রী লাহিড়ি বাবার বাড়ির গলির মুখে শ্রী শ্যামাচরণ লাহিড়ী মার্গ নামে এক বিশালকায় সাইন বোর্ড টানানো আছে। রিকশা থেকে নেমে একটু খোঁজ করে সকল ক্রিয়াবানদের জন্য তীর্থ স্বরূপ শ্রী লাহিড়ি বাবার বাড়ির সামনে এসে উপস্থিত হলাম। বিভিন্ন জায়গায় রং ও প্লাস্টার উঠে যাওয়া সাদা রঙের প্রাচীন দোতলা বাড়িটি, মনে হলো রং করে এই বাড়িটির পরিকাঠামোর দুর্বলতা ঢেকে রাখা হয়েছে। প্রায় আট বছর আগে বাড়িটি যেমন দেখেছি ঠিক তেমনটি আছে। বর্তমানে জনসাধারণের জন্য শুধু মাত্র গুরু পূর্ণিমার দিন এই বাড়ির দরজা খোলা থাকে যদিও পুরোহিত মহাশয় রোজ এসে নিত্য পুজো করে যান।

শ্রী লাহিড়ী বাবা এই বাড়ির একতলার বৈঠকখানায় বসে ভক্তদের বিভিন্ন উপদেশ প্রদান করতেন। দেহত্যাগ অবধি যোগিরাজ এই বাড়িতেই বসবাস করতেন। ওঁনার ভক্তরা লক্ষ করেছিলেন যে উঁনি মাঝে মধ্যে আসনে বসে হাত জোড় করে প্রণাম করেন। একবার এক জনৈক ভক্ত সেইসময়ে দ্রুত বাইরে এসে দেখেন যে বারান্দায়, যে স্থানটি ঘরের ভিতর থেকে দৃশ্যমান নয়, সেখানে এক ভক্ত সাষ্টাঙ্গে প্রণাম জানাচ্ছেন এবং যোগিরাজ সেই প্রণামেরই প্রত্যভিবাদন করছেন। নতজানু হয়ে প্রণাম জানালাম পূজ্যপাদ শ্রী লাহিড়ী মহাশয়কে, নিজের ভক্তির ক্ষুদ্রতা অনুভব করে নিজেকেই মনে মনে তিরস্কার করতে লাগলাম। শ্রী লাহিড়ি বাবার জন্য ফুল, মিষ্টি কিনে আনার ইচ্ছে ছিল কিন্তু সেই পরিকল্পনা বাস্তবায়িত হয়ে ওঠেনি। ওঁনার বাড়ির বিপরীতে বাঁধানো জায়গাটিতে বসে কয়েকটা প্রাণায়াম করে উৎসর্গ করলাম পরমারাধ্যকে। আমি ব্যক্তিগতভাবে কোনো আধ্যাত্মিক স্থানে গেলে সেই স্থানে কিছু সময় কাটিয়ে ওখানকার স্পন্দন অনুভব করতে ভালোবাসি, কিন্তু

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

এই ক্ষেত্রে যেহেতু অনেকের সাথে এসেছি এবং তারা আমাদের পরের গন্তব্য স্থলের দিকে কিছু দূর অগ্রসর হয়ে গেছেন তাই আমাকেও প্রাণায়াম ছেড়ে রীতিমতো দৌড়াতে হলো।

শ্রী লাহিড়ী মহাশয়ের বাড়ি থেকে তাঁর পৌত্র স্বর্গীয় সত্যচরন লাহিড়ী মহাশয়ের বাড়ি 'সত্যলোক' যেতে কাশীর আঁকাবাঁকা গলিপথ ধরে প্রায় মিনিট দশেক লাগে । এই এলাকায় মূলত তাঁতিরা বসবাস করেন, এছাড়া কয়েকটা ছোট কারখানাও আছে। আগেকার কাশী ভ্রমণের অভিজ্ঞতার মতন এবারেও দেখলাম যে এখানকার কিছু স্থানীয় ব্যক্তিরা পথ নির্দেশ জিগ্যেসা করলে উত্তর না দিয়ে চলে যান। সত্যলোকে প্রবেশ করে প্রথমেই একটি শিব মন্দিরের ভিতর পূজ্যপাদ শ্রী শ্যামাচরণ লাহিড়ী মহাশয়, তাঁর পুত্র স্বর্গীয় তিনকরি লাহিড়ী মহাশয় ও পৌত্র স্বর্গীয় সত্যচরন লাহিড়ী মহাশয়ের মূর্তি স্থাপন করা আছে। পুরোহিত মহাশয়ের কাছ থেকে জানতে পারি যে এর আগে এই বৃহৎ শিবলিঙ্গটি নিকটবর্তী এক জমিদারের বাড়িতে প্রতিষ্ঠিত ছিল কিন্তু স্বয়ং মহাদেব ওনাকে স্বপ্নাদেশে স্বর্গীয় সত্যচরন লাহিড়ী মহাশয়কে শিবলিঙ্গটি প্রদান করতে বলেন।

সত্যলোকের এক কোনায়ে একটি মন্দিরে শ্রী লাহিড়ী বাবার গুরুদেব পূজ্যপাদ শ্রী বাবাজি মহারাজের মূর্তি স্থাপিত। এই মন্দিরটিতে প্রবেশ করে যে কোনো ব্যক্তিই বিস্ময়াভিভূত হয়ে পড়বে কারণ অনুভব করবে যে সকল ভক্তের জন্য এখানে শ্রী বাবাজি মাহারাজ সশরীরে বিরাজমান। মনে হবে যেন স্বয়ং কৈলাশপতি এখানে কৃপা করে আবির্ভূত হয়েছেন। আমার গতবারের যাত্রার সময়ে এই স্থানে আগমন করে পূজনীয় শ্রী বাবাজি মহারাজের দিব্য মূর্তি দর্শন করে স্তম্ভিত ও ভীত হয়ে ক্ষণিকের জন্য মন্দির ছেড়ে পালিয়ে গিয়েছিলাম। সামান্য ক্রিয়া করে এখানকার দৈব স্পন্দন অনুভব করার চেষ্টা করলাম কিন্তু সময়ের সীমাবদ্ধতার জন্য অধিক মনঃসংযোগ করতে পারলাম না। আজ আমাদের রাত অবধি বিবিধ কর্মসূচি রয়েছে তাই বেশিক্ষণ এখানে সময় কাটাবার সুযোগ নেই। সত্যলোকে শ্রী লাহিড়ী বাবার চিতাভস্ম একটি ছোট সমাধি মন্দিরে সংরক্ষিত রয়েছে। সত্যলোকের ওপর তলার ঘরগুলো শুধু গুরু পূর্ণিমার দিন খোলা থাকে যেখানে শ্রী লাহিড়ী বাবার স্বহস্তে লিখিত ডায়েরি এবং ওঁনার অন্যান্য সামগ্রী ভক্তদের দর্শনের জন্য প্রদর্শন করা হয়।

সত্যলোকের অদূরেই অতি প্রাচীন সিদ্ধপীঠ শ্রী চৌষট্টি মায়ের মন্দির ও চৌষট্টি ঘাট অবস্থিত। পৌরাণিক মতে দেবাদিদেব শিব একবার ৬৪ যোগিনীদের কাশীতে প্রেরণ করেন এবং তাদের কাশী এত প্রিয় লাগে যে তাঁরা এই স্থানে রয়ে গেলেন এবং এই ৬৪ যোগিনি শ্রী চৌষট্টি মা রূপে পুজিতা হন।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

পরবর্তী কালে ১৬ শতাব্দীতে যশোরের রাজা প্রতাপাদিত্য রায় স্বপ্নাদেশ পেয়ে রূপোর নির্মিত শ্রী ভদ্রকালি মায়ের মূর্তি নৌকাযোগে কাশীতে নিয়ে এসে অষ্টধাতু নির্মিত মহিষাসুর মর্দিনী শ্রী চৌষট্টি মায়ের সাথে প্রতিষ্ঠা করে বর্তমান মন্দিরটির স্থাপনা করেন। উনি চৌষট্টি ঘাটটিও বাঁধিয়ে দেন। হোলি ও নবরাত্রিতে অনেক ভক্তের সমাগম হয় এই মন্দিরে।

শ্রী চৌষট্টি মায়ের গর্ভগৃহে এক অদ্ভুত আকর্ষণীয় স্পন্দন বোধ করার পর কয়েকটি প্রাণায়াম করে মাকে অর্পণ করলাম। বর্তমান পুরোহিত মহাশয়ের পূর্বপুরুষেরা বংশ পরম্পরাগত ভাবে ১১ পুরুষ ধরে এখানে মায়ের সেবা করে চলেছেন। মন্দির প্রাঙ্গণেই ভোগ প্রসাদ তৈরির কাজ তদারকি করার সময়ে পুরোহিত মহাশয় এই মন্দিরের ইতিহাস বর্ণনা করতে লাগলেন। সেই সময়ে সহসা এক অনির্বচনীয় আধ্যাত্মিক অবস্থায় প্রবেশ করলাম যার ফলে একদম নড়াচড়া ও কথা বলার অবস্থায় ছিলাম না, শুধু পুরোহিত মহাশয়ের স্বর মৃদু ভাবে কানে প্রবেশ করছিল। সিনেমার পর্দায় দেখার মত অনুভব হতে লাগলো যে বর্তমানে যা ঘটছে সব কিছু পূর্বনির্ধারিত। কিছুটা প্রকৃতিস্থ হওয়ার পর শ্রী চৌষট্টি মায়ের বিপরীতে অবস্থিত শ্রী ভদ্রকালি মায়ের অপরুপা শান্ত মূর্তি দর্শন করে বোধ হল যেন পরমা প্রকৃতি সকলকেই সাদরে আহ্বান জানাচ্ছেন। কবি নজরুল এইরকম অনুভূতি ভাষায় ব্যক্ত করে বলেছেন-

“জ্বলিয়া মরিলি কে সংসার জ্বালায়
তাহারে ডাকিছে মা ‘কোলে আয়, কোলে আয়’
জীবনে শ্রান্ত ওরে ঘুম পাড়াইতে তোরে
কোলে তুলে নেয় মা মরণেরি ছলে।।”

ক্ষুৎপিপাসায় ক্লান্ত অমলদারা গেস্ট হাউসে ফেরত যাবার জন্য বিদায় নিলে আমরা বাকি চারজন মিলে বাঙালি টোলা হাই স্কুলের নিকটবর্তী শ্রী তিলভান্ডেশ্বর শিব মন্দির দর্শনে গেলাম। স্থানীয় মান্যতা অনুসারে এই স্থান ঋষি বিভান্ডকের তপঃস্থলী এবং ওঁনার তপস্যায় তুষ্ট হয়ে আনুমানিক আড়াই হাজার বছর পূর্বে মহাদেব এই স্বয়ম্ভু শিবলিঙ্গ রূপে প্রকট হন। ঋষি বিভান্ডক এখানকার উৎপাদিত তিল দ্বারা মহাদেবের আরাধনা করতেন তাই মহেশ্বর আশীর্বাদ করেন যে প্রত্যহ এই শিবলিঙ্গটি তিল পরিমাণ বৃদ্ধি পাবে। পরবর্তী কালে শিবলিঙ্গটি বৃহৎ আকার ধারণ করলে ভীত কাশীবাসীর প্রার্থনায় সাড়া দিয়ে মহেশ্বর পুনরায় আশীর্বাদ করেন যে এখন থেকে শুধু মাত্র মকর সংক্রান্তির দিন এই শিবলিঙ্গটি তিল পরিমাণ বৃদ্ধি পাবে।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

শ্রী তিলভান্ডেশ্বর মহাদেবের দর্শন করা মাত্র মানবের মুক্তির মার্গ প্রশস্ত হয়ে যায় বলে মান্যতা। এখানে শনিবারে ভক্তরা কালো তিল দ্বারা শিবের অর্চনা করলে শনিদেবের সাড়ে সাতি ও ঢাইয়ার প্রকোপ থেকে মুক্ত হন। কথিত যে মুঘল সম্রাট আওরঙ্গজেবের সৈনিকরা কয়েকবার এই স্বয়ম্ভু শিবলিঙ্গটি ধ্বংস করার প্রচেষ্টা করে কিন্তু শিবলিঙ্গে আঘাত করলে তাঁর থেকে রক্ত ক্ষরণ হতে দেখে প্রত্যেকবার ভীত সৈনিকরা পালিয়ে যান।

বর্তমান মন্দিরটি ১৮ শতাব্দীতে তৈরি এবং গর্ভগৃহটি প্রায় দোতলা বাড়ির উচ্চতায় অবস্থিত। অত্যুজ্জ্বল খয়েরি রঙের ৩.৫ ফুট উচ্চতার ও ৩ ফুট ব্যাসের বিশালকায় শিবলিঙ্গ গর্ভগৃহে দৃষ্টিগোচর হয়। শ্রী তিলভান্ডেশ্বরের প্রকৃত উচ্চতা নিয়ে মতানৈক্য আছে এবং মন্দিরের অধ্যক্ষের একটি বিবৃতি অনুসারে সমতল ভূমি থেকে এই শিবলিঙ্গের উচ্চতা ২২ ফুট এবং নিচে সর্বাধিক ব্যাস ১৭ ফুট, তিন জন ব্যক্তি একত্রিত হলে তবেই শ্রী তিলভান্ডেশ্বরকে জড়িয়ে ধরতে পারা যায়।সমতল ভূমির নিচে শিবলিঙ্গ কতটা গভীরে গেছেন বা তাঁর ব্যাস কতটা তা কারো জানা নেই। শিবলিঙ্গের মসৃণ গাত্রে ছোট খোঁদলগুলো হয়ত তিলভান্ডেশ্বরকে ধ্বংসের প্রচেষ্টার চিহ্ন।

গর্ভগৃহে প্রবেশ করে এক অপার শান্তির তরঙ্গ অনুভব করলাম। এই রকম তরঙ্গ মন্দিরে প্রবেশ মাত্র ওঙ্কারেশ্বরের শ্রী মামলেশ্বর জ্যোতির্লিঙ্গে অনুভব করেছিলাম, কিন্তু তিলভান্ডেশ্বরে অনুভূত তরঙ্গটি খুব প্রশান্তিদায়ক। মন্দিরের আশেপাশে ফুল, মিষ্টি না পাওয়ার জন্য গর্ভগৃহে রাখা গঙ্গা জল দিয়েই আমরা সকলে দেবাদিদেবের পুজো সম্পন্ন করলাম। সশ্রদ্ধ প্রণাম জানিয়ে শিব শম্ভুকে কয়েকটা প্রাণায়াম অর্পণ করতে বিস্ময়ের সাথে অনুভব করলাম যে অত্যন্ত শান্তিপূর্ণ ও প্রশান্তিদায়ক মহাজাগতিক শক্তির তরঙ্গ সহস্রার দিয়ে প্রবেশ করছে। আমরা সকলেই পুনঃ পুনঃ জল অভিষেক ও প্রণাম করতে লাগলাম, মনের সাধ আর মিটছিল না। গর্ভগৃহে প্রায় পনেরো মিনিট কাটিয়ে নাটমন্দির স্থিত অন্যান্য দেব দেবীর দর্শন করে প্রস্থান করলাম। এই মন্দিরে কাশীর একমাত্র আয়াপ্পান মূর্তি স্থাপিত। ফেরার সময় এক অপার্থিব পরিপূর্ণতা অনুভব করলাম। আজ সকালে রুদ্রাভিষেকের প্রসাদ হারিয়ে যাবার পর মনটা বেদনা গ্রস্থ হয়ে ছিল কিন্তু লক্ষ্য করলাম সেই বেদনা এখন আনন্দে রূপান্তরিত হয়েছে। ফেরার পথে চারজনে একত্রে মধ্যাহ্ন ভোজন সেরে নিয়ে গেস্ট হাউসে ফিরে কিছুক্ষণ বিশ্রাম নিলাম।

বেলা তিনটের একটু আগে সত্যপ্রিয়দা ও কাবেরীদির সঙ্গে বেরিয়ে পড়লাম দশাশ্বমেধ ঘাটের পার্শ্ববর্তী অহল্যাবাই ঘাটের উদ্দেশ্যে। আজ আমরা সকলে মিলে গুরুদেবের সঙ্গে গঙ্গায় বজরা ভ্রমণে যাব । গতকাল গঙ্গা আরতি দেখতে যাওয়ার ঢালু গলিপথ দিয়ে পুনরায় এগিয়ে চললাম, এইবার আর গতবারের মত পথ গুলিয়ে গেল না। যাত্রা পথে এক শিশু বাঁশি বিক্রেতা আমাকে তার বাঁশি ক্রয় করতে অনুরোধ করলো। আমি তার কাছ থেকে বাঁশি না কিনে সামান্য কিছু টাকা শিশুটিকে উপহার হিসেবে প্রদান করতে উভয়ই - আনন্দিত বোধ করলাম। অহল্যাবাই ঘাটে পৌঁছে সেখানে উপস্থিত অল্প কয়েকজন ক্রিয়াবান সাথীদের সাথে দেখা হল। অদূরে আমাদের বজরা

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

মন্থর গতিতে গঙ্গা বক্ষ দিয়ে ঘাটের দিকে এগিয়ে আসছে। অহল্যাবাই ঘাটে তখন একটি বড় দক্ষিণ ভারতীয় পুণ্যার্থীর দল গঙ্গায় কোমর জলে নেমে পুজোয় ব্যস্ত। অচিরে আমাদের বজরা ঘাটে এসে দাঁড়ালো। কলকাতায় আমরা গঙ্গায় যেমন লঞ্চ দেখি তার থেকে ঈষৎ ছোট একটি লঞ্চ যাকে স্থানীয় ভাষায় বজরা বলে। লঞ্চের একতলায় বসার ব্যবস্থা থাকলেও খোলা ছাদের ওপর চেয়ার পেতে আমাদের বসার ব্যবস্থা করা হয়েছে। গুরুদেবের সৎসঙ্গের জন্য একটি বিশেষ আসন তৈরি করা হয়েছে। একে একে আমাদের অন্যান্য সাথীরা আগমন করতে লাগলেন, তাদের অনেকের সাথেই কাশিতে পদার্পণ করে এই প্রথমবার সাক্ষাৎ হল।

কিছুক্ষণ পরে গুরুদেব এসে উপস্থিত হলেন। গুরুদেবকে দেখে আমি যৎপরোনাস্তি খুশি হলাম এবং ওঁনার সংস্পর্শের আনন্দ নিতে লাগলাম। বজরা ছাড়ার পূর্বে গুরুদেব একটা চেয়ার নিয়ে আমার সারিতেই সকলের সাথে আসন গ্রহণ করলেন। আমাদের সকলের চেয়ারে লাইফ জ্যাকেট রাখা থাকলেও গুরুদেবের চেয়ারে ছিল না, তাই চুপিসারে আমার লাইফ জ্যাকেটটা গুরুদেবের চেয়ারে রেখে দিতে পেরে বেশ আনন্দ বোধ করলাম। অনেকটা সময় লাগলো সকলের বজরায় সমবেত হতে এবং বিকেল চারটার একটু আগে আমাদের বজরা নড়ে উঠলো।

কাশীতে মোট চুরাশিটা ঘাট আছে এবং একটি ঘাট আরেকটির সাথে সংযুক্ত হওয়ার ফলে সর্বপ্রথম নমো ঘাট থেকে সর্বশেষ অসি ঘাট পর্যন্ত যে কোনো পুণ্যার্থী পায়ে হেঁটে যেতে পারেন। কেন্দ্রীয় সরকারের নমামি গঙ্গে প্রকল্পের দ্বারা কাশীর ঘাটগুলোর সংস্কার করা হয়েছে যার ফলে বর্তমানে ঘাটগুলি অত্যন্ত পরিষ্কার পরিচ্ছন্ন এবং সুন্দর করে রক্ষণাবেক্ষণ করা হয়েছে। অহল্যাবাই ঘাট থেকে আমাদের বজরা ধীর গতিতে এগিয়ে চলেছে অসি ঘাটের দিকে।

বজরা ছাড়ার একটু পরে গুরুবোন ঔন্দ্রি সহ অন্যান্য কয়েকজন ক্রিয়াবান উদাত্ত কণ্ঠে শ্রী বিষ্ণু সহস্রনাম পাঠ করতে শুরু করলেন। ধীর গতিতে মা গঙ্গার শান্ত নীরের পাড় ধরে এগিয়ে চলেছে আমাদের বজরা, বিকেলের স্নিগ্ধ রোদ ঘাটগুলোর হলুদ পাথরে প্রতিবিম্বিত হচ্ছে আর পবিত্র শ্রী বিষ্ণু সহস্রনামের পাঠে মুখরিত হয়ে উঠেছে বজরার বাতাবরণ:

“ওং শুক্লাংবরধরং বিষ্ণুং শশিবর্ণং চতুর্ভুজম ।
প্রসন্নবদনং ধ্যায়েত সর্ববিঘ্নোপশাংতয়ে ॥”

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

শ্রী বিষ্ণু সহস্রনাম পাঠ চলাকালীন এইরকম অপার্থিব পরিবেশের মধ্যে আমার মনটা কিছুক্ষণের জন্য কেমন হারিয়ে গেল, মনে হল আমরা এই মর্ত্যভূমিতে নয়, এই ভূলোকের বাইরে কোন আধ্যাত্মিকতায় পরিপূর্ণ এক স্বর্গীয় প্রদেশে বিচরণ করছি। ঠাকুর শ্রী রামকৃষ্ণদেব তাঁর কাশী যাত্রার সময় দিব্য দৃষ্টিতে দর্শন করেছিলেন যে কাশী বস্তুতই স্বর্ণ দিয়ে তৈরি। এই দর্শনের পর বেশ কিছুদিন ঠাকুর কাশীতে শৌচাদি কর্ম করতেন না। শ্রী বিষ্ণু সহস্রনাম পাঠ সমাপ্তির পর স্বতঃস্ফূর্ত ভাবে ঔন্দ্রি তার মধুর কণ্ঠে রবিন্দ্র সংগীতের কয়েকটি কলি ঘুরিয়ে ফিরিয়ে গাইতে লাগলেন :

“বাজিল কাহার বীণা মধুর স্বরে
আমার নিভৃত নব জীবন-পরে
প্রভাতকমলসম ফুটিল হৃদয় মম
কার দুটি নিরুপম চরণ-তরে॥”

এরপর গুরুভাই শুভংকর তার সুরেলা কণ্ঠে লালন গীতি শুরু করলেন:

“ধরো চরণ ছেড়ো না
নিতাই কাউরে ছেড়ে যাবে না”

স্ত্রোত্র পাঠ ও গানের শেষে আধ্যাত্মিকতায় পরিপূর্ণ এক নিস্তব্ধতা চারিদিকে ছেয়ে গেল আর তার মধ্যে দিয়ে ধীর গতিতে আমাদের বজরা একের পর এক ঘাট পেরিয়ে চলেছে। কাশীর বাসিন্দা গুরুভাই সুদীপ বিভিন্ন ঘাটের বিশদ বর্ণনা মাঝে মধ্যে আমাদের সকলকে দিতে লাগলেন। বজরা থেকেই গঙ্গা তীরে অবস্থিত শ্রী আনন্দময়ী মায়ের আশ্রমের দর্শন করলাম। শ্রী মা এই আশ্রমের বারান্দায় বসে আগত ভক্তদের দর্শন দিতেন ও আশীর্বাদ করতেন। হরিশ্চন্দ্র ঘাটের শ্মশান পেরিয়ে অসি ঘাট থেকে আমাদের বজরা বিপরীত দিকে বাঁক নিয়ে এবার মাঝ গঙ্গা বরাবর দ্রুত গতিতে নমো ঘাটের উদ্দেশ্যে পাড়ি দিল। কাশীক্ষেত্রকে দুটি ভাগে বিভক্ত করা হয়েছে, মণিকর্ণিকা ঘাট থেকে অসি ঘাট অবধি শিব কাশী বলে পরিচিত এবং মণিকর্ণিকা ঘাট থেকে আদি কেশব ঘাট অবধি বিষ্ণু কাশী বলে পরিচিত। যাত্রা পথে পঞ্চগঙ্গা ঘাটে অবস্থিত সুউচ্চ ও বিশালকায় আলমগির মসজিদ দেখে মনটা বিষাদগ্রস্ত হয়ে পড়ল। ইতিহাসে লিপিবদ্ধ যে এই স্থানে পূর্বে সুবিশাল শ্রী বিন্দু মাধব মন্দির অবস্থিত ছিল যেটি ১৬৬৯ সালে ধ্বংস করে এই মসজিদটি নির্মাণ করেন মুঘল সম্রাট আওরঙ্গজেব। ভারতবর্ষের ঐক্যতার অভাব, তদানীন্তন ভারতের সামরিক দুর্বলতা এবং সনাতন ধর্মকে রক্ষ্যার ব্যর্থতার কথা ভাবতে ভাবতে এগিয়ে চললাম নমো ঘাটের দিকে।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

নবনির্মিত নমো ঘাটটি অত্যন্ত রমণীয় এবং এখান থেকে বজরা পুনরায় বিপরীত দিকে বাঁক নিয়ে মা গঙ্গার তীর ধরে মন্থর গতিতে এগিয়ে চলল। সন্ধ্যা প্রায় হয়ে এসেছে, তারই মধ্যে গুরুদেব ক্ষণে ক্ষণেই ধ্যানস্থ হয়ে পড়ছিলেন। আধো আলো আধো অন্ধকারের মধ্যে আমরা মণিকর্ণিকা ঘাটের সামনে এসে উপস্থিত হলাম। স্কন্ধ পুরাণ অনুযায়ী এই স্থানে শ্রী বিষ্ণুকে তাঁর চক্র দিয়ে তৈরি চক্রপুষ্করিণীর তীরে বসে তপস্যা করতে দেখে মহাদেব বিস্ময়ে মাথা দোলানোতে ওঁনার মণিকর্ণিকা নামক কর্ণ ভূষণ এই স্থানে পড়ে যাওয়াতে এই তীর্থের নাম মণিকর্ণিকা। দেবাদিদেবের আশীর্বাদে এই মহাপবিত্র তীর্থে স্নান, জপ, হোম ইত্যাদি পুণ্য কর্ম অনুষ্ঠানের দ্বারা মোক্ষ প্রাপ্তি হয়। এই মহাশ্মশানে চিতার আগুন কখনো নেভে না এবং পনেরোটা চিতা তখনো দাউ দাউ করে মহাশ্মশানের ঘাটে জ্বলছিল। ১৮৬৮ সালে ঠাকুর শ্রী রামকৃষ্ণদেব কাশী ভ্রমণে এসে নৌকা করে কাশীর বিভিন্ন ঘাট দর্শন করেন। মণিকর্ণিকা ঘাটের সম্মুখে এসে সমাধিস্থ হয়ে দর্শন করেছিলেন যে স্বয়ং দেবাদিদেব শিব গুরুগম্ভীর পদক্ষেপে একে একে প্রত্যেকটি চিতায় গিয়ে সন্তর্পণে চিতায় শায়িত জীবের কানে পরম ব্রহ্মের মন্ত্র প্রদান করছেন। চিতার অন্যদিকে দাঁড়িয়ে সর্বশক্তিময়ী শ্রী মহাকালী স্বহস্তে সেই জীবের স্থূল, সূক্ষ্ম ও কারণ দেহের বন্ধন মুক্ত করে দিয়ে তার মুক্তির দ্বার উন্মোচন করে দিচ্ছেন।

শীঘ্রই আমাদের বজরা রাজেন্দ্র প্রসাদ ঘাটে আগমন করে অন্যান্য অনেক নৌকার পাশে এসে নোঙর করলো। কানায় কানায় দর্শনার্থীতে পূর্ণ ঘাটে তখন গঙ্গা আরতি সবে আরম্ভ হয়েছে। বজরাতে বসে আমরা মা গঙ্গার আরতি উপভোগ করতে লাগলাম। গতকাল একবার গঙ্গা আরতি দর্শন করলেও আজকে বজরাতে বসে সকলের সাথে একদম সামনে থেকে বিশদভাবে আরতি দর্শন করতে পেরে খুব ভাল লাগলো। ঘণ্টাধ্বনি ও ভক্তিগীতির সঙ্গে মা গঙ্গার আরতি দেখতে দেখতে সময় কি ভাবে কেটে গেলো বোঝা গেলো না। আরতি সমাপনের প্রাককালে ঘাট থেকে নৌকাগুলো একে একে অহল্যাবাই ঘাটের উদ্দেশ্যে প্রস্থান করতে লাগলো। যথা সময়ে আমাদের বজরাও প্রস্থান করলো, দেখলাম পার্শ্ববর্তী দশাশ্বমেধ ঘাটেও গঙ্গা আরতি অনুষ্ঠিত হচ্ছে। সকলেই প্রফুল্ল চিত্তে জনবহুল অহল্যাবাই ঘাটে প্রত্যাবর্তন করলাম, একটি স্মরণীয় যাত্রার পরিসমাপ্তি ঘটলো। একেবারে নৈশভোজ সেরে গেস্ট হাউস ফেরার পর সারাদিনের ক্লান্তি শরীরকে ঘিরে ধরলো। রাত দশটা নাগাদ তখনো উৎসাহে ভরপুর শুভরঞ্জন ফোন করে মণিকর্ণিকা ঘাটে গিয়ে ধ্যানের প্রস্তাব দিতে সেটি বিনীতভাবে প্রত্যাখ্যান করে ওর শুভ যাত্রার কামনা করে ক্লান্তিতে শুয়ে পড়লাম। আজ মঙ্গল আরতি দর্শনের জন্য প্রায় রাত একটা থেকে আমার দিনের শুরু হয়েছিল এখন তার সমাপ্তি হলো। পরদিন জানতে পেরেছিলাম শুভরঞ্জন মণিকর্ণিকা ঘাটে গিয়ে দেখে অনেক গুরুভাইরা আগে থেকেই সেখানে উপস্থিত, অনেকের কাছে মণিকর্ণিকার উচ্ছ্বসিত প্রশংসা শুনতে পেয়েছিলাম।

শুক্রবার, ১০ই নভেম্বর সকালে আমাদের সকলের গুরুদেবের সঙ্গে সারনাথ দর্শনের পরিকল্পনা ছিল, কিন্তু সেটি বাতিল হয়ে যেতে ক্রিয়া সমাপন করে সত্যপ্রিয়দা, কাবেরীদি ও শুভরঞ্জনের সাথে সকাল আটটা নাগাদ বেরিয়ে পড়লাম কাশীর কোতোয়াল শ্রী কালভৈরব দর্শনের উদ্দেশ্যে।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

প্রাতরাশ না করেই গোদলিয়া চৌক থেকে একটি অটো রিকশা ভাড়া করে নিলাম। অটো রিকশা চালক জানালেন সে নিজেই আমাদের পথ প্রদর্শক হয়ে শ্রী কালভৈরব মন্দির থেকে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামী মঠ ও শ্রী বিন্দু মাধব মন্দির পদব্রজে নিয়ে যাবেন। পৌরাণিক মতে প্রজাপতি ব্রহ্মাকে শাসনের উদ্দেশ্যে মহেশ্বরের ক্রোধ থেকে শ্রী কালভৈরব উদ্ভূত হন। কাল ওঁনার ভয়ে ভীত এবং তিঁনি বিশ্বকে ভরণ করতে সমর্থ তাই ওঁনার নাম শ্রী কালভৈরব। মহাদেব লীলা করে এই রূপ ধারণ করে কাশী ক্ষেত্রে সর্বদাই আধিপত্য করেন এবং এখানে যারা পাপকর্ম করে তাদেরকে শাসন করেন। শ্রী কালভৈরব ভক্তগনের পাপ সমূহ বিনষ্ট করেন ও তাদের মনস্কামনা পূর্ণ করেন। অন্যত্র করা পাপ কাশীতে বিনষ্ট হয় কিন্তু কাশীতে করা পাপের নিদারুণ শাস্তি শ্রী কালভৈরব প্রদান করেন। কাশীক্ষেত্র দর্শন সম্পূর্ণ করতে শ্রী কালভৈরবের দর্শন আবশ্যক।

সকালে বেশ ঠান্ডার মধ্যেই গলিপথ দিয়ে শ্রী কালভৈরব মন্দিরে এসে উপস্থিত হলাম। মন্দিরের বাইরে শ্রী কালভৈরবের বাহন কালো সারমেয় দেখা গেলো। জনশ্রুতি যে শ্রী কালভৈরবের আরতির সময় সারমেয়দের অত্যাশ্চর্য ব্যবহার লক্ষিত হয়। মন্দিরে প্রতিষ্ঠিত শ্রী কালভৈরবের মূর্তির মুখটি রুপো দিয়ে তৈরি এবং ওঁনার গলায় রুপোর তৈরি নর মুণ্ডের মালা। ফুলের মালা ও কাল কাপড়ে ওঁনার দেহটি আচ্ছাদিত । শ্রী কালভৈরব দর্শন করে খুব জাগ্রত বিগ্রহ প্রতীয়মান হলো। সর্ষের তেল, মুড়ি ও হাতে পড়ার জন্য কালো সুতো দিয়ে শ্রী কালভৈরবের পূজা সাঙ্গ করলাম। পুজো চলাকালীন ও মন্দির প্রদক্ষিণকালে গতকাল শ্রী চৌষট্টি মায়ের মন্দিরে হওয়া আধ্যাত্মিক ভাব ধীরে ধীরে আবার হতে শুরু করলো।

হালকা কুয়াশা ভেদ করে শীতের সকালের মিষ্টি রোদ গায়ে মেখে পথ প্রদর্শক অটো চালককে অনুসরণ করতে করতে সরু গলিপথ দিয়ে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামী মঠের দিকে এগিয়ে চললাম। যত অগ্রসর হচ্ছি আমার ভাব ধীরে ধীরে তত বেড়ে চলেছে। মনে হতে লাগলো এই গলিপথগুলো আমার খুব চেনা, স্থূল বা সূক্ষ্ম শরীরে পূর্বে কখনো এখানে এসেছি যদিও আমার পূর্বের দুইবার কাশী যাত্রায় একবারও আজকের তীর্থগুলো দর্শন করতে আসা হয়নি। মাঝ রাস্তায় একটি বিশালকায় কালো গাভী আমাদের দিকে মুখ করে পথ আটকে বসে ছিল। কাবেরীদি আর আমি বেশ সন্ত্রস্ত হয়েই কোনোমতে গাভীটিকে পার করে এলাম।

শ্রী কালভৈরবের মন্দির থেকে প্রায় বারো মিনিটের হাঁটা পথে পঞ্চগঙ্গা ঘাটের সন্নিকটে কাশীর সচল শিব শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির মঠ অবস্থিত। মুখ্য দ্বার দিয়ে প্রবেশ করে ডানদিকে এক বিশালকায় হলঘরের মাঝখানে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির দ্বারা পূজিত বৃহৎ কালো রঙের শিবলিঙ্গটি অবস্থিত। জনশ্রুতি যে এই শিবলিঙ্গটি শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজি গঙ্গা বক্ষ থেকে স্বহস্তে নিয়ে এসেছেন এবং নিত্য এই বৃহৎ শিবলিঙ্গটিকে পঞ্চ গঙ্গা ঘাটে নিয়ে গিয়ে স্নান করিয়ে আনতেন।হলঘরের ডানদিকে শ্রী বজরংবলির মূর্তি আর বাঁদিকে আদি শক্তি শ্রী মঙ্গলা গৌরির মূর্তি আছে।মায়ের মূর্তির বিপরীত দিকে একটি নিতান্তই সরু পথ নিচে নেমে গেছে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীর সাধন গুহায়।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

গুহার প্রবেশ দ্বারের সম্মুখে কালো পাথরের তৈরি প্রায় তিন ফুট লম্বা শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির মূর্তি প্রতিষ্ঠিত আছে। এই পঞ্চগঙ্গা আশ্রমে ঠাকুর শ্রী রামকৃষ্ণদেবের সাথে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির দেখা হয়েছিল। স্বামীজির মানস কন্যা শ্রী শঙ্করী মাতাজি সেই স্থানে উপস্থিত ছিলেন। আকারে ইঙ্গিতে মৌন শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির সঙ্গে কথোপকথন হয় ঠাকুর শ্রী রামকৃষ্ণদেবের। ঠাকুর স্বামীজির কাছে জানতে চান ভগবান এক না অনেক। প্রত্যুত্তরে স্বামীজি জানান যে সমাধি অবস্থায় ভগবান এক, অন্যথায় তিনি অনেক। কথোপকথনের শেষে ঠাকুর সমাধিস্থ হয়ে পড়েন। পূজ্যপাদ শ্রী শ্যামাচরণ লাহিড়ী মহাশয়ের সাথে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির সাক্ষাৎ হয়েছিলো, তবে সাক্ষাতের স্থানটি পঞ্চগঙ্গা ঘাটের নিকটস্থ এই মঠে না পঞ্চগঙ্গা ঘাটে তা নিয়ে মতান্তর আছে। শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজি শ্রী লাহিড়ী বাবাকে দর্শন করে সর্ব সম্মুখে যোগিরাজকে সম্মান প্রদান করেছিলেন তাঁর মৌনতা ভঙ্গ করে। এক জনৈক ভক্ত এই বিষয়ে প্রশ্ন করলে তিঁনি উত্তর দেন যে শ্রী লাহিড়ী মহাশয় গৃহাশ্রমে থেকেই আত্ম উপলব্ধির যে পূর্ণতা প্রাপ্ত করেছেন সেই আত্ম উপলব্ধি প্রাপ্তির জন্য তিঁনি কৌপীন পর্যন্ত ত্যাগ করেছেন।

আমি মন্দিরটি দর্শন করার সময়ে শ্রী বজরংবলির ভক্ত শুভরঞ্জন ওঁনার মূর্তির সামনে ধ্যানস্থ হয়ে বসলো। মন্দিরটি পরিদর্শন করে স্বামীজির পূজিত শিবলিঙ্গটির সামনে বসে গোটা দুয়েক প্রাণায়াম করতেই তীব্র বেগে আগত এক শক্তিশালী মহাজাগতিক শক্তির তরঙ্গ অনুভব করলাম। তরঙ্গের বেগে স্তম্ভিত হয়ে অল্প কয়েকটা প্রাণায়াম করেই উঠে পড়লাম। মনে একটি অনুশোচনা রয়ে গেলো যে এই তীর্থে দীর্ঘ দিবস অতিবাহিত করে সাধনা করতে পারলাম না। মন্দিরে শিবলিঙ্গের অভিষেক করার জন্য পঞ্চগঙ্গা ঘাট থেকে জল নিয়ে আসতে হয় তাই শুধু প্রণাম করেই বাবার পুজো সারলাম। শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির ফটো ও জীবনী কিনে প্রস্থান করতে গিয়ে দেখি শুভরঞ্জন তখনও ধ্যানস্থ।

শ্রী তৈলঙ্গ স্বামী মঠে কিছুক্ষণ অপেক্ষা করে মঠের নিকটস্থ শ্রী বিন্দু মাধব মন্দিরে এলাম। পুরাকালে ঋষি অগ্নিবিন্দু পঞ্চগঙ্গা ঘাটে কঠোর তপস্যা করে শ্রী বিষ্ণুর কাছ থেকে আশীর্বাদ প্রাপ্ত হন যে সকল মোক্ষাভিলাষী ভক্তদের হিতের জন্য শ্রী বিষ্ণু এই স্থানে ঋষি অগ্নিবিন্দুর নামে সর্বদা অবস্থান করবেন। সেই থেকে শ্রী বিষ্ণু এই স্থানে শ্রী বিন্দু মাধব নামে অবস্থান করছেন, প্রলয়কালেও এই স্থান তিনি পরিত্যাগ করবেন না । সর্বপ্রকার পাপ বিনাশক এই তীর্থের ওপর নাম বিন্দুতীর্থ।

শ্রী বিন্দু মাধব কাশীর ক্ষেত্র দেবতা এবং কাশী তীর্থ দর্শন সম্পূর্ণ করতে ওঁনার দর্শন আবশ্যক। পঞ্চগঙ্গা ঘাটে স্নান করে শ্রী বিন্দু মাধবের আরাধনা করলে শ্রী বিষ্ণুর আশীর্বাদে নির্বাণ লাভ হয় এবং গৃহস্থদের গৃহে মা লক্ষ্মী অচঞ্চলা থাকেন। কার্তিক মাসে এই তীর্থে স্নান ও পূজার বিশেষ মাহাত্ম্য। এই সময় পঞ্চনদে স্নান ও শ্রী বিন্দু মাধবের পুজান্তে ভক্তরা মহাপাপ থেকেও মুক্ত হয়ে মোক্ষ লাভের আশীর্বাদ প্রাপ্ত হন।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

এই মন্দির ইতিহাসে পঞ্চম শতাব্দী থেকে পাওয়া যায়। বেশ কয়েকবার এই মন্দির ধ্বংস ও পুনঃপ্রতিষ্ঠা করা হয়েছে। ফরাসি রত্নপাথর ব্যবসায়ী ও পরিব্রাজক জিন-ব্যাপটিস্ট ট্যাভার্নিয়ার ১৬৬০ থেকে ১৬৬৫ সালের মধ্যে কাশী ভ্রমণে এসে শ্রী বিন্দু মাধব মন্দিরের ভূয়সী প্রশংসা করে পুরীর শ্রী জগন্নাথ মন্দিরের সাথে এই মন্দিরের তুলনা করেন। ওনার বর্ণনায় শ্রী বিন্দু মাধবের এক প্রাসাদোপম মন্দির প্রতিষ্ঠিত ছিল যার চার দিকে স্বস্তিক চিহ্নের ন্যায় চার ভুজা ও মিনার ছিল এবং গর্ভগৃহের বৃহৎ গম্বুজের নিচে মণি, মানিক্যর মালা পরিহিত প্রায় ছয় ফুটের শালিগ্রাম শীলার তৈরি বিগ্রহ প্রতিষ্ঠিত ছিল। কথিত যে গঙ্গার তট থেকে সেই বিশালকায় প্রাচীন মন্দিরের উচ্চতা ছিল ১৭৫ ফুট । মাতা মঙ্গলা গৌরির অর্চনাও হতো এই মন্দিরে । মন্দিরের একতলায় বেদজ্ঞ ব্রাহ্মণরা বেদ শিক্ষা প্রদান করতেন। শ্রী গোস্বামী তুলসীদাসজি এই মন্দিরটি দর্শন করে বিনয় পত্রিকা গ্রন্থে ব্রজ ভাষায় শ্রী বিন্দু মাধবের স্তব রচনা করে বলেন:

> “অমল মরকত শ্যাম, কাম শতকোটি ছবি, পীতপট তড়িৎ ইভ জলদনীল।
> অরুণ শতপত্র লোচন, বিলোকনি চারু, প্রণতজন- সুখধ, করুণার্দ্রশীল।।”

ইতিহাসের পাতায় লিপিবদ্ধ যে ১৬৬৯ সালে কাশী বিশ্বনাথ মন্দির ধ্বংসের প্রায় তিন মাস পরে মুঘল সম্রাট আওরঙ্গজেবের নির্দেশে এই মন্দিরটি সম্পূর্ণ ধ্বংস করে এই স্থানে সুবিশাল আলমগির মসজিদ নির্মাণ করা হয় যার উচ্চতা গঙ্গার তট থেকে ৯০ ফুট। পরবর্তীকালে ১৬৭২ সালে ছত্রপতি শিবাজী মহারাজ বর্তমান মন্দিরটি আলমগির মসজিদের পার্শ্ববর্তী স্থানে নির্মাণ করান। মহারাষ্ট্রের এক পুরোহিত মহাশয় প্রায় ৭ পুরুষ ধরে শ্রী বিন্দু মাধব মন্দিরে সেবা করে চলেছেন ।

অত্যন্ত সাধারণ একটি বসত বাড়িতে বর্তমানে এই মন্দিরটি অবস্থিত। পূর্বের ঐতিহ্যশালী মন্দিরের সঙ্গে বর্তমান মন্দিরটির কোনো তুলনা হয় না। শালিগ্রাম শীলা দিয়ে তৈরি প্রায় তিন ফুট উচ্চতার অপূর্ব সুন্দর মূর্তিটি। ওঁ নমঃ ভগবতে বাসুদেবায় মন্ত্রের দ্বারা প্রণাম করে গর্ভগৃহের ভিতর পুজো সমাপনের পর পুরোহিত মহাশয়ের প্রদান করা শ্রীখণ্ড প্রসাদ গ্রহণ করলাম। গর্ভগৃহের বাইরে রাখা প্রদীপ দিয়ে কাবেরীদি ও আমি শ্রী বিন্দু মাধবের আরতি করলাম। গর্ভগৃহের ডান দিকে একটি ছোট প্রকোষ্ঠের মধ্যে তামা দিয়ে মোড়া এক অত্যন্ত জাগ্রত পঞ্চনদেশ্বর নামক শিবলিঙ্গ অবস্থিত। এখানে প্রবেশ করে আমার পূর্বের আধ্যাত্মিক ভাব হঠাৎ করে অনেকটা তীব্র গেলো। সত্যপ্রিয়দা ও কাবেরীদি শিবলিঙ্গের জলাভিষেক সমাপন করার পর মন্দিরে রাখা গঙ্গা জল দিয়ে শিবলিঙ্গের অভিষেক করে কোনো মতে মন্দিরের সরু বারান্দায় এসে শুভরঞ্জনের পাশে ধ্যানে বসে গেলাম। অনুভব হল যে ভগবানের স্থূল মূর্তি ধ্বংস হয়ে গেলেও অবিনাশী পরমাত্মার সূক্ষ্ম রূপ তীর্থ ক্ষেত্রে অনন্তকাল ধরে বর্তমান থাকেন। সত্যপ্রিয়দা ও কাবেরীদি মাটিতে বসতে পারেন না বলে আমাদের দুজনের ধ্যান সমাপনের অপেক্ষা করতে লাগলেন।

পঞ্চগঙ্গা ঘাট থেকে শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজি মঠের শিবলিঙ্গটিকে জলাভিষেক করার জন্য বাকি তিন জন সাথীকে শ্রী বিন্দু মাধব মন্দিরের প্রাঙ্গণে অপেক্ষা করিয়ে আমি একলাই ঘাটের উদ্দেশ্যে প্রস্থান করলাম। আধ্যাত্মিক ঐতিহ্যে পূর্ণ এই পঞ্চগঙ্গা ঘাট।অতি প্রাচীন কালে ভগবান -

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

আদিত্যদেব এই স্থানে মহাদেব ও শ্রী মঙ্গলা গৌরির উগ্র তপস্যাচরণ করেছিলেন। তপস্যারত আদিত্যদেবের শরীরের কিরণ থেকে নির্গত স্বেদ কিরণা নাম্নী এক পবিত্র নদী রূপে প্রবাহিত হতে শুরু করে। পরবর্তীকালে ঋষি বেদশিরার তপস্বিনী কন্যা ধূতপাপা ধর্মরাজের শাপে এই স্থানে নদী রূপে রূপান্তরিত হন। এই স্থানে ভাগীরথী, যমুনা, সরস্বতী নদীত্রয় এসে কিরণা ও ধূতপাপার সাথে সম্মিলিত হয়ে পরম পবিত্র পঞ্চনদ বা পঞ্চগঙ্গা তীর্থ নামে প্রসিদ্ধ হয়। মহাপাপ বিধ্বংসকারী এই পঞ্চনদীর সঙ্গমে স্নান মাত্রই জীব মোক্ষ প্রাপ্তির যোগ্যতা লাভ করে। চতুর্দশ শতকে স্বামী রামানান্দ এই তীর্থে আশ্রম তৈরি করে থাকাকালীন ওঁনার শিষ্য শ্রী কবীর দাস ও শ্রী রবিদাসকে আধ্যাত্মিক শিক্ষা প্রদান করতেন। শ্রী আদি শংকরাচার্য ও শ্রী গুরু নানক দেবজিও এই পঞ্চগঙ্গা তীর্থে এসে সাধনা করে গেছেন। পঞ্চগঙ্গা ঘাট ছিল কাশীর সচল শিব শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজির লীলা ক্ষেত্র। কখনো তিনি এই ঘাটের গঙ্গা বক্ষে ডুব দিয়ে দুঘণ্টা পর পুনরায় আবির্ভূত হতেন, কখনো বা পঞ্চগঙ্গা ঘাটের গঙ্গায় ডুব দিয়ে পর মুহূর্তে মণিকর্ণিকা ঘাটের সম্মুখে গঙ্গায় উদয় হতেন। এই সময়ে ওঁনার ভক্তরা পঞ্চগঙ্গা ঘাট থেকে দৌড়ে বিভিন্ন ঘাট পেরিয়ে মণিকর্ণিকা ঘাটে পৌঁছতেন। শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজি যোগবলে দেহত্যাগের পর ওঁনার ইচ্ছে অনুযায়ী ওঁনার স্থূল দেহটি একটি তোরঙ্গের ভিতর বন্ধ করে নৌকাযোগে আসি ঘাট থেকে বরুনা অবধি পরিক্রমা করিয়ে পঞ্চগঙ্গা ঘাটের বিপরীতে স্বামীজির দ্বারা নির্দিষ্ট একটি স্থানে গঙ্গায় বিসর্জন করা হয়।

মন্দির থেকে প্রায় পঞ্চাশ ফুট নিচে পঞ্চগঙ্গা ঘাটটি অবস্থিত। উঁচু উঁচু লাল পাথরের সিঁড়ি এঁকেবেঁকে ঘাটে নেমে গেছে। ঘাটে পূর্ব পুরুষদের আলো দিয়ে পথ প্রদর্শনের জন্য বাঁশের মাথায় একটি করে আকাশ প্রদীপ বাধা আছে। এই রকম অসংখ্য আকাশ প্রদীপ এই ঘাটে বর্তমান। ঘাট থেকে অভিষেকের জন্য জল সংগ্রহ করে দেখলাম কাবেরীদিও ঘাটে নেমে এসেছেন।

পাড় থেকেই আমরা এই পুণ্য তীর্থের জল নিজেদের গায়ে, মাথায় ছিটিয়ে নিলাম কারণ ঘাট থেকে মাত্র দুটো সিঁড়ি নিচেই বুক সমান জলে পুণ্যার্থীদের স্নান করতে দেখা যাচ্ছে, তাছাড়া মা গঙ্গা এখানে বেশ খরস্রোতা। শ্রী তৈলঙ্গ স্বামীজি মঠে পুনরায় প্রবেশ করে ভক্তি ও শ্রদ্ধার সঙ্গে সত্যপ্রিয়দা, কাবেরীদি ও আমি পঞ্চগঙ্গা ঘাট থেকে নিয়ে আসা গঙ্গা জল দিয়ে শিব শম্ভুর জলাভিষেক করলাম। কাশীর সচল শিবের আরাধ্য শিবলিঙ্গটিকে তীর্থের জল দিয়ে অভিষেকে করতে পেরে বেশ সন্তুষ্টি হলো। সেই সময়ে শুভরঞ্জন আত্মচিন্তায় বিভোর হয়ে মঠের গেটে দাঁড়িয়ে ছিল, আমরা সকলে মিলে একাধিকবার ডাকতেও সাড়া দিলো না। ফেরার পথে দেখি সেই বিশালকায় কালো গাভীটি দিক পরিবর্তন করে আমাদের দিকে মুখ করে বসে আছে। ফেরার সময়ে মনে হল যে ঈশ্বরের ইচ্ছেতে ঘটনাচক্রে সত্যপ্রিয়দা, কাবেরীদি ও শুভরঞ্জনের সাথে একত্রে কাশীর তীর্থগুলো দর্শন করা হল।

আজ সারনাথ যাত্রার পরিকল্পনা বাতিল হওয়ার পর গুরুদেবের সঙ্গে সৎসঙ্গের পরিকল্পনা করা হয়েছিল, কিন্তু সেই অনুষ্ঠানটিও বাতিল হয়ে গেল। কাশীতে এসে গুরুদেবের সাথে তীর্থ -

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

দর্শনের পর্যাপ্ত সুযোগ না পাওয়ার জন্য অনেকের মতো আমিও একপ্রকার বিমর্ষ হয়ে গেস্ট হাউসে ফিরে ঘুমিয়ে পড়লাম। বিকালে সত্যপ্রিয়দা, কাবেরীদি ও শুভরঞ্জনের সঙ্গে শ্রী সংকট মোচন মন্দিরের উদ্দেশ্য বেরোবার সময় বর্ষীয়ান গুরুভাই কুশলদার সাথে দেখা হতে উনি জানালেন যে গুরুদেবকে দর্শন করতে উনি আদেশ প্যালেস হোটেলে যাচ্ছেন। আমরা সকলে অত্যন্ত উৎফুল্ল চিত্তে ওনার সাথে গিয়ে দেখলাম গুরুদেব সেই সময় বিশ্রাম নিচ্ছেন, ওনার ঘর বন্ধ। প্রায় মিনিট দশেক পরে শ্রী সংকট মোচন মন্দির দর্শনের উদ্দেশ্য রওনা দেবো কিনা ভাবছি এমন সময় গুরুদেব এসে আমাদের দর্শন দিলেন। উনি জানালেন যে একটু পরে শ্রী কাশী বিশ্বনাথ দর্শনের জন্য বেরোবেন। এ যেন মেঘ না চাইতে জল! আনন্দে কম্পিত কণ্ঠে শ্রদ্ধেয় গুরুদেবকে জিজ্ঞাসা করলাম আমরাও ওনার সাথে শ্রী বিশ্বনাথ দর্শনে যেতে পারি কিনা। ‘অবশ্যই’ - এই উত্তর দিয়ে উনি তৈরি হতে চলে গেলেন। কাশীতে পদার্পণ করে অনুভব করেছি পরমেশ্বর চোখের অলক্ষ্যে থেকে অদৃশ্য ভাবে সর্বদাই তার করুণা দৃষ্টিতে নজর রাখেন, মনের ছোট ছোট ইচ্ছেগুলো বারংবার অলৌকিক ভাবে পূর্ণ হতে দেখেছি।

গুরুদেবের ঘরের সামনে আরেক ক্রিয়াবানের ঘরে বসে সামান্য ক্রিয়া করে বেরিয়ে পড়লাম । আমরা সাধারণত গুরুদেবকে ধীর পদক্ষেপে চলতে দেখতে অভ্যস্ত কিন্তু আজ উনি কোনো অজ্ঞাত কারণে অত্যন্ত দ্রুত গতিতে এগিয়ে চলেছেন শ্রী কাশী বিশ্বনাথ মন্দিরের উদ্দেশ্যে। সন্ধ্যার ভিড়ের মধ্যে আমি বারবার পিছিয়ে পড়ার জন্য দৌড়ে ওনার কাছে পৌঁছাতে হচ্ছিলো। সন্ধ্যা ছটা বেজে গেছে তাই আজ গর্ভগৃহের বাইরে থেকেই শ্রী বিশ্বনাথের পুজো করতে হবে। শ্রী কাশী বিশ্বনাথের গর্ভগৃহের বাইরে দাঁড়িয়ে ভিড় ও ঠেলাঠেলির মধ্যেই গুরুদেবকে মুহূর্তের মধ্যে এক বোধাতীত নিশ্চল স্থিরত্বে প্রবেশ করে পুজো অর্পণ করতে দেখে বাকরুদ্ধ হয়ে গেলাম। মনে হলো যেন সগুণ ব্রহ্ম তার নিজের নির্গুণ ব্রহ্ম রূপের উপাসনা করছেন। এই সময় আমার এক অব্যক্ত আধ্যাত্মিক অনুভূতি হতে লাগলো। দেবতুল্য গুরুদেবের সাথে মন্দিরে গিয়ে দুধ, বিল্বপত্র দিয়ে শ্রী বিশ্বনাথের পুজো করতে পেরে নিজেকে অত্যন্ত ভাগ্যবান বোধ করলাম।

আজ ধনতেরাস, কিন্তু শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের মন্দিরে লক্ষাধিক ভক্তের ভিড়, তাই শ্রী বিশ্বনাথের মন্দির চত্বরে অবস্থিত শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের মূর্তিতে পুজোর জন্য মিষ্টি কিনেছিলাম। খুব সুন্দর করে শ্রী অন্নপূর্ণা মাকে আজ এখানে সাজানো হয়েছে। ভিড়ের মধ্যে লাইন দিয়ে মায়ের পুজো দেবার সময় দেখলাম গুরুদেব ও অন্যান্য ক্রিয়াবান সাথীরা মন্দির থেকে প্রস্থান করছেন। আমার পুজো সমাপন করে দৌড়ে প্রস্থানের গেটে পৌঁছে গুরুদেবকে বা অন্য ক্রিয়াবানদের করিডরের বিশাল প্রাঙ্গণে কোথাও দেখতে পেলাম না। মনে হলো গুরুদেবকে কাছে পেয়েও আবার হারিয়ে ফেললাম। কোথায় গেলে গুরুদেবকে খুঁজে পাবো ভাবতে ভাবতে কিংকর্তব্যবিমূঢ় হয়ে মন্দির চত্বরের একপাশে বেশ কিছুক্ষণের জন্য দাঁড়িয়ে রইলাম। হঠাৎ চমকপ্রদ ভাবে প্রস্থানের গেট দিয়ে অত্যন্ত দ্রুত গতিতে গুরুদেব অন্যান্য গুরুভাইদের সঙ্গে মন্দির প্রাঙ্গণে পুনরায় প্রবেশ করলেন। দৌড়ে গেলাম গুরুদেবের কাছে। আরো একবার কাশীতে থাকাকালীন অনুভব করলাম পরমেশ্বর সকলের ওপর সর্বদা নজর রাখেন।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

শ্রী কাশী বিশ্বনাথ মন্দির থেকে বেরিয়ে গুরুদেব জানালেন যে উনি শ্রী তিলভান্ডেশ্বরের মন্দির দর্শনে যাবেন। গতকাল একবার এই মন্দির দর্শন করেছিলাম কিন্তু আজ পুনরায় গুরুদেবের সাথে শ্রী তিলভান্ডেশ্বরকে দর্শন করতে যাবো ভেবে পুলকিত হয়ে উঠলাম। গোদলিয়া চৌকে এসে সত্যপ্রিয়দা ও কাবেরীদি গুরুদেবের কাছ থেকে বিদায় নিয়ে গেস্ট হাউসে ফিরে যাবার জন্য প্রস্থান করলেন। 'সাবধানে যেও সত্যপ্রিয়' বলে গুরুদেব ওনাদের যাত্রা পথের দিকে তাকিয়ে রইলেন। গেস্ট হাউসে ফিরে জানতে পেরেছিলাম যে একটু দূরে গিয়েই অস্বাভাবিক ভিড় ও ঠেলাঠেলির মধ্যে কাবেরীদি ছিটকে পড়ে গিয়েছিলেন মাটিতে, করুণানিদান গুরুদেবের আশীর্বাদে উনি গুরুতর কোনো চোট পাননি। শুভরঞ্জনও শ্রী সংকটমোচন বজরংবলির মন্দিরের উদ্দেশ্যে প্রস্থান করলো। আজকে ওর ওই মন্দিরে বসে দীর্ঘ সময় ধরে পাঠ ও ধ্যানের পরিকল্পনা আছে। আমরা বাকিরা সাইকেল রিকশা করে শ্রী তিলভান্ডেশ্বরের উদ্দেশ্যে রওনা দিলাম।

শ্রী তিলভান্ডেশ্বরকে তখন চন্দন দিয়ে সাজান হয়েছে তাই গর্ভগৃহে প্রবেশ করা গেল না। পুরোহিত মহাশয় আমাদের আনা ফুল ও মালা অর্পণ করে দিলেন। শ্রী গুরুদেব মন্দিরের এক কোনায় দাঁড়িয়ে কিছুক্ষণের জন্য ধ্যানমগ্ন হয়ে পড়ছিলেন দেখে আমরা ওনার সাধনার ব্যাঘাত করলাম না। পরে গুরুদেবের সাথে নাট মন্দিরে অবস্থিত অন্যান্য দেব দেবীর মূর্তিগুলোর অর্চনা করে শ্রী তিলভান্ডেশ্বরের মন্দির থেকে বিদায় নিলাম। ফেরার সময় আমার মনে হল এই মুহূর্তে যদিও গুরুদেবের সাথে একযোগে পরম পবিত্র তীর্থ দর্শন করছি কিন্তু আধ্যাত্মিক ভাবে আমি তুচ্ছ হওয়ার কারণে দেহত্যাগের পর গুরুদেবের থেকে আলাদা হয়ে যাব। আমার শঙ্কা শুনে করুণাময় গুরুদেব স্নেহপূর্ণ কণ্ঠে উত্তর দিলেন "কে বলেছে আমরা আলাদা জায়গায় যাবো"।

গুরুদেবকে গোদলিয়া চৌকের রিকশায় তুলে দিয়ে আমি একলাই বেরিয়ে পড়লাম শ্রী সংকট মোচন হনুমান মন্দিরের উদ্দেশ্যে। আমি তীর্থ যাত্রী শুনে অটো চালক স্থানীয় যাত্রীদের আপত্তি উপেক্ষা করে যাত্রাপথ পরিবর্তন করে আমাকে মন্দিরের একদম কাছে নামিয়ে দিলেন। গোস্বামী তুলসীদাসজি ১৬ শতাব্দীর প্রথমার্ধে অসি নদীর তীরে যে স্থানে শ্রী বজরংবলির দর্শন প্রাপ্ত হন সেই স্থানে শ্রী বজরংবলির এই স্বয়ম্ভু মূর্তিটি প্রকটিত হয়। শ্রী বজরংবলির মূর্তিটি মনোরম ও অত্যন্ত জাগ্রত দেখতে। বর্তমান মন্দিরটি ২০ শতাব্দীতে বেনারস হিন্দু ইউনিভার্সিটির প্রতিষ্ঠাতা পণ্ডিত মদনমোহন মালব্যের দ্বারা নির্মিত। মন্দির সংলগ্ন বিশাল জায়গা নিয়ে গাছ গাছালির জঙ্গল শ্রী গোস্বামী তুলসীদাসজির সময় থেকে অবস্থিত। প্রতি বছর এপ্রিল মাসে সংকট মোচন সঙ্গীত সমারোহ অনুষ্ঠিত হয় এই মন্দির প্রাঙ্গণে যেখানে দেশ, বিদেশ থেকে উচ্চাঙ্গ সংগীতের শিল্পীরা অংশগ্রহণ করেন। আমার বিগত কাশী দর্শনের সময় এই মন্দিরে এসে বিপুল সংখ্যক হনুমানের সম্মুখীন হয়েছিলাম। তাই এই বার বেশ ভীত হয়ে মন্দিরে প্রবেশ করলাম কিন্তু হনুমানের দেখা না পেয়ে জানতে পারলাম যে রাত্রে তারা অন্যত্র চলে যায় । মন্দিরের মধ্যে থেকে এখানকার বিখ্যাত লাড্ডু সংগ্রহ করে পুজো দিলাম।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

এখানে কোনো পুরোহিত মহাশয় পুজো করিয়ে দেন না, ভক্তদের নিজেদেরকেই শ্রী বজরংবলির রুপোর তৈরি পায়ের আকৃতির ওপর পুজো করতে হয়। আগেরবার আমি গর্ভগৃহের সামনে থেকে দর্শন করতে পারলেও এইবার দেখলাম গর্ভগৃহের সামনে আর যেতে দিচ্ছে না। এই মন্দির চত্বরে অজস্র ভক্ত নিজেদের মতন করে কীর্তন, ধ্যান, হনুমান চালিসা পাঠ করছেন। মন্দিরের সামনে একটি বৃহৎ গাছের তলায় আরো অনেক ভক্তদের সাথে বসে একটু সাধনা করলাম। স্থান মাহাত্ম্যের গুনে অতীব তীব্র কীর্তনের আওয়াজ ধীরে ধীরে আর কানে প্রবেশ করল না, বেশ ভালো লাগলো সাধনা করে। এরপর মন্দিরের সুবিশাল প্রাঙ্গণ কিছুটা ঘুরে দর্শন করবার সময় শুভরঞ্জনকে খুঁজতে লাগলাম।

রাত হয়ে গেছে, তাই শুভরঞ্জনকে খুঁজে না পেয়ে শ্রী সংকট মোচন মন্দিরে আর বেশি সময় না কাটিয়ে বেরিয়ে পড়লাম নিকটবর্তী শ্রী দুর্গা মন্দিরে উদ্দেশ্যে। দেবী ভাগবত পুরাণে এই স্বয়ম্ভু শ্রী দুর্গা মায়ের বিবরণ রয়েছে। কাশী নরেশের প্রার্থনায় দেবী দুর্গা ওনার রক্ষার্থে প্রকটিত হন এবং এই স্থানে স্বয়ম্ভু দুর্গা রূপে অবস্থান করতে থাকেন। নাটোরের রানি ভবানী ১৭৬০ সালে এই ভব্য মন্দিরটি তৈরি করেন। লাল রঙের সুউচ্চ মন্দিরটির গাত্রে দৃষ্টিনন্দন কারুকার্য রয়েছে । মন্দির প্রাঙ্গণে অন্যান্য দেব দেবীর কয়েকটি ছোট মন্দির রয়েছে। মন্দিরের পাশে পবিত্র দুর্গা কুণ্ড রয়েছে যার সাথে পূর্বে গঙ্গার সংযোগ ছিল। মন্দিরের বাইরে ধনতেরাসের মেলা বসেছে এবং গৃহ বধূরা বিভিন্ন পণ্য কিনতে ব্যস্ত। মন্দিরের প্রবেশ দ্বারের কাছে আসতে নিজের অজান্তে এক আধ্যাত্মিক ভাব ঘিরে ধরলো। গর্ভগৃহে স্বয়ম্ভু শ্রী দুর্গা মায়ের শুধু লাল পাথরের মুখটা দেখা যায়। শ্রী দুর্গা মাকে দর্শন করলে অনুভব হয় যে মা অত্যন্ত জাগ্রত। সেই সময় মন্দিরে আরতি হচ্ছিল এবং তার মধ্যেই পুরোহিত মহাশয় আমাকে ডেকে মায়ের পুজো করিয়ে দিলেন। সারিবদ্ধ হয়ে ভক্তবৃন্দ তখন আরতির সাথে উচ্চ কণ্ঠে শ্রী শ্রী চণ্ডী সুর করে পাঠ করছেন:

“ইয়া দেবী সর্বভূতেষু মাতৃরূপেণ সংস্থিতা।
নমস্তস্যৈ নমস্তস্যৈ নমস্তস্যৈ নমো নমঃ।।”

সকলের সাথে আমিও কণ্ঠ মিলিয়ে গাইতে লাগলাম। আরতি সমাপনের পর আমার ভাবটা কোনোরকম সাধনা না করেই বেশ তীব্র হয়ে উঠলো। মন্দিরের দালানে কিছুক্ষণ শূন্য মনে চুপ করে বসে থাকতেই ভালো লাগছিলো। মনে হলো আমাদের জগতটা অনেকগুলো স্তর দিয়ে তৈরি এবং সেই মুহূর্তে সাময়িক কালের জন্য আমি একদম বাইরের স্তরটা স্বতঃস্ফূর্ত ভাবে ভেদ করে একটু ভিতরে প্রবেশ করেছি। দৃষ্টিটাও সামান্য ঝাপসা হয়ে আসছিল। জগতে যে অনেক কিছুই পূর্বনির্ধারিত সেটা শ্রী চৌষট্টি মাতার মন্দিরের ন্যায় আবার অনুভূত হতে লাগলো। একটি সাইকেল রিকশা করে গোদলিয়া চৌকে এসে পৌঁছে দেখলাম দীপাবলির জন্য সমস্ত এলাকাটা আলোক সজ্জায় সজ্জিত, প্রায় রাত নটার সময় তিল ধারণের জায়গা নেই কোথাও। শ্রী অন্নপূর্ণা মায়ের মন্দিরে যাবার লাইন তখন ক্ষীণ হয়ে এসেছে কিন্তু সেই সময় আমি খুব ক্লান্ত বোধ করছিলাম, তাই সামান্য আহার করে গেস্ট হাউসে ফিরে এলাম।

প্রায় রাত দশটা নাগাদ শুভরঞ্জন ওর সাথে নৈশভোজ ও মণিকর্ণিকা দর্শনে যেতে আমন্ত্রণ জানালো। আগামীকাল আমরা কাশী থেকে প্রস্থান করবো, তাই আজ ওর আমন্ত্রণ প্রত্যাখ্যান -

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

করলাম না। ঘাটের পাশে একটি দোকানে শুভরঞ্জন কোনোমতে নৈশভোজ সাঙ্গ করলো। আজ রাতে আমাদের দুজনের খাবারগুলো ভালো ছিল না। এরপর ঘাট ধরে মণিকর্ণিকা ঘাটের উদ্দেশ্যে এগিয়ে চললাম। শূন্য নৌকাগুলো গঙ্গার তীরে বেঁধে রাখা, ঘাটে তখন ছড়িয়ে ছিটিয়ে সামান্য কিছু লোক ও কয়েকজন পুলিশ কর্মী। পথে রাতের আলোকে সজ্জিত প্রাসাদোপম শ্রী কাশী বিশ্বনাথ করিডর দেখে মন ভরে গেলো। ছোটবেলা থেকে এই সংস্কারে বড় হয়েছি যে শ্মশানে প্রবেশ করলে স্নান এবং পোশাক পরিবর্তন করতে হয়ে তাই মণিকর্ণিকা শ্মশানের ভিতর প্রবেশ না করে ললিতা ঘাটের শেষ প্রান্তে দাঁড়িয়ে রইলাম। সেখানেও বেশ কিছু উৎসুক ব্যক্তিদের জমায়েত। শ্মশানের ভিতর তখন প্রায় ১৫টি চিতা প্রজ্বলিত এবং প্রায় একশ শোক সন্তপ্ত প্রিয়জনেরা উপস্থিত। এই মহাশ্মশানে সাধনার বিশেষ মাহাত্ম্য, তাই দাঁড়িয়ে থেকে চক্রে চক্রে মনোযোগ দিতে চেষ্টা করার সামান্য বাদেই আমার সামনে অশরীরী শক্তির উপস্থিতি অনুভব করলাম। এই মহাশ্মশানে তাদের উপস্থিতি একদমই আশ্চর্যজনক নয়। মনে হলো আমার সাধনায় উৎসুক হয়ে এই অশরীরীর আগমন। কোনো রকম নেতিবাচক তরঙ্গের অনুভব হল না তবুও আমি প্রাণায়াম করতে লাগলাম। আমার পূর্বের অভিজ্ঞতা যে প্রাণায়ামের তরঙ্গে অশরীরীরা দূরে চলে যান। শুভরঞ্জন কয়েক মিনিট বাদে মহাশ্মশান থেকে ফিরে এলো এবং ওকে আমার অভিজ্ঞতা বর্ণনা করতে আমার সাথে দ্রুত গতিতে সেই স্থান পরিত্যাগ করলো। কি কারণে বারংবার মণিকর্ণিকা আসছে আমার এই প্রশ্নের উত্তরে ও বললো যে জীবনের চরম সত্য মৃত্যুকে সামনে থেকে দেখে ওর সাধনা করার ইচ্ছে আরো দৃঢ় হয়। রাস্তায় তখনো নারী ও পুরুষের জনসমুদ্র। একটি চায়ের দোকানে একটি বড় পাত্রে চা ফুটতে দেখলাম। আমাদের গেস্ট হাউসে ও তার আশেপাশে চা এবং খাওয়ায় বেশ অসুবিধা, তাই রাত্রি হলেও এক ভাঁড় ধুমায়িত চা নিয়ে বসে পড়লাম।। দোকানদারের কাছ থেকে জানলাম যে মধ্য রাত্রি পর্যন্ত এইখানকার রাস্তায় ভিড় থাকে। প্রায় এগারোটা বাজে অথচ সমস্ত দোকান খোলা ছিল। আগামীকাল সকালে আমার সারনাথ দর্শনে যাবার পরিকল্পনা ছিল কিন্তু এখন ঠিক করলাম কাল আরেকবার শ্রী বিশ্বনাথের দর্শন করে করিডর ও ঘাটগুলোর অন্বেষণে বেরোব। শুভরঞ্জনও সারনাথ না গিয়ে খুব ভোরে গঙ্গার ঘাটগুলো দর্শনে বেরোবে জানলো।

আজ শনিবার, ১১ই নভেম্বর আমাদের কাশী থেকে প্রস্থান করার দিন। সকালে উঠে ব্যাগ গুছিয়ে নিয়ে সামান্য প্রাণায়াম করে নিলাম। পঞ্জিকা অনুসারে আজ দুপুর একটার পরে ভূত চতুর্দশী শুরু হবে কিন্তু সেই সময়ে মন্দির বন্ধ থাকবে তাই সকাল সাতটা নাগাদ বেরিয়ে পড়লাম এই যাত্রায় শেষ বারের মত বাবা বিশ্বনাথকে দর্শন করতে। আমার সঙ্গে চললেন আমার তীর্থ সাথী সত্যপ্রিয়দা ও কাবেরীদি। মন্দিরে অবস্থিত আমুলের দুধের দোকান থেকে বেশ ঘন দুধ দিয়ে শ্রী কাশী বিশ্বনাথের আরাধনা করলাম। মন্দিরে সামান্যই ভিড় ছিল এবং বারংবার শ্রী কাশী বিশ্বনাথের দর্শন করেও মনে সন্তুষ্টি হচ্ছিল না। শ্রী কাশী বিশ্বনাথের অশেষ কৃপা যে এই যাত্রায় প্রত্যহ একবার করে ওঁনার দর্শন করতে পেরেছি। নিকট আত্মীয়ের ন্যায় বাবা বিশ্বনাথের কাছ থেকে প্রস্থান করার অনুমতি নিয়ে জ্ঞানবাপী কূপে নমস্কার করতে গেলাম। সত্যপ্রিয়দা এই কূপের মাহাত্ম্য জানতে চাইলে ওনাকে সংক্ষেপে বিবরণ দিলাম।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

পুরাকালে দেবাদিদেব শিবের রুদ্রমূর্তি ঈশান কাশীর অবিমুক্ত লিঙ্গকে জল দিয়ে অভিষেকের অভীষ্টে ত্রিশূল দিয়ে এক কূপ খনন করেন। কূপের পবিত্র জল দিয়ে সহস্রবার মহা লিঙ্গকে অভিষেকের পর দেবাদিদেব শিব এই আশীর্বাদ প্রদান করেন যে শিব নামের স্বরূপ "জ্ঞান" এই পবিত্র তীর্থে জল রূপে দ্রবীভূত হয়ে জীবের কল্যাণার্থে অবস্থান করবেন। এই তীর্থের আরেক নাম জ্ঞানোদ তীর্থ। জনশ্রুতি অনুযায়ী শ্রী বিশ্বেশ্বর মন্দির মুঘল সেনা দ্বারা আক্রান্ত হলে মন্দিরের পুরোহিতগণ এই কূপের জলে শ্রী বিশ্বেশ্বরের জ্যোতির্লিঙ্গকে লুকিয়ে রাখেন। ফেরার পথে সত্যপ্রিয়দার কাছ থেকে বিদায় নিয়ে শ্রী কাশী বিশ্বনাথের ও মা অন্নপূর্ণার ফটো কিনে গেস্ট হাউসে রেখে পুনরায় করিডরের উদ্দেশ্যে বেরিয়ে পড়লাম। করিডরের সামনের অংশের বিশাল প্রাঙ্গণে দর্শনার্থীদের সুবিধার্তে বিভিন্ন ভবন নির্মাণ করা হয়েছে। ললিতা ঘাট থেকে মন্দিরের প্রবেশ দ্বার অবধি দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গ মন্দির, ভারত মাতার মূর্তি, রানি অহল্যাবাইয়ের মূর্তি পরিদর্শন করলাম। সেই সময় মন্দিরের মাইকে গোস্বামী তুলসীদাসজির বিরচিত শ্রী শিব রুদ্রাষ্টকম্ পাঠ চলছিল:

"নমামিশমীশান নির্বাণরূপম। বিভূম ব্যাপকম্ ব্রহ্মবেদস্বরূপম্।
নিজম নির্গুণম নির্বিকল্পম নিরীহম্। চিদাকাশমাকাশবাসম ভজেহম্।।
নিরাকারওমকারমূলম তুরিয়ম। গিরা জ্ঞান গোতীতমীশম গিরিশম্।
করালম মহাকাল কালম কৃপালম। গুনগার সংসারপারম নতো হম।।"

একটি গাছের নিচে বাধানো বেদিতে বসে অপূর্ব সুন্দর শ্রী শিব রুদ্রাষ্টকম্ পাঠটি শুনে বিভোর হয়ে গেলাম। একটু সাধনা করার বৃথা চেষ্টা করার পর আমার মাকে ভিডিও কল করে মন্দির প্রাঙ্গণটি ঘুরে দেখাতে লাগলাম। আগেরবার আমি মায়ের সাথে কাশীতে এসেছিলাম, তাই মাকে নতুন করিডরটি ভিডিও কলে দেখাতে পেরে খুব আনন্দিত বোধ করলাম। রৌদ্রোজ্জ্বল গঙ্গার ঘাট ধরে এগিয়ে যাবার সময় একস্থানে কয়েকজন যুবককে গঙ্গা স্নান করতে দেখে আমার মনেও গঙ্গা স্নানের ইচ্ছে জাগল। স্নানের জন্য শুকনো কাপড় আনা হয়নি, তাই কিছুক্ষণ গঙ্গার শীতল জল স্পর্শ করে ঘাটে বসে রইলাম। কিছুটা অগ্রসর হয়ে ঘাটে অবস্থিত একটি প্রাচীন মন্দিরের সুউচ্চ সিঁড়িতে মা গঙ্গার মুখোমুখি বসে কিছুক্ষণের জন্য সাধনা করে বেশ আনন্দ পেলাম। বোধ হল আদি শক্তিই মা গঙ্গার রূপ ধারণ করেছেন। দুপুর একটা বেজে গেছে, তাই বেশি দেরি না করে প্রস্থান করলাম গেস্ট হাউসের দিকে। গুরুদেব ও আরো কয়েকজন ক্রিয়াবান প্লেনে করে কলকাতার উদ্দেশ্যে রওনা হয়ে গেছেন। যথা সময়ে আমরা বাকি সকলে হাওড়াগামী ট্রেনে চড়ে পরদিন রবিবার, ১২ই নভেম্বর কালীপুজোর সকালে হাওড়া পৌঁছলাম। শীতের রৌদ্রোজ্জ্বল সকালে লঞ্চ করে বাড়ি ফেরার পথে নিমতলা শ্মশান ও ভূতনাথ শিব মন্দির দেখে সর্বত্র কাশীর কথাই মনে পড়তে থাকলো। যাত্রার সূচনার সময় আমার মনে তীর্থ অন্বেষণ করতে যাবার আনন্দ ছিল কিন্তু আজ কাশী থেকে প্রত্যাবর্তন করার পর অনুভব করলাম আমার মন পরিপূর্ণ এক অব্যক্ত আধ্যাত্মিক প্রাপ্তির আনন্দে।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

গ্রন্থসূচি:

1. কাশী খণ্ড - শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন সেবাশ্রম
2. Banaras: Making of India's Heritage City - Rana P.B.Singh
3. Journeys with Ramakrishna - Swami Prabhananda
4. শ্রী রামকৃষ্ণ কথামৃত - শ্রীম
5. ত্রৈলঙ্গ স্বামী সমগ্র - অপূর্ব চট্টোপাধ্যায়
6. The life of Shri Tailang Swami Ji - Shri Tailang Swami Math, Varanasi
7. Autobiography of a Yogi - Paramahansa Yogananda
8. পুরাণ পুরুষ যোগিরাজ শ্রী শ্যামাচরণ লাহিড়ী - ড. আশোক কুমার চট্টোপাধ্যায়
9. শুক্লযজুর্বেদীয় রুদ্রাষ্টাধ্যায়ী - গীতা প্রেস
10. Vinaya Patrika - Sri Goswami Tulsidas
11. Maasir- i - Alamgiri - Jadunath Sarkar

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"পথহারা: অর্জুন ও অভিমন্যু"

(গুরুদেব ও নামাবতার সীতারামদাস ওঁকরনাথ দেবের শ্রীচরণে)

-অমিত চ্যাটার্জী

পথহারা পথ খুঁজি
ফিরিবার তরে,
কিভাবে এ হীনমতি
গ্রসিল আমারে | 01

কথা ছিল, 'নীতি' নিয়ে
প্রতি পদক্ষেপ-
কিভাবে যে প্রবেশিনু
চিত্তে এ বিক্ষেপ | 02

অবশ্য, কৌরব সেনা
বড়ই দুর্জয়,
তাদের সামর্থ দেখি
হৃদে লাগে ভয় | 03

কর্ণ, দ্রোণ, কৃপাচার্য,
ভীষ্ম- ভ্রমময়,
বৈদ্য রূপে সর্বরোগ
করো নিরময় | 04

অর্জুন ও অভিমন্যু
তোমারই সন্তান,
পিতা জেতে কুরুক্ষেত্র
পুত্র হারায় প্রাণ | 05

দুজনেই কৃষ্ণ শিষ্য
কোথায় প্রভেদ?
কোন গুনে অর্জুনেরই
হোলো চক্রভেদ? 06

'গুরু চরণে সমর্পন'
এই পার্থ নীতি,
রথের সারথি তাই
ত্রিভবন পতি । 07

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

অভিমন্যু আস্থা শুধু
স্বীয় বাহুবলে,
তাই প্রাণ দিতে হোলো
চক্রবুহ জালে | 08

সুদর্শন ও চক্রবুহ
দুইই চক্রাকার-
সুদর্শন এ জীবনমুক্তি
বুহে, জীবের সংহার | 09

ভেবেছিনু, যুদ্ধ জয়ে
অস্ত্র প্রয়োজন,
(বুঝিইনি) 'কেন পার্থ করেছিল
পূর্ণ সমর্পণ ?' 10

শক্তিশালী সেনা,
আর নিরস্ত্র নারায়ণ-
কিভাবে চয়ন করে
অজ্ঞানী এ মন | 11

অস্ত্র, বাহুবলে শ্রেষ্ঠ
অর্জুন তনয় -
বধিল চক্রবুহে,
হইলো মায়ার জয় | 12

চক্রধারী রথেই
চক্রবুহের ভেদন,
সে চক্র জ্ঞানে
পার্থর- কি বা প্রয়োজন | 13

চক্র হাতে অভিমন্যু
চক্রধারী ছাড়া,
অহং লয়ে প্রবেশিল
হইল সাধন সারা | 14

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

আমিও আজ অভিমন্যু
সামর্থ মোর শেষ,
সারথি হয়ে লাগাম ধরো
প্রভু হৃষীকেশ | 15

সকল অস্ত্র কেন্দ্রে
নারায়ণের অধিষ্ঠান,
শঙ্খ, চক্র, গদা, পদ্মে,
করো পরিত্রাণ | 16

অস্ত্রবলে যুদ্ধ জয়
ভাবে দুষ্ট মন,
অস্ত্র নয়, কেবল চাই
'পূর্ণ সমর্পণ' | 17

তাই আমি প্রভু আজ
তোমার ই চরণে,
শরণ লইতে চাই
কায়, বাক্য, মনে | 18

সইতে না পারি প্রভু
মায়ার এ প্রহার,
তাই, "আমার আমিরে
তব দীনু উপহার"* | 19

মায়া হইতে মুক্ত করো
করো পরিত্রাণ,
"আমার 'আমি' র নাথ
করো অবসান"* | 20

*19 ও 20 স্তবকে উদ্ধৃতি দুটি "ত্রৈকালিক স্তবমালা" থেকে গৃহীত.

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"প্রবহমান আধ্যাত্মচেতনা"

-দীপাঞ্জন দে

ঋষি বিশ্বামিত্র বসেছেন গভীর ধ্যানে। উদ্দেশ্য, ব্রহ্মর্ষি বশিষ্ঠের মত ব্রহ্মজ্ঞ হতে হবে। শ্রেষ্ঠত্ব অর্জনের এই লড়াই কখন যে তাঁকে রাজা থেকে রাজর্ষী, আর রাজর্ষী থেকে ব্রহ্মর্ষিতে রূপান্তরিত করল, সেই ইতিহাসের সাক্ষী মহাকাল স্বয়ং। এবং অবশ্যই তিনি নিজে।

আমারা সবাই ঋষি বিশ্বামিত্রের উপাখ্যান সম্পর্কে অবগত - হয় পড়ে, অথবা ছোটবেলায় বড়দের মুখে শুনে। ইন্দ্রপ্রেরীত হয়ে অপ্সরা মেনকার আগমন, শকুন্তলার জন্ম, ত্রিশঙ্কুর স্বশরীর স্বর্গারোহন, রাজা হরিশ্চন্দ্রের পরীক্ষা, এবং অবশ্যই ভগবান রামচন্দ্রকে অস্ত্রশিক্ষাদান। এই সবই তাঁর জীবনের মূল কিছু অধ্যায়। তবে ঋষি বিশ্বামিত্রের সবচেয়ে উল্লেখযোগ্য অবদান, যার জন্য তাঁকে আজও স্মরণ করা হয়, তা অবশ্যই গায়ত্রী মন্ত্রকে প্রকট করা। তাঁর জীবনে দেখি, দাম্ভিক, অহংকারী এক রাজা থেকে তপস্যার দ্বারা কিভাবে দিনি ব্রহ্মজ্ঞ, মন্ত্রদ্রষ্টা হয়ে উঠেছিলেন।

এই ঋষিদের জীবনধারা ও তাঁদের অভিজ্ঞতা থেকেই আমরা আমাদের পূজা, আমাদের শাস্ত্র, আমাদের সমস্ত রীতি, এমনকি জীবনের লক্ষ্য পর্যন্ত স্থির করেছি। তাঁরাই আমাদের পূর্বপুরুষ, তাই আজও পূজা, বিবাহ ইত্যাদি শুভ কাজে আমরা তাঁদের নামের গোত্র উল্লেখ করে নিজেদের পরিচয় দিই। তর্পণকালেও ঋষিদের উদ্দেশ্যে তর্পণ করে থাকি। এমন মহৎ আমাদের পূর্বপুরুষদের সাধনা, এত সুবিশাল আমাদের সংস্কৃতি, ও এত সূক্ষ্ম অথচ মননশীল আমাদের সনাতন ধর্ম যে এই ধর্মের জন্ম লগ্ন থেকে শত সহশ্রাধিক বছর পরেও এর ব্যাপ্তি ও এর কেন্দ্রে থাকা মূল ভাবনাগুলি আজ, এই বর্তমান সমাজেও অপরিবর্তিত থেকে গেছে।

আজ এই বিশ্বায়নের যুগে, সনাতন ধর্মাবলম্বী মানুষের কাছে সমস্ত দেশের সমস্ত সম্প্রদায়ের মিলিত চিন্তাধারা অত্যন্ত সহজভাবে এবং স্বাভাবিক ভাবেই প্রভাব বিস্তার করতে সক্ষম হয়েছে। বর্তমান সময়ের মাত্র কিছু বছর আগেও শতাব্দীর পর শতাব্দী ধরে বহিরাক্রমণের ফলে অনেক নব্য চিন্তাধারার অনুপ্রবেশ ও সনাতন জীবনধারা ও ভাবনায় আঘাত এসেছে বারে বারে। কিন্তু এত কিছুর পরও সনাতন জীবনধারা আজও বহমান। কখনও তা সুপ্তাকারে বয়ে গেছে সরস্বতী নদীর মত, আবার কখনও তা মহাসমুদ্রের জলরাশির মত প্লাবিত করেছে এই সমাজকে - মনে করিয়েছে মানবকে তার সত্যের ঠিকানা, তাকে ফিরিয়ে দিয়েছে পথের দিশা।

আমাদের ছোটবেলায় সকালে ঘুম থেকে উঠেই সূর্যদেবকে প্রণাম করতে সেখা। সেই সূর্য, যাকে বলা হয় একমাত্র প্রত্যক্ষ দেবতা। যিনি আদি অনন্তকাল ধরে ধরিত্রীর বুকে সমগ্র জীবজগৎকে নিয়ত প্রতিপালন করে চলেছেন। যাঁর মহিমাতেই সৌরমণ্ডলের সমস্ত গ্রহ-নক্ষত্র তাঁদের নির্দিষ্ট কক্ষপথে নিয়ত ভ্রমন করে চলেছে। হিন্দুদের কাছে সেই সূর্য প্রকৃতির নিছক কোনও সৃষ্টি না। প্রত্যক্ষ দেবতা এই সূর্য, বহিরাকাশে উদিত হয়ে নিজ আলোকরশ্মির প্রভাবে সমগ্র চরাচরকে তমোসার জাল থেকে মুক্ত করে রৌদ্রস্নাত করে, তেজ সঞ্চারিত করে, নিত্য পবিত্র করেন।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

হিন্দু মনে তখন অন্তরাকাশে, হৃদয়াকাশে, এই রবি উদিত হন - তাঁর তেজে তমোগুন সকল নাশ হয়ে যায়, জ্যোতির্ময় হয়ে ওঠে অন্তর, জীবন। সেই সবিতা, সেই ভর্গোদেবকেই আমরা আমাদের শুদ্ধ বোধ দ্বারা ধারন করি। বিশ্বামিত্রের তপস্যার ধারা এভাবেই বহমান থাকে।

এর পরের ধাপের যে বোধ, তা সরাসরি ব্যক্ত করেছেন উপনিষদের ঋষি -

বেদাহমেতং পুরুষং মহান্তম্
আদিত্যবর্ণং তমসঃ পরস্তাৎ ।
তমেব বিদিত্বাতিমৃত্যুমেতি
নান্যঃ পন্থা বিদ্যতে অয়নায় ।।
— শ্বেতাশ্বতর উপনিষদ

কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের ভাষায় -

শোনো বিশ্বজন ,
শোনো অমৃতের পুত্র যত দেবগণ
দিব্যধামবাসী, আমি জেনেছি তাঁহারে
মহান্ত পুরুষ যিনি আঁধারের পারে
জ্যোতির্ময় । তাঁরে জেনে তাঁর পানে চাহি
মৃত্যুরে লঙ্ঘিতে পারো , অন্য পথ নাহি ।

পরে আত্মোপলব্ধি করে ঈশোপনিষদকার বলছেন -
‘‘যোহসাবসৌ পুরুষঃ সোহহমস্মি’’ অর্থাৎ ঐ যে সূর্যমণ্ডলস্থ পুরুষ আমিই তিনি।

আজও মন্দিরে হোক কিংবা ঠাকুরঘরের পটচিত্রে, দেবদেবীর বিগ্রহ-সম্মুখে উপস্থিত হলেই আমাদের মাথা হয় নত। আমাদের হাত চলে আসে ভ্রূমধ্যে অথবা হৃদয়ে - ধ্যানের সর্বোৎকৃষ্ট জায়গায়। এ যেন আমাদের নিত্য স্মরণ - আমাদের সঠিক পথের দিশা মনে করিয়ে দেওয়া নিজেদের। অথৈ সমুদ্র সলিলে দিকনির্ণায়ক compass এর কাঁটা দেখে নেওয়া। সাধকমাত্রেই অবগত ভ্রূমধ্যে - কূটস্থে বা হৃদয়ে - অনাহত চক্রে ধ্যানের মহিমা। আবার দেখা যায় দুর্গাপূজায় নবপত্রিকায় মাতৃপূজা, যা মনে করিয়ে দেয় হিন্দুদের প্রকৃতির প্রতি শ্রদ্ধা, বিশ্বপ্রকৃতির মাঝেই নিজের ইষ্টেকে খুঁজে পাওয়া ও প্রকৃতির সাথে সামঞ্জস্যপূর্ণ সহাবস্থান। কারন, সেই তিনি তো বিশ্বপ্রকৃতির মাঝেই আছেন, তার বাইরে নন। কারন, সেই তিনি, অর্থাৎ ঈশ্বর যদি দৃশ্যমান জগদ্বহির্ভূত হন, তবে সেই জগৎ ও ঈশ্বরের পৃথক পৃথক অস্তিত্ব মানতে হয়। কিন্তু ঈশ্বরই তো কেবলমাত্র আছেন!

শ্রীশ্রীচণ্ডীতে দৈত্য শুম্ভের সাথে যুদ্ধের পূর্বে দেবী স্বয়ং বলছেন - "একৈবাহং জগত্যত্র দ্বিতীয়া কা মামপরা। পশ্যৈতা দুষ্ট মধ্যেব বিশন্ত্যো মদ্বিভূতয়ঃ।।"

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

এ জগতে একা আমি ছাড়া দ্বিতীয় আর কে আছে?শ্রীমদ্ভগবদগীতায় দেখি শ্রীকৃষ্ণ একই কথা অর্জুনকে বলছেন -

"ময়া ততমিদং সর্বং জগদব্যক্ত মূর্ত্তিনা।"

অর্থাৎ আমি অব্যক্তরূপে এই সমস্ত জগৎ ব্যাপিয়া আছি। উপনিষদের ঋষি তাই বলছেন -

‘‘সর্বং খল্বিদং ব্রহ্ম’’। তাই বৃক্ষেও তিনি, কাঠ, খড়, মাটিতেও তিনি, কুমারীপূজাতেও তিনি, ঘটে, পটে, সর্বত্রই তিনি। এই তত্ত্বই সনাতন ধর্মভাবনার কেন্দ্রকে নির্দেশ করে। আমাদের প্রতিটি অভ্যাস, অনুষ্ঠান, উৎসব, সমারোহ ইত্যাদিকে ঘিরে রেখেছে এই ধর্মচেতনা - খানিকটা আমাদের অজান্তেই। তারা যেন বারংবার আমাদের মনে করিয়ে দিচ্ছে - তোমার ইষ্ট, তোমার ঈশ্বর তোমার চারিপাশেই আছেন, তিনি তোমার ইন্দ্রিয়গ্রাহ্য জগৎ ও তাকেও অতিক্রম করে আছেন, এমনকি - তিনি তোমার ভেতরেও আছেন। তুমি যদি জানার মতো করে জানতে পারো, তো জানতে পারবে - তুমিই সেই।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

"সমর্পণে উত্তরণ"

-সুজয় বিশ্বাস

প্রতেক সাধকেরই নিয়মিতভাবে উচিত তার গুরুপ্রদর্শিত পথকে অনুসরণ করে সাধনা করা। প্রায় প্রত্যেক সাধকই তার সাধনার প্রথম অবস্থায় তারা নানান রকম প্রশ্নের সম্মুখীন হয়ে থাকেন যেমন- যে পদ্ধতি সে করছে তা করে কি তার সত্যের জ্ঞান বা তত্ত্বে পৌঁছাতে পারবে। দর্শন হবে? কিছুদিন পদ্ধতি সাধন করবার পরও তার কেন কোনো দর্শন হচ্ছে না? কিভাবে ভালো দর্শন পাওয়া যায়? অন্যদের সবকিছু হচ্ছে তার কেন কিছু হচ্ছে না ইত্যাদি ইত্যাদি। এসব প্রশ্নের সঠিক উত্তর না পেলে তারা বিভ্রান্ত হয়ে পরে- গীতাতে একেই বিষাদ-যোগ বলা হয়েছে। তখন তারা একে অপরকে হিংসা, রাগ, অভিমান, দুঃখের চোখে দেখে থাকে। এমনকি এমনও দেখা যায় যে তারা গুরুদেবের কাছে কিছু হচ্ছে না অথবা উনি কিছু করিয়ে দিচ্ছেন না এই ভেবে লেগে পড়ে অন্য গুরু খোঁজবার উদ্দেশ্যে। কেউ কেউ তো আবার গুরু খোঁজবার সাথে সাথে তাদের দোষও খুঁজে বেড়ায়। এই গুরু আজ ভালো লাগে তো কালকে মন্দ, আবার চলে অন্য গুরুর খোঁজে। এই করে মিছে সময় নষ্ট করে। তারা তখন ভুলেই যায় তাদের প্রকৃত উদ্দেশ্য কি, কাকে জানবার জন্য এই সাধনা করা? তারা এই সব ভুলে মান, অভিমান, ভুল বোঝাবুঝি, পরনিন্দা, পরালোচনাতেই ব্যস্ত হয়ে পড়ে। সাধনা যদি সঠিক হয় তখন মন থেকে এক নিষ্ঠা, বিচারবোধ, বিশ্বাস, সমর্পণ ভাব নিজে থেকে পাকাপাকিভাবে তৈরি হয়ে যায়। সেখানে আর আমি তুমি বোধ থাকে না।

অনেক উচ্চ সাধকের দেখেছি যারা হয়তো অনেক সাধনার পথ পেরিয়ে এসেছেন। কিন্তু যখন তারা কথা বলেন তাদের কথার মধ্যে সঠিক সাধনার কোন প্রকাশই থাকে না। তবে কিসের উচ্চ সাধনা, যদি একজন মানুষের সাথে কথা বলে তার মনের তার মতন করে তার সাথে যুক্ত না হয়ে তার উন্নতি সাধনই না করা যায়। তাদের সাধারণত কথা বলবার সময় তাদের দেখানো ভাবটাই বেশি করে প্রাধান্য পায়। অনেক অবস্থাতেই সাধকের মনে গুরুদেবের কথা দাগ কাটতে পারে। তখন তাদের ওইসব কথা বোধেই আসে না যে গুরুদেব ঠিক কি বোঝাতে চান বা বলতে চাইছেন। তারা একবারও বিচার করেই দেখে না তারা যে যার মত ভেবে নেয়। তখন তাদের অভিমান হয়।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

একজন সৎগুরুই পুরোপুরি রূপে তার শিষ্য মনের অবস্থা ও ভাব বুঝে তাকে গড়ে তোলেন ঠিক কাঁচা মাটির দলাকে একটি মূর্তির রুপ দেওয়ার মতো করে। বিষয় প্রসঙ্গে একটি ঘটনার কথা উল্লেখ করছি। আমরা অনেকেই হয়তো শুনে থাকবো যে দুবে বাবা একবার আমেরিকাতে থাকাকালীন গুরুদেব লক্ষ্য করলেন যে দুবে বাবার শরীরটা একটু অসুস্থ বলে মনে হচ্ছে। সেই কথাটি দুবে বাবাকে গুরুদেব ফোনে বলাতেই দুবে বাবা প্রশ্নের উত্তর না দিয়েই বললেন- "বৃহৎ কূটস্থ কি জেনেছো, বৃহৎ কূটস্থ নিয়ে কিছু বলো"। গুরুদেব কথাটা শোনা মাত্রই দুবে বাবার বলা কথাটির প্রচ্ছন্ন ভাবটিকে বুঝতে পারলেন। দুবে বাবা কলকাতায় ফিরে এসে গুরুদেবকে হসপিটাল থেকে বেহালায় ডেকে পাঠালেন দেখা করবার জন্য। গুরুদেব বেহালায় এসে পৌঁছাবার পর ঘরে ঢোকা মাত্রই দুবে বাবা প্রথমেই বললেন যে বলো কিভাবে বেরিয়ে ছিলে? সেই কথা শুনে গুরুদেব দুবে বাবাকে বললেন যে সেদিন ঠিক কিভাবে দেহ থেকে বেরিয়ে সূক্ষ্ম শরীর ধারণ করে দুবে বাবাকে উত্তর পাড়ায় বসে থেকে সেই সুদুর আমেরিকাতে দেখেছিলেন। এখন কথা হচ্ছে দুবে বাবার বলার সেই দিনের কথার অন্তর্নিহিত অর্থটা ঠিক কি ছিল? ব্যাখ্যা করলে বলা যেতে পারে যে প্রত্যেক গুরুই শিষ্যকে যাচাই করবার জন্য এমন পরীক্ষা মাঝেমধ্যেই নিয়ে থাকেন একজন শিষ্যও তার সঠিক সাধনার অবস্থায় থাকলে তা বুঝতে সক্ষম হয়। সেই দিন যদি দুবে বাবা গুরুদেবকে প্রশংসা বা বাহবা দিয়ে বলতেন যে “বাহ খুব ভালো হয়েছে। তবে বলো দেখি কিভাবে তুমি সূক্ষ্ম শরীর ধারণ করলে, পরপর বলো কোন কোন অবস্থার পর কোন কোন অবস্থা এলে পাকাপাকিভাবে বৃহৎ কূটস্থে অবস্থান করা যায়?” কিন্তু উনি এই সব কোন কথাই বলেনি সেদিন। দূরদৃষ্টিও এক প্রকার অষ্টসিদ্ধি। সাধক যখন এইসব সিদ্ধির অধিকারী হয় তখন সে তার প্রকৃত লক্ষ্যভেদ করতে পারে না ও সঠিকভাবে তার সঙ্গে যুক্ত থাকতে পারে না। সে তখন এই সমস্ত সিদ্ধির আসক্তিতেই আটকে যায়। অর্থাৎ এই অষ্টসিদ্ধির যেকোনো সিদ্ধিই দ্বারাই সাধকের মধ্যে অহংকারই জায়গা পায়। অতএব এই ঘটনা থেকে এটাই শিক্ষনীয় যে গুরুদেবরা যখন যা কিছুই বলে থাকুন না কেন তার মধ্যে এক বিশেষ কারণ ও অন্তর্নিহিত অর্থ লুকিয়ে থাকে। এইরকম বিভিন্ন ঘটনার মধ্যমেই একজন সদগুরু তার শিষ্যকে সঠিক ভাবে গড়ে তোলেন এবং একই ভাবে এইসব ঘটনায় মধ্য দিয়েই একজন শিষ্য তার গুরুর প্রতি সম্পূর্ণরূপে শ্রদ্ধা ও বিশ্বাসের জায়গা পাকাপাকিভাবে করে নেই।

একটি প্রিজমের (Prism) ওপরে যখন কোন আলোকরশ্মি এসে পড়ে তখন সেই আলোকরশ্মি বিভিন্ন রং নিয়ে চারিদিকে ছড়িয়ে পড়ে। এই ঘটনা আমরা হয়তো কমবেশি অনেকেই লক্ষ্য করেছি। কিন্তু সেই প্রত্যেকটি রঙের আলোর উৎসস্থল কিন্তু একই বা এটাও বলা যেতে পারে যে একটি আলোকরশ্মি থেকেই তার উৎস। অতএব এই থেকে ব্যাখ্যা করা যায় যে গুরু কোন মানুষ নন যে আজকে এনার কাছে কালকে আবার অন্যের কাছে দৌড়াতে হবে। এই বিক্ষিপ্ত মন নিয়ে দৌড়ে বেড়ালে কিছুই হবে না। সৎগুরু হলেন সমস্ত শক্তির এক সম্মিলিত স্বরূপ, যা দেহ ধরে মানবকল্যাণার্থে বা জগন্তের কল্যাণার্থে নেমে আসেন। অতএব যে কোনো একটা পথকে বেছে নিয়ে তার সাথেই সঠিকভাবে যুক্ত হতে পারলে দেখা যাবে আলোকরশ্মির সঠিক উৎস টিকেও খুঁজে পাওয়া যায়। তখন সব পথই এসে মিলেমিশে এক হয়ে যায়। তাই হয়তো ঠাকুর বলে গিয়েছিলেন "যত মত তত পথ" অর্থাৎ যখন সব মত এসে এক জায়গায় মেশে তখন দেখা যায় প্রত্যেক পথের উৎস একটিই পথ সেটি হল শুধু নিজেকে জানাবার চেষ্টা এবং এই জীবনে সম্পূর্ণরূপে তাকে জানবার জন্যই উৎসর্গ করাই হল সঠিক পথ।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

আমরা সকলেই ছোটবেলা থেকে দেখে ও পড়ে এসেছি যে জলই জীবন। কথাটা একদমই সঠিক। কারণ ব্যাখ্যা করতে গেলে বলা যেতে পারে একটি ফুল যখন কুঁড়ি অবস্থায় থাকে তখন জল ও আলোই হলো সেই অন্যতম শক্তি যা কুঁড়ির মধ্যে প্রাণশক্তির সঞ্চার করে ও তাকে বিকোশিত করে দেয়। এখন কথা হচ্ছে মাধ্যাকর্ষণ শক্তিকে উপাখ্যান করে কে এমন শক্তির সঞ্চার করছেন যা সম্পূর্ণ বিপরীতমুখী শক্তির সাথে জলকে উপরের দিকে নিয়ে যেতে এবং ফুলটিকে ফুটতে সাহায্য করছে, তাকে খুঁজে বার করার চেষ্টা করা উচিত (গুরুপ্রদর্শিত পথকে অনুসরণ করে সাধনা করার মাধ্যমে)। আমরা যেমন কোন ফুলের নার্সারিতে গিয়ে ভালো ভালো ফুল দেখে ফুলের মালিক কে খুঁজে বেড়ায় যে তিনি ঠিক কিভাবে গাছের পরিচর্যা করেছেন যাতে করে এমন ভালো ফুল ফোটা সম্ভব। এবং তার কাছ থেকে জেনে নিয় সঠিক পদ্ধতি। তেমন করেই বাস্তবে প্রাকৃতিকভাবে ফুটে ওঠা ফুলের মালিক কেউ খুঁজে বেড়ানো উচিত যিনি নিজে থেকে উন্মোচন করে দেবেন সঠিকভাবে কিকরে ফুল ফোটানো যায়।

গাছ সাধারণত তার বৃন্ত দ্বারা বা কান্ড দ্বারা জলকে নিচ থেকে ওপরের দিকে সঞ্চালিত করে এবং পর্যাপ্ত পরিমাণ জল যখন সে বৃন্তের নিচের দিকে কেন্দ্র বিন্দু বা middle point-এ এসে পৌঁছায় এবং সূর্যের আলোক শক্তির (আত্ম সূর্যের জ্যোতি শক্তিকে কেন্দ্র করে) সাহায্যে ফুলটি ধীরে ধীরে ফুটে ওঠে ও তার গন্ধে চারিদিক ভরে যায়। তখন দূর দুরান্ত থেকে ভ্রমররাও আকর্ষিত হয় এই গন্ধে। ঠিক একজন সাধক ও এমনই করে থাকে তার সাধন কালে। প্রাণায়ামের মাধ্যমে সাধক যখন তার প্রাণশক্তি দ্বারা প্রত্যেকটা চক্রের কেন্দ্র বিন্দুতে সঠিকভাবে ঘাত(Thrust) দিতে সক্ষম হয় তখন প্রত্যেকটি চক্র ধীরে ধীরে কুড়ি থেকে ফুল ফোটবার মত করে ফুটে ওঠে অর্থাৎ চক্রভেদন হয়। যখন একজন সাধক সাধনার সঠিক অবস্থায় এসে পৌঁছায় তখন তার প্রত্যেক চক্রই ধীরে ধীরে ভেদ হয় এবং সাধক তখন এক চরম আনন্দের অবস্থায় অবস্থান করে। বিজ্ঞানের ভাষায় এক vibration থেকে অন্য vibration-এ পৌঁছায়। তখন কিছু মানুষ সাধকের এই vibration নিতে নিজে থেকেই আকর্ষিত হয় এবং তার কাছেই থাকতে পছন্দ করে। ভ্রমররা যেমন সর্বদা ফুলের কাছে কাছেই থাকতে চাই। এমতাবস্থায় সাধকের যা জ্ঞান অর্জন হয় সেই জ্ঞান দ্বারা তারা জগৎ কল্যাণের কাজের সাথেই শুধু যুক্ত থাকেন। আর ভ্রমররূপী মানুষজন সেই জ্ঞানী সাধক-ফুলের মধুরূপ জ্ঞান পান করে। এই অফুরন্ত অপরিসীম জ্ঞান প্রাপ্ত করতে গেলে সম্পূর্ণরূপে গুরু শক্তির শরণাগত হতে হবে। তখন সেই শক্তিই তার নিজের প্রকৃত রূপ দর্শন করিয়ে দেবেন, ঠিক যেমন করে শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে তার বিশ্বরূপ দর্শন করিয়ে ছিলেন। অতএব প্রত্যেক সাধকেরই উচিত তার গুরু প্রদর্শিত পথকে নিষ্ঠা ও ভক্তির সহিত সম্পূর্ণ সমর্পিত মন নিয়ে তা অনুসরণ করা, কর্মফলের উপর নির্ভর না করে। একজন সাধক যখন গুরুসত্বাকে আত্মা রাম স্বরূপ শ্বেতশুভ্র ধ্যানস্থ জ্যোতিরূপে নিজের হৃদয় বৃন্দাবনে কৃষ্ণ রুপের প্রত্যাক্ষাণুভূতী করতে সক্ষম হন তখনই সেই সাধক তার মধ্য প্রকৃত ভাবে গুরুসত্বাকে অনুভব করতে পারেন এবং তখনই সে বিশ্ব মনের অধিকারী হন। সবার গুরুরূপী পরমআত্মার দিব্যরুপ সাক্ষাং দর্শন হোক এই প্রর্থনাই করি ।

জয় গুরুদেব।

 © 2011-24 RYKYM.org All Rights Reserved

ASHRAM PUBLICATION

RYKYM

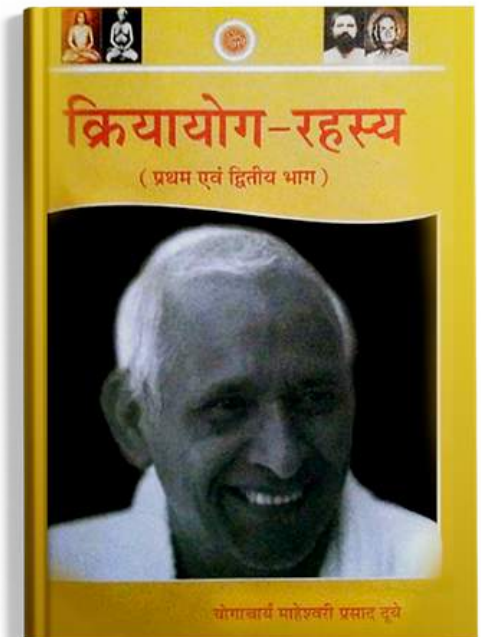

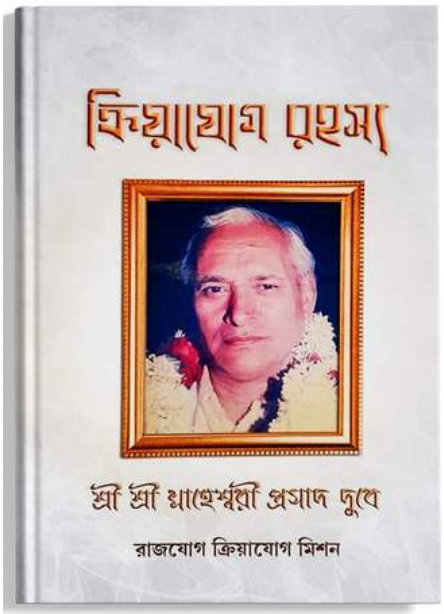

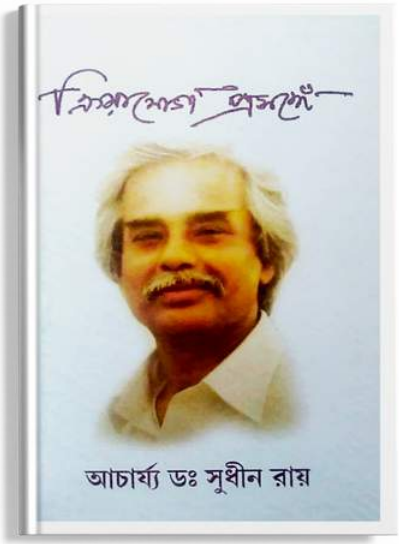

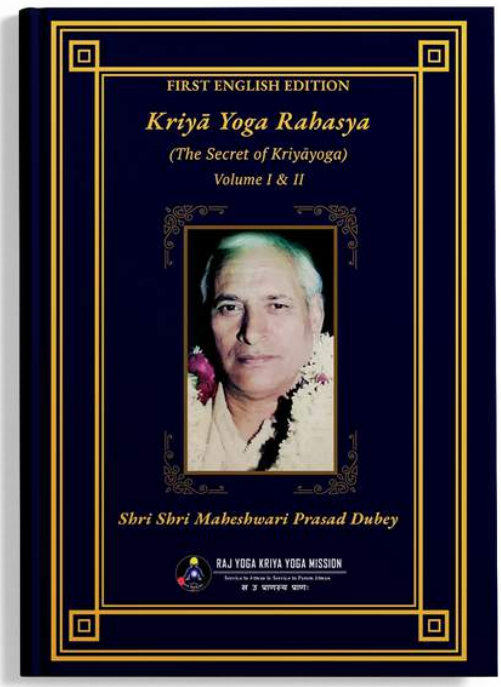

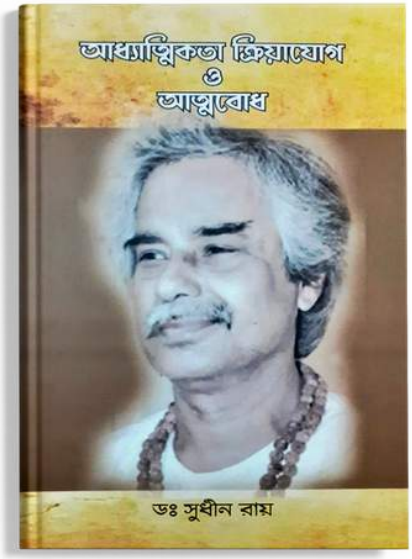

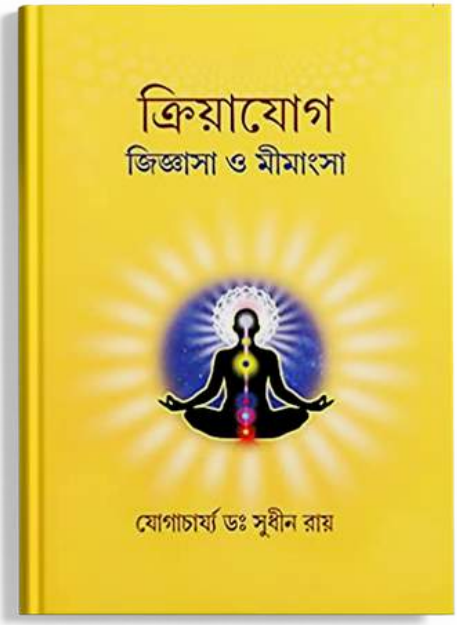

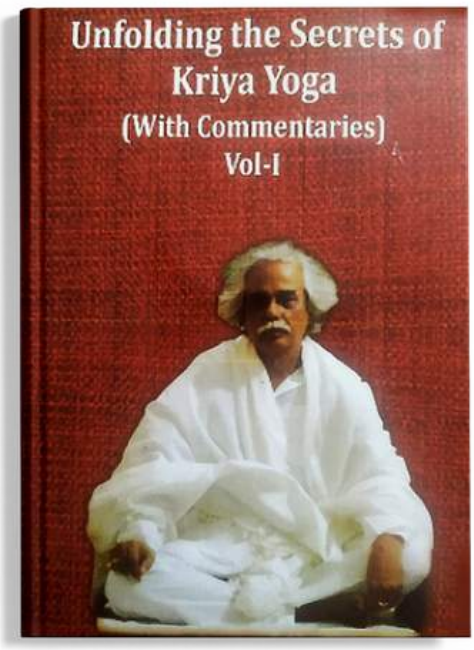

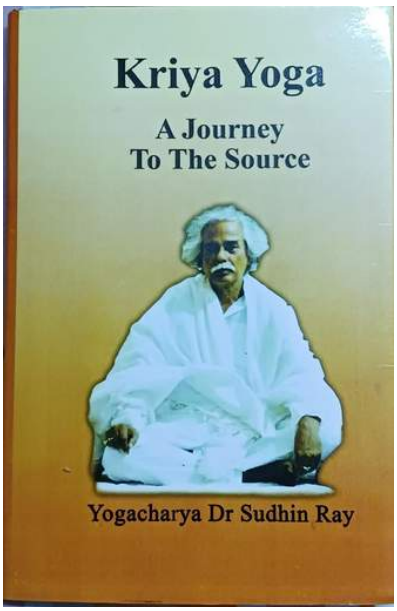

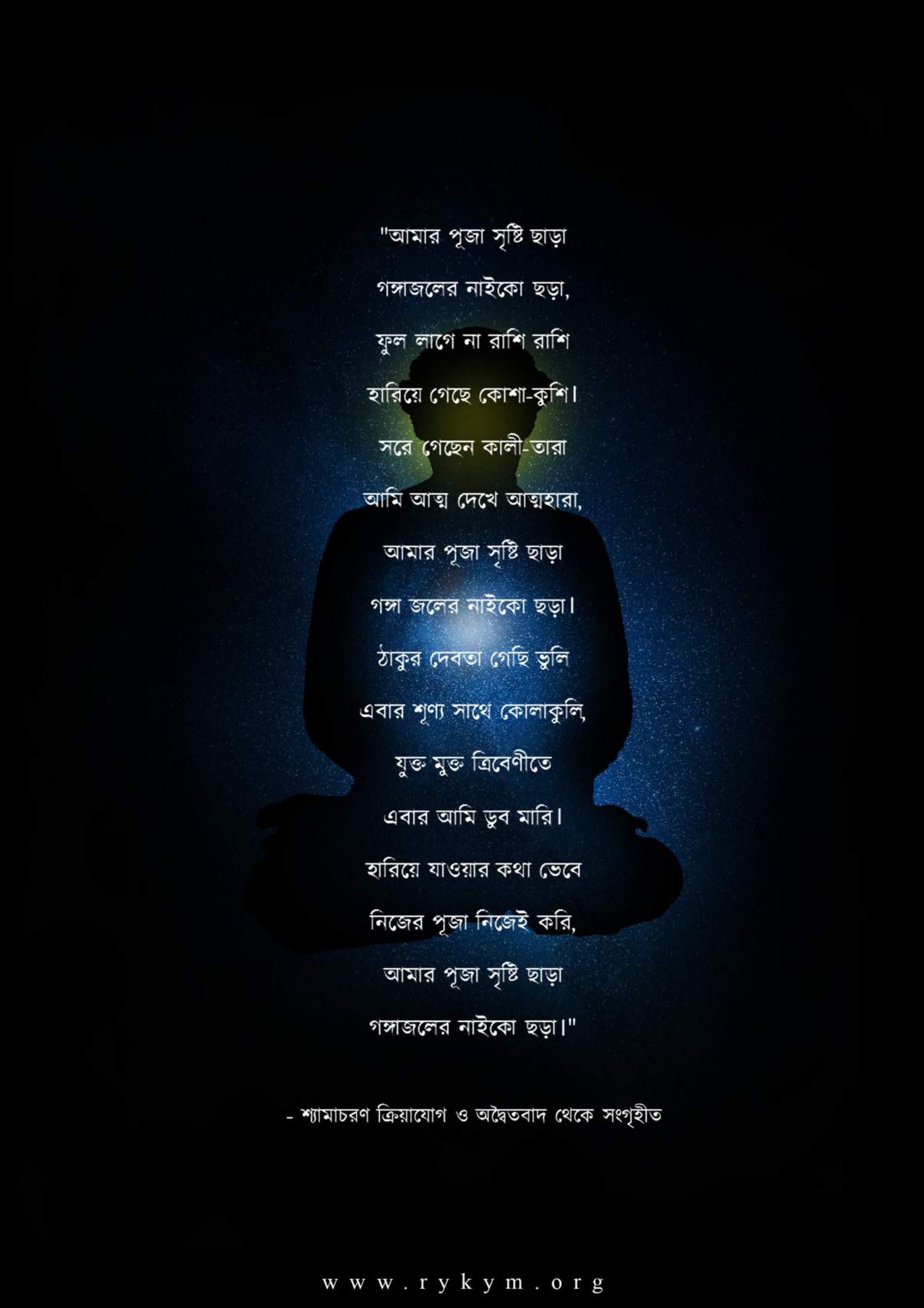

"আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া
গঙ্গাজলের নাইকো ছড়া,
ফুল লাগে না রাশি রাশি
হারিয়ে গেছে কোশা-কুশি।
সরে গেছেন কালী-তারা
আমি আত্ম দেখে আত্মহারা,
আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া
গঙ্গা জলের নাইকো ছড়া।
ঠাকুর দেবতা গেছি ভুলি
এবার শূণ্য সাথে কোলাকুলি,
যুক্ত মুক্ত ত্রিবেণীতে
এবার আমি ডুব মারি।
হারিয়ে যাওয়ার কথা ভেবে
নিজের পূজা নিজেই করি,
আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া
গঙ্গাজলের নাইকো ছড়া।"

- শ্যামাচরণ ক্রিয়াযোগ ও অদ্বৈতবাদ থেকে সংগৃহীত